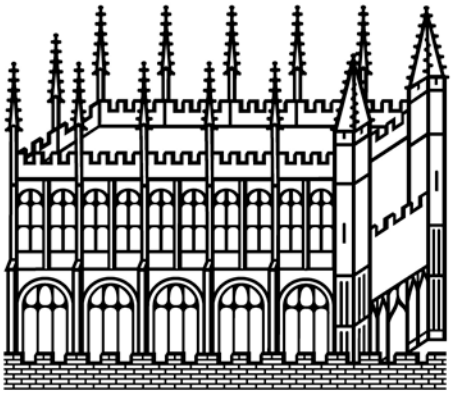

Bodleian Libraries

UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks



This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

13.D.31

Indian Institute, Oxford.
The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.

Misc. Ind.c. d. 89

Hindi Padm 2

Jagadvinodd.

Jagat Binod

जगद्विनोद ॥

मथुरावासि मोहनलाल भट्टात्मज कवि पद्माकर कृत ॥

जिसमें ॥

भक्त भयहारी कुञ्जविहारी गोपी जनानन्द कारी माया मनुज तनुधारी भूभार हर्त्ता जगत्कर्त्ता यदुवंश भूषण दैत्य दल दूषण सर्वगुण मण्डित कंसादि दैत्य बध खण्डित रसिकशिरोमणि श्रीकृष्णचन्द आनन्दकन्द और श्रीराधिका जी के लीला विषयक दोहा कवित्तों में उदाहरण सहित शृंगार रसभेद में नायकाभेदवर्णित है ॥

चौथीबार

स्थान लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के छापेखाने में छपा ॥

मार्च सन् १८८२ ई० ॥

॥ विज्ञप्ति ॥

इस महीने अर्थात् मार्च सन् १८८२ ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचनेकेलिये तय्यार हैं वह इस फ़ेहरिस्त में लिखी हैं और उनका मोल भी बहुत किफ़ायत से घटा कर लिखा है परंतु व्योपारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिनको व्यापार की इच्छा हो वह छापेख़ाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नाम ख़त भेज कर क़ीमत का निर्णय करले ॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
क़िस्सावग़ैरह॥	आदि पर्ब्ब सभा पर्ब्ब	पर्ब्ब ६ शल्यपर्ब्ब व गदा
नानार्थनौसंग्रहावली ॥	बनपर्ब्ब ॥	पर्ब्ब सौप्तिक पर्ब्ब मये
ब्रह्मसार ॥	२—दूसरे हिस्से में	योषिक व विशोक व स्त्री
भक्तमाल ॥	विराट् पर्ब्ब उद्योग पर्ब्ब	पर्ब्ब १०शान्तिपर्ब्ब राज
इन्द्रसभा नागरी ॥	भीष्म पर्ब्ब द्रोणपर्ब्ब ॥	धर्म्म व आपद्धर्म्म व
बेतालपच्चीसी ॥	३—तीसरे हिस्से में ॥	मोक्ष धर्म्म व दानधर्म्म
सिंहासनबत्तीसी ॥	कर्णपर्ब्ब शल्यपर्ब्ब, गदा	११ अश्वमेध आश्रमवा-
पद्मावतीखंड ॥	पर्ब्ब,सौप्तिकपर्ब्ब, योषिक	सिक मुशलपर्ब्ब महाप्र-
शुकबहत्तरी ॥	पर्ब्ब बिशोक पर्ब्ब, स्त्री	स्थान स्वर्गारोहणपर्ब्ब१२
बकावलीसुमन ॥	पर्ब्ब, शांन्तिपर्ब्ब में राज	हरिबंश पर्ब्ब ॥
क़िस्साहातिमताई ॥	धर्म्म आपद्धर्म्ममोक्षधर्म्म ॥	उमापति दिग्विजय
अपूर्ब्बकथा ॥	४—चौथे हिस्से में ॥	रामायण रामबिलास ॥
क़िस्सागुलसनोबर ॥	शान्ति पर्ब्ब, दान धर्म्म,	रामायण तुलसीकृत ॥
सहस्ररजनीचरित्र ॥	अश्वमेध आश्रम बासिक	मयेतसवीर व चेपक
दास्तान अमीर हमज़ा	पर्ब्ब, व मौशल पर्ब्ब, व	रामायण सटीक
मसनवी मीरहसन	बाणप्रस्थान व स्वर्गारोहण	रामायण मोटे अक्षरोंकी
पद्मावत	पर्ब्ब, व हरिबंश पर्ब्ब ॥	रामायणतु०कृ०सा०का० ॥
राबिन्सन्काइतिहास ॥	महाभारत पर्ब्ब अलेहदा	१—बालकाण्ड ॥
कमीशन बड़ौधा ॥	भी हैं ॥	२—अयोध्याकाण्ड ॥
क़िस्सामर्द व औरत का ॥	१ आदि पर्ब्ब २ सभापर्ब्ब	३—आरण्यकाण्ड ॥
भाषा (इतिहास)	३ बनपर्ब्ब ४ विराट् पर्ब्ब	४—किष्किन्धाकाण्ड ॥
महाभारत ॥	५ उद्योग पर्ब्ब ६ भीष्म	५—सुन्दरकाण्ड ॥
१—पहिलेहिस्से में ॥	पर्ब्ब ७ द्रोण पर्ब्ब ८ कर्ण	६—लंकाकाण्ड ॥

ओं तत्सत् ॥

अथ जगद्विनोद

लिख्यते ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ दोहा ॥ सिद्धि सदन सुन्दर वदन नँदनन्दन सुद मूल । रसिक शिरोमणि सांवरे सदारहज्ज अनुकूल ॥ १ ॥ जयजय शक्ति शिला मई जय जय गढ़ आमेर जय जय पुर सुरपुर सदृश जो जाहिर चहुं फेर ॥ २ ॥ जय जय जाहिर जगतपति जगतसिंह नरनाह । श्रीप्रताप नन्दनवली रवि वंशी कछवाह ॥ ३ ॥ जगत सिंह नर नाह को समुझि सबन को ईश । कवि पद्माकर देत हैं कवित बनाय अशीश ॥ ४ ॥ कवित्त ॥ छाचन के छच छच धारिन के छचपति छाजत छटान छिति छेम के छवैयाहौ । कहै पद्माकर प्रभावके प्रभाकर दया के दरियाव हिन्दू हद्द के रखैया हौ ॥ जागते जगतसिंह साहिब सवाई श्री प्रताप नन्दकुल चन्द आज रघुरैया हौ । आछेरहोराजराज राजन के महाराज कच्छकुल कलश हमारे तो कन्हैया हौ ॥ ५ ॥ आप जगदीश्वरह्वै जग में बिराजमान हौंहूंतो कवीश्वरह्वै राजते रहतहौं । कहै पद्माकर त्यों जोरत सुयश आप हौहूं त्यों तिहारो यश जोरि उमहत हौं ॥ श्रीजगतसिंह सदा राजमान सिंहवत बात यह सांचीकछू काचोनकहत हौं । आपुज्यों चहत मेरी कविताद्दराज त्यों मैं उमरि द्दराज राज रावरी चहत हौं ॥ ६ ॥ दोहा । जगतसिंह नृप जगतहित हरष किये निधि नेह । कवि पद्माकर सों कह्यो सुरस ग्रंथ रचि देह ॥ ७ ॥ जगतसिंह नृप हुकुम ते पाइ महा मन मोद । पद्माकर जाहिर

कहत जगहित जगतविनोद ॥ ८ ॥ नवरसमें जु सिंगार रस सिरे कहत सब कोय । सुरस नायका नायकहि आखंबित ह्वै होय ॥ ९ ॥ ताते प्रथमहि नायका नायक कहत बनाय । जुगति यथा मति आपनी सुकबिनकोशिर नाय ॥ १० ॥ अथ नायका लक्षणम् ॥ रस सिंगार को भाव उरउपजहि जाहि निहार । ताहीको कविनायका बरणत बिबिधि बिचारि ॥ ११ ॥ अथ नायका को उदाहरण ॥ कवित्त ॥ सुन्दर सुरंग नैन शोभित अनंग रंग अंग अंग फैलत तरंग परि झलके । बारनके भार सुकुमार को लचत लंक राजत प्रयंक पर भीतर महलके ॥ कहैं पद्माकर बिलोकि जन रीझै जाहि अम्बर अमलके सकल जल थल के । कोमल कमल के गुलाबनके दलके सुजात गड़ि पावन बिछौना मखमलके ॥ १२ ॥ अथपुनर्यथा ॥ सवैया ॥ जाहिरै जागतसो यमुना जबबूड़ैबहै उमहै वहबेनी । त्योंपद्माकर हीरा के हारन गंग तरंगन को सुख देनी ॥ पायन के रँग सो रँगि जातसी भांतिही भांति सरखति सेनी । पैरैं जहाईं जहां वह बाल तहां तहँ ताल में होत त्रिबेनी ॥ ॥ १३ ॥ पुनर्यथा ॥ कवित्त ॥ आई खेलि होरी घरै नवल किशोरी कहूं बोरी गई रंग में सुगन्धनि झकोरैहै । कहै पद्माकर इकन्त चखि चोकी चढ़ि हारन के बारन के फंद बंद छोरै है ॥ घांघरे की घूमनि सुऊरुनदुबीचेदाबि आंगिहूं उतारि सुकुमारि सुखओरैहै । दंतनि अधरदाबि दूनरि भईसी चापि चौबरपचौबरकै चूनर निचौरैहै ॥ १४ ॥ दोहा ॥ सहज सहेलिन सौंज तिय बिहँसि बिहँसि बतराति । शरद चन्दकी चांदनी मन्द परतसी जानि ॥ १५ ॥ कही बिबिधि सो नायका प्रथम स्वकीया नाम । पुनि परकीया दूसरी गनिका तीजी बाम ॥ १६ ॥ अथस्वकीया लक्षणम् ॥ निज पतिही के प्रेम मय जाको मन बचकाय । कहत स्वकीया ताहिसों लज्जा शील सुभाय ॥ १७ ॥ अथ स्वकीया को उदाहरण ॥ कवित्त ॥ शोभित स्वकीय गन

गुन गनती में तहां तेरे नामहीकी एक रेखा रेखियतु है। कहै पद्माकर पगीयों पति प्रेमहीं में पद्मिनि तोसी तिया तूही पखियतुहै॥ सुबरण रूप जैसो तैसो शील सौ-रभ है याही ते तिहारो तन धन्य लेखियतु है। सोने में सुगंध नाहि सुगंधमें सुन्यौरी सोनो सोनो औ सुगन्धतोमें दोनों देखियतु है॥ १८॥ दोहा॥ खानपान पीछू करति सोवति पिछले छोर। प्राण पियारेते प्रथम जगति भावती भोर॥ १९॥ एक स्वकीयाकी कही कविन अवस्था तीन। मुग्धा इक मध्या कहत पुनि प्रौढ़ा परबीन॥ २०॥ अथ मुग्धा लक्षणम्॥ दोहा॥ झलकत आवै तरुणई नई जासु अँग अंग। मुग्धा तासों कहतहैं जे प्रबीण रस रंग॥ २१॥ अथ मुग्धा को उदाहरण॥ सवैया॥ ये अलिया बलि के अधरानि में आनिचढ़ी कछु माधुर ईसी। ज्यों पद्माकर माधुरी त्यों कुच दाउन को चढ़तो उनईसी॥ ज्योंकुच त्योंहीं नितंब चढ़ेकछु ज्योंहीं नितंब त्यों चातुरईसी। जानी न ऐसी चढ़ाचढि में किहि धौं कटि बीचही लूटि लईसी॥ २२॥ दोहा॥ कछु गजपतिके आहटनि छिन छिन छीजतसेर। मिधुबिकाश बिकसत कमल कछू दिननके फेर॥ २३॥ पल पल पर पलटनलगे जाके अंग अनूप। ऐसी इक बज बाल को कहि नहिं सकत स्वरूप॥ २४॥ यह अनु मान प्रमाणियतु तिय तन यौबन जोति। ज्यौं मेंहदी के पात मैं अलख ललाई होति॥ २५॥ मुग्धा द्विविध बखानहीं प्रथम कही अज्ञात। ज्ञात यौबना दूसरी भाषत मति अवदात॥ २६॥ अब यौबन को आगमन जा नि परत नहिं जाहि। सो अज्ञात यौबन तिया भावत सुकबि सराहि॥ २७॥ अथअज्ञात यौबना। कोउदाहरण॥ कवित्त॥ येअलिहमैंतो बात गातकी नजानि परै बूझत न काहू यामेंकौन कठिनाईहै। कहैपद्माकर क्यों अंग न समात आंगी लागी कहातोहिं जागी उर में उंचाई है॥ तुव तजि पांयन चली है चंचलाई छित बावरी विलोकै क्यों

न आंखिन में आई है। मेरी कटि मेरी भट कौन धौं चतु-
राई तेरे कुचन चुराई कै नितम्बन चुराई है॥२८॥ पुनर्यथा॥
सवैया॥ खेदके भेदनको ऊकहै मतआंखिनहूं अंसुवान को
धारो। त्योंपदमाकर देखतो हौं तिनको तनको उन जात
संभारो॥ ह्वै धौं कहा को कहा गयो योंदिन ह्वैक हीते
कछु ख्याल हमारो। कान न में बसी बांसुरी की धुनि
प्राणन में बस्यो बांसुरीवारो॥ २९॥ दोहा॥ कहाकहौं
दुख कौनसों मौन गहौं किहिभांति। घरी२ यह घांवरी
परत ढीलिये जाति॥ ३०॥ उर उकसोंहैं उरजि लखि
धरति क्यों न धरिधीर। इनहिं बिलोकि बिलोकियतु
सौतिन के उरपीर॥ ३१॥ तनमें यौवन आगमन जाहिर
जब ज्यहिहोत। ज्ञातयौवना नायका ताहि कहैं कवि
गोत॥ ३२॥ ज्ञात यौवना को उदाहरण॥ सवैया॥ चौकमें
चौकी जरायजरी तिहिपैखरी बार बगारत सौंधे। छोरि
परीहै सुकंचुकी न्हान को अंगन तेज में जोति के कौंधे॥
छाइउरोजन की छबिज्यों पदमाकर देखतहीं चकचौंधे।
भाजिगई लरिकाईं मनौ लरिकेकरिके दुऊं दुंदुभिऔंधे॥
३३॥ पुनर्यथा॥सवैया॥ ये वृषभान किशोरी भई इतहू वह
नंदकिशोर कहावै। त्यों पदमाकर दोउन पै नवरंग तरंग
अनंग किछावै॥ दौरेदुहूंदुरि देखिबेको द्युतिदेह दुहूंकी
दुहूंन को भावै। ह्यांइनके रस भीजत त्यों इतहू उन के
मसिभीजत आवै॥३४॥ दोहा॥ आजु काल्हि दिनद्वैकतें
भईऔरही भांति। उरजउचौहिन दैउरू तनतकि तिया
अन्हाति॥ ३५॥ अति डरते अति लाजते जोनचहै रति
बाम। त्यहि मुग्धा को कहतहैं सुकवि नवोढ़ा नाम॥३६॥
अथ नवोढ़ाको उदाहरण॥ सवैया॥ राजिरही उलही
छबिसों दुलही दुरि देखतही फुलवारी। त्योंपदमाकर
बाल हँसै झलहै बिलसै मुखचन्द्र उज्यारी॥ ऐसे समय
कहुं चातककी धुनि कान परी डरपी वहप्यारी। चौंकि
चली चमकी चितमें चुपह्वै रही चंचल अंचलवारी॥ ३७॥

दोहा॥ तिय देख्यो पिय सापने गहत आपनी बांह। नहींनहीं कहि जगि भजी यदपि नहीं ढिगनांह॥ ३८॥ पति की कछु परतीति उर धरै नवोढ़ा नारि। सो बिस्रब्ध नवोढ़ तिय बरणत बिबुध बिचारि॥ ३९॥ अथबिस्रब्ध नवोढ़ा को उदाहरण॥ सवैया॥ जाहि न चाह कहूं रतिकी सुकछू पतिको पतिया न लगीहै। त्यों पदमाकर आननमें रुचि कानन भौंहैं कमान लगीहै॥ देत तिया न कुबै कुतियां बतियांन में तो सुसक्यान लगीहै। पीतम पान खवाइबे को परयंक के पासलों जानलगीहै॥४०॥ दोहा॥ दूरहिंते दृगदै रहति कहै कछू नहिं बात। छिनक छबीले को सुतिय छुवन देति क्योंगात॥ ४१॥ इक समान जब ह्वै रहत लाज मदन ये दोय। जातिय के तनमें तबहि मध्या कहिये सोय॥ ४२॥ अथ मध्याको उदाहरण॥ सवैया॥ आई जुचालि गोपाल घरै ब्रजबाल बिशाल मृणाल सों बाहीं। त्यों पदमाकर मूरति में रति कू नसकैं कितहूं परछाहीं॥ शोभित शंभु मनों उर ऊपर मौज मनोंभवकी मन माहीं। लाज बिराज रही अँखियांन में प्राण में कान्ह जबान में नाहीं॥ ४३॥ दोहा॥ मदन लाज बश तिय नयन देखत बनत इकन्त। इचेखिचे इत उत फिरत ज्यों दुनारिके कन्त॥ ४४॥ ललित लाज कछु मदन बड़ सकल केलिके खानि। प्रौढ़ा ताही सों कहत सुकविन को मन मानि॥ ४५॥ अथ प्रौढ़ा को उदाहरण॥ कवित्त॥ रति बिपरीत रची दंपति गुपति अति मेरे जानि मानि भय मन मथने जैतैं। कहैं पदमाकर पगी यों रसरंग जामें खुलिगे सुअंग सब रंगन अमेजे तैं॥ नीलमनि जटित सुबेदा उच्च कचपै परेउहै टूटि ललित ललाट के मजे जैतैं। मानों गिरेउ हेम गिरि शृंगपै सुकेलिकरि कढ़ि के कलंक कला निधि के करेजैतैं॥ ४६॥ दोहा तिय तन लाज मनो जकी यों अवदशा दिखाति। ज्यों हिमन्त ऋतु में सदा घटत बढ़त दिन राति॥ ४७ प्रौढ़ाद्विविग्ध बखानहीं रीति

प्रिया इक बाम। आनँद अति संमोहिता लच्छन इन के नाम ॥ ४८ ॥ अथरति प्रिया को उदाहरण ॥ सवैया ॥ लपटै पीतम के पहिरौ पहिराइ पियै चुन चूनरि खासी। त्यों पदमाकर साझहीतें सिगरी निशि केलि कला परगासी ॥ फूलत फूल गुलाबन के चटका हटि चौंकि चकी चपलासी। कान्ह के कानन आंगुरी नाई रही लपटाइ लवंग लतासी ॥ ४९ ॥ दोहा ॥ करत केलि पिय हियलगी कोक कलिन अवरेखि। बिसुद कुसुदलौं ह्वै रही चन्द्रमन्द द्युति देखि ॥ ५० ॥ अथ आनन्द समोहा कोउ दाहरण ॥ सवैया ॥ रीति रची परतीति रची रति प्रीतम संग अनंग झरीमैं। त्यों पदमाकर टूटेहराते सरासर सेज परे सिगरीमैं ॥ योंकरि केलि बिमोहित ह्वै रही आनँद की सुधरीउघरीमैं। नीवी नवारसंभारिबेकी सुभई सुधिनारि को चारिघरीमैं ॥ ५१ ॥दोहा॥अई मगनजोनागरी सुलहि सुरत आनन्द । अँगअँगोछि भूषण बसन पहिरावत नंद नंद ॥ ५२ ॥ मान समय मध्या त्रिबिध त्रिधा कहत प्रौढ़ाहि। धीरा बज्रुरि अधीर गनि धीरा धीरा ताहि ॥ ५३ ॥ कोप जनावै व्यंगसों तजैनपति सनमान। मध्या धीराकहत हैं तासों सुकवि सुज्ञान ॥ ५४ ॥ अथ मध्या धीराकोउदाहरण॥ कवित्त॥ पीतमकेसंगही उमंगि उड़िजैबे कोनएती अगा अगन परद पंखियां दई। कहै पदमाकर जे आरती उतारैं चमरढारैं अमहारैं पैन ऐसी सखियां दई ॥ देखि दृगहैही सों न नेकहूं अवैये दून ऐसे झुकाझुकनें झपाकभाखियां दई। कीजैकहरामश्याम आनन बिलोकिबेको बिरचि बिरंचित अनन्त अंखियांदई ५५॥ पुनर्यथा ॥ सवैया ॥ भाल पै लाल गुलाल गुलालसों गेरिगरेगजरा अलबेलो। योंबनि बानिक सोंपदमाकर आये जुखेलनफागतौ खेलो ॥ पै इक या छबि देखिबे केलिये मो बिनतीकै न झोरिन झेलो। राउरे रंगरँगी अँखियांन में ये बलबीर अबीरन मेलो ॥ ५६ ॥ दोहा ॥ जोजियमें सोजीभमें रमन रावरे

ठौर। आजकालिके नरनके जीभनकछु जियऔर॥ ५७॥ करै अनादर कन्तको प्रगट जनावै कोप। मध्यअधीरा नायका ताहि कहत करि चोप॥ ५८॥ अथ मध्य अधीरा नायका को उदाहरण॥ कवित्त॥ भूले से भ्रमे से काहि शोचत श्रमेसे अकुलाने से ठिकाने से ठगेसे ठीक ठायोहौ। कहै पद्माकर सुगोरे रँगबोरे दृग थोरे थोरे अजब कुसुंभी करिलायेहौ॥ आगे को धरत पर पीछेको परत पग भोरहीते आज कछु औरै छबि छायेहौ। कहांआये तेरे धाम कौंन काम घर जाउ जाउं कहां श्याम जहां मनधरि आयेहौ॥ ५९॥ दोहा॥ दाहक नाहक नाहमोहिंकरि-हौ कहा मनाय। सुबशभये जातीयके ताके परसङ्ग पांय॥ ६०॥ धीरबचन कहिकै जोतिय रोय जनावत रोष। मध्या धीरा धीर तिय ताहिकहत निर्दोष॥ ६१॥ अथमध्याधीरा को उदाहरण॥ कवित्त॥ रावलिकहाकौहो किनका कहत काते अरी रोष तजरोषकै कियो मैंका अचाहै कौ कहै पद्माकर यहैतो दुख दूरि करौ दोष न कछूहै तुम्हैं नेह निर्वाहेकौ॥ तोपै इति रोवति कहाहै कहौं कौन आगेमेरेई जू आगे किये आंसुन उमाहैकौ। कोहौं मैं तिहारी तूतामेरी प्राणप्यारी आजु होती जो पियारी तौ बरोती कहो काहे कौ॥ ६२॥ दोहा॥ करि आद-रतिय पीयको देखिदृगन अलसानि॥ सुसुखमोरि वर्षन ल-गी लैउसास असुबानि॥ ६३॥ उरउदास रतितें रहै अति आदरकी खानि। प्रौढ़ाधीरा नायका ताहि लीजियत जानि॥ ६४॥ अथ प्रौढ़ाअधीराको उदाहरण॥ कवित्त॥ जगर मगर द्युतिदूनि केलि मंदिरमें बगर बगर धूप अगर-बागारयोतूं। कहै पद्माकर त्यों चन्द्रते चटक दार चुम्ब-न में चारुमुख चन्द्र अनुसार्यो तूं॥ नैनन में बैनन में सखी और सैनन में जहांदेखो तहां प्रेमपूरन पसारयोतूं। छ-पत छपाये तऊ छलन छबीली अब उर लगिबेकी बारहा-र न उतारयोतूं॥ ६५॥ दोहा॥ दरश दौरि पियपग

परसि आदर कियो अछेह ॥ देह गेह पति जानिगो नि-
रखि चौगुनो नेह ॥ ६६ ॥ कछुतरजन तावन कछू करिजु
जनावे रोष । प्रौढ़ अधीरा नायका निरषि नाहको दोष
॥ ६७ ॥ अथप्रौढ़ा अधीरा को उदाहरण ॥ कवित्त ॥ रोष
करिपकरिपरोसते लियाईघरैपीकोप्राणप्यारीभुजलतनि
भरै भरै। कहै पदमाकर ये ऐसोदोष को जो फिर सीखन
समीप यों सुनावति खरैखरै ॥ प्यौछल छपावै बात हँसि
बहरावै तिय गदगद कंठ दृग आंसुन झरैझरै । ऐसी धन
धन्य धनी धन्यहै सुवैसो जाहि फूलकीछरीसों खरी हन-
ति हरैहरै॥ ६८ ॥ नेह तरेरे दृगनहीं राखन क्यों न अंगोट।
छैल छबीले परकहा करति कमल की चोट ॥ ६९ ॥ रतितें
रूखीह्वै जहां दुरजु दिखावै बाम। प्रौढ़ा धीरअधीर तिय
ताहि कहत रसधाम ॥ ७० ॥ अथ प्रौढ़ा धीराअधीरा को
उदाहरण ॥ कवित्त ॥ छबि छलकन भरी पीक पलकन
त्योंहीं अम जलकन अलकन अधिकानेह्वै । कहै पदमाकर
सुजानि रूपखानि तिया ताही ताकि रहीताहि आपुहि
अजानेह्वै ॥ परसत गात मनभावनको भावती की गईचढ़ि
भौहैं रही ऐसो उपमानैह्वै ॥ मानों अरबिन्दनपै चन्द्रको
चढ़ायदीनी मानकमनैत बिनरोदा की कमानैह्वै ॥ ७१ ॥
॥ दोहा ॥ अनतर में पतिकी सुरति गहिगहि गहकि गु-
नाह ॥ दृगमरोरि मुखमोरि तिय छुवनदेति नहिंछाह ॥
७२ ॥ बरणत जेष्ठ कनिष्ठिका जहँव्याही तियदोय । पिय
प्यारी ज्येष्ठाकही अनप्यारी लघुसोय ॥ ७३ ॥ अथज्येष्ठा
कनिष्ठाको उदा हरण ॥ कवित्त ॥ दोऊ छबि छाजतीं छबी
लीमिलिआसन पैजिनहिं बिलोकिरह्यो जातन जितैजितै।
कहै पदमाकर पिछौंहैं आय आदरसे छलिया छबीलो
कत बासर बितैबितै ॥ मूंदे तहां एक अलबेली के अनोखे
दृग सुदृग मिचाउ नेक ख्यालन हितैहितै। नेसुक नवाय
ग्रीव धन्य २ दूसरीको औचक अचूक मुख चूमत चितै
चितै॥ ७४॥ दोहा ॥ जलबिहार पिय प्यारिको देखत क्योंन

सहेलि। लैचुभकी तजि एकतिय करत एकसों केलि ॥७५॥ ॥ इति स्वकीया॥ अथ परकीया लक्षणम्॥दोहा॥ होइजो तिय पर पुरुष रत परकीयासो वाम। ऊढा प्रथम बखानहीं बहुरि अनूढ़ा नाम ॥ ७६ ॥ जो ब्याही तिय औरको करत औरसों प्रीति। ऊढ़ा तासों कहतहैं हियेसखी रस रीति ॥ ७७ ॥ अथ ऊढ़ाको उदाहरण ॥ कवित्त ॥ गोकुल के कुलकेगलीके गोप गायनको जौलगि कछूको कछूभारत भनैनहीं। कहै पदमाकर परोस पिछवारन के द्वारन के दौरि गुन औगुन गनैंनहीं॥ तौलौं चलिचातुर सहेलि याहि कोऊ काहूं नीकेकै निचोरै ताहि करत भनैनहीं। हौंतो श्याम रंगमें चोराइ चित्त चोरा चोरी बोरत तौ बोरयोपै निचोरत बनैहीं ॥ ७८ ॥ दोहा॥ चढ़ी हिंडोरेहरष हिय जसतिय बसन सुरंग। तिय झूलत पियसंगमें मन झूलत हरिसंग ॥ ७९ ॥ अनब्याही तिय होतजहँ सरस पुरुस रसलीन। ताहि अनूढ़ा कहतहैं कवि पंडित परवीन ॥ ८० ॥ अथ अनूढ़ाको उदाहरण॥ सवैया ॥ जाबनहीं कुल गोकुल में अरु दूनी दुहूदिशि दीपति जागै। त्यों पदमाकर जोईसुनै जहँसो तहँ आनँद में अनुरागै॥ एदई ऐसो कछू कर ब्यौंत जु देखैं अदेखिन के दृगदागै। जामें निशंक ह्वै मोहनको भरिये निज अंक कलंक न लागै॥ ८१ ॥ दोहा कुशल करै करतार तौ सकल शंक सियराय। यार क्वार पनको जपै कहूंब्याहि लैजाय ॥८२ ॥ इकपरकीयाकोकहै षट बिध भेदबखानि। प्रथमहिं गुप्ता जानिये बहुरि बिदग्धा मानि ॥ ८३ ॥ ललित लक्षिता तीसरी चौथीकुलटा होय। पचईं मुदिता षष्ठईं है अनुसैना सोय ॥ ८४ ॥ कही जो गुप्ता तीनबिधि सु कविनहूं समुझाय। भूत सुरत संगोपना प्रथम भेद यहआय ॥ ८५ ॥ वर्त्तमानरति गोपना भेद दूसरो आन। पुनि भविष्य रति गोपना लक्षण नामप्रमान ॥ ८६ ॥ अथ भूतसुरत संगोपना को उदाहरण ॥ कवित्त ॥ आलीहौं गईहौं आजभूलि बरसाने कहूं तापै तू

परैहै पद्माकर तनैनी क्यों। ब्रज बनिता बे बनितान पै रचैहैं फाग तिनमें जु अधभिजि राधा मृगनैनीयों॥ घोरि डारी केसरि सुबेसरि बिलोरिडारी बोरिडारी चूनरि चुवात रंगनैनाज्यों। मोहिं झकझोरि डारी कंचुकी मरोरि डारी तोरि डारीकसनि बियोरि डारी बेनीत्यों॥ ८७॥ दोहा॥ छुटत कंप नहिंरैनि दिन बिदित बिदारति कोय॥ अतिशीतल हेमंतकी अरी जरी यहतोय॥ ८८॥ अथ वर्तमान सुरत गोपनाको उदाहरण॥ सवैया॥ अधम ऐसो मचो ब्रजमें सब रंग तरंग उमंगनि सीचैं। त्योंपद्माकर छज्जनि छात निकुंज छितिछाजती केसरिकीचैं॥ दै पिचकीभजी भीजी तहांपरे पीछे गोपाल गुलाल उलीचैं। एकही संगयहां रपटे सखियेभये ऊपरमैं भदूनीचैं॥ ८९॥ दोहा॥ चढ़त घाट बिचलौ सुपग भरीआन इकअंक। ताहि कहातुम तकरही यामें कौन कलंक॥ ९०॥ अधभबिध्व सुरत गोपना॥ कवित्त॥ आजुते न जैहौं दधिबेचन दोहाई खांउ भैयाकी कन्हैया उतठाढ़ोई रहतहै। कहै पद्माकर त्यों सांकरी गलीहै अति इत उत भाजिबे को दांउ नालगतहै॥ दौरि दधिदान काज ऐसो अमनैक तहां आली बनमाली आइ बहियां गहतहै। भादौंशुदी चौथ को लख्योमैं मृगअंक याते झूठऊ कलंक मोहिंलागन चहतहै॥ ९१॥ दोहा॥ कोऊ कछु अवकाऊवै मतिलगाइये दोष। होनलग्यो ब्रजगलिनमें होरिहारन कोघोष॥ ९२॥ द्विबिध बिदग्धा जानिये बचन बिदग्धा एक। क्रिया बिदग्धादूसरी भाषत बिदित बिवेक॥ ९३॥ बचननिकी रचनानि सों जो साधै निजकाज। बचन बिदग्धा नायका तहि कहत कविराज॥ ९४॥ अथ बचन बिदग्धा को उदाहरण॥ सवैया॥ जबलौं घरको धनी आवैंघरै तबलौंतो कहीं चितदेबोकरो। त्योंपद्माकर ये बछरा अपने बछरानके संगचरेबो करो॥ अरु औरनकेघरते हमसों तुमदूनी दुहावनी लेबो करो॥ नित सांझ सबेरे हमारी हहा हरि गाइ भला

दुहि जैबोकरो॥ ९५॥ पुनर्यथा॥सवैया॥ पिय पागे परो-सिनके रसमें बश में बशमें बश मेरे रहैं। पदमाकर पाजुनी सी ननदी ननदी तजै पै अबसेरे रहैं॥ दुख और जो कासों कहौं को सुनै ब्रजकी बनिता दृग फेरे रहैं। न सखी घर सांझ सबेरे रहैं घनश्याम घरी घरी घेरे रहैं॥ ९६॥ ॥ दोहा॥ कल करील की कुंज में रहो अरुझि मो चीर ये बलबीर अहीर के हरत क्योंन यह पीर॥ ९७॥ कनक लता श्रीफल परी रही बिजन बन फूलि ताहि तजत क्यों बावरे अरे मधुप मति भूलि॥ ९८॥ जो तिय साधै काज निज करै क्रिया अनुमानि क्रिया बिदग्धा नायका ताहि लीजिये जानि॥ ९९॥ अथ क्रिया बिदग्धा को उदाहरण॥ कबित्त॥ बंजुल निकुंजन में मंजुल महल मध्य मोतिन की झालरै किनारिन में कुरबिंद। आइगे तहांई पदमाकर पियारे कान्ह आनि अरिगये त्यों चवाइन के नीके वृन्द॥ बैठी फिर पूतरी अनूतरी फिरंग कैसी पीठ दै प्रवीनी दृग दृगन मिलै अनंद। आछे अवलोकि रही आई रसमंदि-रमें इंदीबरसुंदर गोबिंदको सुखार बिन्द॥१००॥ दोहा॥ करि गुलाल सों धुंधुरित सकल ग्वालिनी ग्वाल रोरी मीडनके सुमिस गोरी गहे गोपाल॥ १॥ जा तियको जिय आनरत जानि कहै तिय आन ताहि लच्छिता कहत हैं जे कवि कलानिधान॥ २॥ अथ लच्छिता को उदाहरण॥ सवैया॥ ब्रज मण्डली दोष सबै पदमाकर ह्वै रही यों चुपचापरीहै। मनमोहन की बहियां में छुटी उपटी यह बेनी देखापरी है॥ मकराकृत कुण्डल की झलकी इतहू भुज भूलपै छापरी है। इनकी उनसों जो लगी अखियां कहिये तो कछू हमैं कापरी है॥ ३॥ पुनर्यथा सवैया॥ बीत वही सुतौ बीते चुकी अब आंजती हौ किहि काजल कंजन। त्यों पदमाकर हाल कहै मति लाल करौ दृग ख्यालके खंजन॥ रेखत कंचुकी कों चुकी के बिच होत छिपाये कहा कुचकंजन। तोहिं कलंक लगाइबे को

लग्यो कान्हहूी के अधरान में अंजन ॥ ४ ॥ दोहा ॥ धरकत कत हेमंतऋतु रीति कहौ कह जात। अपने बश सोवन लगी भली नहीं यहबात ॥ ५ ॥ जो बज्ञ लोगन सो जु तिय राखति रति की चाह। कुलटा ताहि बखानहीं जे कवीन के नाह ॥ ६ ॥ अथ कुलटाको उदाहरण ॥ सवैया ॥ यों अलबेली अकेली कहूं सुकुमारि सिंगारन कै चलै कै चलै। त्यों पदमाकर एकनके उरमें रस बीजनि बै चलै बै चलै ॥ एकन सों बतराय कछू छिन एकन को मन लै चलै लै चलै। एकन को तकि घूंघुट में सुख मोरि कनैखिन दै चलै दै चलै ॥ ७ ॥ दोहा ॥ बिपिन बाग बीथी जहां प्रबल पुरुष मय माम। कास कलित वलि बास को तहां तनिक बिसराम ॥ ८ ॥ सुनत लखत चित चाहकी बात भांति अभिराम। मुदित होय जो नायका ताको मुदिता नाम ॥ ९ ॥ अथ मुदिता को उदाहरण ॥ कवित्त ॥ वृन्दाबन बीथिन बिलोकन गई ही जहां राजत रसाल बन तालरु तमाल को। कहै पदमाकर निहारत बन्योई तहां नेहनि को नेम प्रेम अद्भुत ख्याल को ॥ दूनो दूनो बाढ़त सुपनौ की निशा में अहो आनंद अनूप रूप काहू ब्रजबाल को। कुंजतै कहूको सुनो कंत को गमन लखि आगमन तैसो मनहरन गोपाल को ॥ १० ॥ दोहा ॥ परखि प्रेम बश पर पुरुष हरषि रही मन मैन। तबलगि झुकि आई घटा अधिक अँधेरीरैन ॥ ११ ॥ कही सु अनसयना त्रिबिध प्रथम भेद यह जानि। बर्त्तमान संकेत के निघटन के सुख हानि ॥ १२ ॥ पहिली अनुसयना को उदाहरण ॥ कवित्त ॥ सुनेघर परम परोसी के सुजान तिया आई सुनि सुनिकै परोसिन मनो अराति। कहै पदमाकर सु कंचन लतासी लचि ऊँची लेत सांस वा हिये में त्योंनहीं समाति ॥ जाइ आइ जहां तहां बैठि उठि जैसे तैसे दिन तौ बितायो बधू बीतति है कैसे राति। ताप सरसानी देखै अति अकुलानी जऊ पति उर आनी तऊ सेज में बिलानी जाति ॥ १३ ॥ दोहा ॥ सौति संयो-

ग न रोग कछु नहिं बियोग बलवंत। ननँद होत क्यों दू-
बरी लागत ललित बसंत॥ १४॥ होनहार संकेत को
धरि अभाव उरमांहि। दुखित होत सो दूबरी कहत
अनुसिया नाहिं॥ १५॥ अथ दूसरी अनुसयना नायका
को उदाहरण॥ कवित्त॥ चालौ सुनि चन्द्रमुखी चित्तमें
सुचैन करि तित बन बागन घनेरे अलि घूमि रहे। कहै
पदमाकर मयूर मंजु नाचतहैं चाइसों चकोरिनि चकोर
चूमि चूमि रहे॥ कदम अनार आम अगर अशोक थोक
लतन समेत लोने लोने लगि भूमि रहे। फूल रहे फलरहे
फैलि रहे फबि रहे झपि रहे झालि रहे झुकि रहे झूमि
रहे॥ १६॥ दोहा॥ निघटत फूल गुलाब के धरति क्यों न
धन धीर। अमल कमल फूलन लगे बिमल सरोवर
नीर॥ १७॥ जुतिय सुरत संकेतको रमन गमन अनुमान।
ब्याकुल होति सु तीसरी अनुसयना पहिचान॥ १८॥
तीसरी अनुसयनाको उदाहरण॥सवैया॥ चारिहूं ओ-
रते पौन झकोरझ कोरनि घोर घटा घहरानी। ऐसे सम-
य पदमाकर काहू के आवत पीत पटी फहरानी॥ गुंज
की माल गोपाल गरे ब्रजबाल बिलोकि थकी थहरानी।
नीरज तें कढ़ि नीर नदी छबि छीजत छीर जपै छहरानी॥
१९॥ दोहा॥ कल करीलकी कुञ्ज सों उठत अतरकी बोय।
भयो तोहिं भावी कहा उठी अचानक रोय॥ २०॥ इति
परकीया निरूपणम्॥अथगणिका लक्षणम्॥ दोहा॥ करै
और सों रति रमन इक धनही के हेत। गणिका ताहि
बखानहीं जे कवि सुमति निकेत॥ २१॥ गणिका को उ-
दाहरण॥ कवित्त॥ आरस सों आरत सम्हारत न शीष
पट गजब गुजारत गरीबन की धारपर। कहै पदमाकर
सुगन्ध सरसार वैसे बिथुरि बिराजै बार हीरन के हार
पर॥ छाजत छबीले छिति छहर छराकी छोर भोर उठि
आई केलि मन्दिर के द्वार पर। एक पग भीतर सु एक
देहरीपै धरै एक कर कंज एक कर है किवार पर॥ २२॥

दोहा॥ तन सुबरण सुबरण बसन सुबरण उकति उछाह। धनि सुबरणमें ह्वै रही सुबरणही की चाह॥ २३॥ प्रथम कही जो नायका ते सब त्रिविध बिचारि। अन्य सुरति दुखिता सुदृक मानवती पुनि नारि॥२४॥ फिरि बक्रोकति गर्बिता यहि बिधि भिन्न प्रकार। तिनके लक्षण लक्षि सब भाषत मतिअनुसार॥ २५॥ प्रीतम प्रीति प्रतीतिजो और तियातन पाइ। दुखित होइ सो जानिये अन्य सुरत दुखताइ॥ २६॥ अन्य सुरति दुःखिता को उदाहरण॥ कवित्त॥ बोलति न काहे येरीपूछे बिन बोलौं कहा पूछति हौं कहौ भई खेद अधिकाई है। कहैपदमाकर सुमारग के गये आये सांची कह मोसों आजु कहा गई आई है॥ गईआई हौं तो पास सांवरे के कौन काज तेरे लिये ल्यावन सुतेरिय दुहाई है। काहेतेनल्याई फिरि मोहन बिहारी जूको कैसे वाहि ल्याऊं जैसे वाको मन ल्याई है॥ २७॥ पुनर्यथा॥ कवित्त॥ धोइगई केसरि कपोल कुच गोलन की पीक लीक अधर अमोलन लगाई है। कहै पदमाकर त्यों नैनह्वं निरंजन में तज तिन कंप देह पुलकनि छाईहै॥ बाद मति ठानै झूठ बादिनि भईरी अब दूतपनौ छोड़ि धूत पनमें सुहाईहै। आई तोहिं पीरन पराई महा पापिनि तू पापी लौं गई न कहूं बापी न्हाय आई है॥ २८॥ दोहा॥ खान पान शय्या शयन जासु भरोसे आय। करै सो छल अलि आप सों तासो कहा बसाय॥ २९॥ पिय सों करै जो मान तिय वहै मानिनी जान। ताको कहत उदाहरण दोहा कवित बखान॥ ३०॥ मानिनी को उदाहरण॥ सवैया॥ मोहिं तुम्हैं न उन्हैं न इन्हैं मनभावती सोन मनावनऐहै। त्योंपदमाकर मोरन को सुनि सोर कहो नहिं को अकुलैहै॥ धीर धरो किन मेरे गोविंद घरी इकमें जो घटा घहरैहै। आपही तेतजि मान तिया हरुवै हरुवै गरुवै लागि जैहै॥ ३१॥ दोहा॥ और तजे तौ रज सजे भूषण अमल अमोल। तजन कह्यो

न सुहाग में अंजन तिलक तमोल ॥ ३२ ॥ वह बक्रोकति गर्बिता द्विविध कहत रस धाम। प्रेमगर्बिता एक पुनिरूप गर्बिता नाम ॥ ३३ ॥ करै प्रेमको गरब जो प्रेम गर्बिता नारि। रूप गर्बिता होय वह रूप गरबको धारि ॥ ३४ ॥ अथ प्रेम गर्बिताको उदाहरण ॥ सवैया ॥ मो बिन माइन खाइ कछू पद्माकर त्यों भइ भावीअचेत है। बीरन आइ लिवाइबे को तिनकी मृदुबानिहू मानिन लेतहै ॥ प्रीतम को समुझावति क्यों नहीं ये सखी तू जुपै राखति हेतहै। औरतो मोहिं सबै सुखरी दुखरी यहै माइकै जान न देत है ॥ ३५ ॥ पुनर्यथा ॥ सवैया ॥ हौं अलि आजु बड़े तरके भरि के घट गोरस का पगधारौ। त्यों कबको धौं खरोरी छुतो पद्माकर मोहित मोहिं निवारौ ॥ सांकरी खोर में कांकरी की करि चोट चलौ फिरि लौटि निहारौ। तारि बनते इन आंखिन ते न टरयो वह माखन चाखन हारौ ॥ ३६ ॥दोहा॥ कछु न खाति अनखाति अति बिरह बरी बिललाति। अरी सयानी सौति की बिपति कही नहिं जाति ॥ ३७ ॥ अथ रूप गर्बिताको उदाहरण ॥ सवैया ॥ है नहिं माइ को मेरीभटू यह सासुरोहै सबकी साहिबो करौ। पद्माकर पाइ सुहाग सदा साखियांनछ को पहिंचनबो करौ ॥ नेहभरी बतियां कहिकै नित सौतिनकी छतियां दहिबो करौ। चंद्रमुखी कहे होती दुखी तौन कोऊकहैगो सुखीरहिबोकरौ॥३८॥दोहा॥ निरखि नयन मृगमीनसों उठीं सबै मिल भाखि। परघर जाइ गमाइ रिस हौं आई रस राखि ॥ ३९ ॥ अथ दश नायका वर्णनम्॥ दोहा॥ प्रोषित पतिका खण्डिता कलहंतरिता होय ॥ बिप्रलब्ध उत्का बछरि बासक सय्या जोय ॥ ४० ॥ स्वाधीनछपतिका कहत अभिसारिका बखानि। प्रगट प्रवत्स्यत प्रोषित आगतपतिका जानि ॥ ४१ ॥ येसब दश बिध नायका कविन कही निरधारि। तिनके लच्छण लच्छ सब क्रमते कहत बिचारि ॥ ४२ ॥ पिय जाको परदेश

में प्रोषितपतिका सोय। उदित उदीपन तेजु तन संतापि त अति होय॥ ४३॥ अथ मुग्धा प्रोषितपतिका उदाहरण॥ कवित्त॥ मांगि सिखनौ दिन की न्योतिगे गोबिंद तिय सौदिन समान छिनमानि अकुलावै है। कहै पदमाकर छपाकरि छपाकर ते बदन छपाकर मलीन मुरझावै है॥ बूझत जुकोऊ कै कहारी भयो तोहिं तब औरही की और कछू भेद न बतावै है। आंसुन कै सोखिन सकोच बस आलिनमें उलही बिरह बेलि दुलही दुरावैहै॥ ४४॥ पुनर्यथा॥ सवैया॥ बालम के बिछुरे ब्रजबाल को हाल कह्यो न परै कछुह्याहीं। च्वैसी गई दिन तीनही में तब औधि लौं क्यों छजिहै छबि छाहीं॥ तीरसों धीर समीर लगै पदमाकर बूझिहू बोलत नाहीं। चन्द्र उदय लखि चन्द्रमुखी मुख मन्दहै पैठति मन्दिर माहीं॥४५॥ दोहा॥ भरति उसासन दृग भरति करति गेह को काज। पलपल पर पीरी परति परी लाज के राज॥ ४६॥ मध्या प्रोषित पतिका॥ सवैया॥ अबह्वै है कहा अरबिन्द सों आनन इन्दु के आइ हवाले परयौ। पदमाकर भाषै न भाषै बनै जिय ऐसे कछू बकसालै परयो॥ इकमीन बिचारौ बिंध्यो बनसी पुनि जाल के जादू दुमालै परयो। मनतो मनमोहन के सँगगो तन लाज मनोज के पालै परयौ॥ ४७॥ पुनर्यथा॥ कवित्त॥ ऊबत हौं डूबत हौं डगत हौं डोलत हौं बोलत न काहे प्रीति रीति न रितै चलै। कहैं पदमाकर त्यों उससि उसानि सों आंसूवै अपार आइ आंखिन दूतै चलै॥ अवधिही की आगम लौं रहत बनै तौ रहौं बीचहीक्यों बैरी बंध बेदनि बितै चलै। ये रे मेरे प्राण कान्ह प्यारे के चलाचल में तबतौ चलैन अबचाहत कितै चलै॥ ४८॥ दोहा॥ रमन आगमन अवधि लौं क्यों जिवाय यतु याहि। रहत कण्ठगत अवधिये आधीनिकसति आहि॥ ४९॥ प्रौढ़ा प्रोषित पतिका॥ ॥ कवित्त॥ लागत बसंत के सुपाती लिखी प्रीतम को

प्यारीपरबीन है हमारी सुधि आनिवी। कहै पद्माकर इहांको यों हवाल बिरहानलकी ज्वाला सों दावानलतें मानवी॥ ऊबकी उसासन को पूरो परगाश सोतौ निपट उसास पवनहू तै पहिंचानवी। नैनन को ढंग सौंअनंग पिचकारिन ते गोतनको रंग पीरे पातन तेजानवी॥५०॥ दोहा॥ बर्षत मेह अछेह अति अवनि रही जल पूरि। पथिक तऊं तुव गेह तो उठत भभूरन धूरि॥ ५१॥ परकीया प्रोषित पतिका का उदाहरण॥ सवैया॥ न्योते गये नँदलाल कहूं सुनि बाल बिहाल बियोग की घेरी। ऊतरु कौनहूं कै पद्माकर दै फिरि कुञ्ज गलीनमें फेरी। पावै न चैन सुमैनके बाननि होत छिनै छिन छीन घनेरी। बूझैजु कन्त कहै तो यहै तिय पाउं पिरात है पांसुरीमेरी॥५२॥ दोहा॥ व्यथित बियोगिनि एक तू यों दुखसहत न कोइ। ननँद तिहारे कन्तको पन्थ बिलोकति जोइ॥ ५३॥ अथ गणिका प्रोषित पतिका का उदाहरण॥ सवैया॥ बीर अबीर अभीरन को दुख भाषै बनै न बनै बिन भाषै। त्यों पद्माकर मोहन मीतके पाय सँदेशन आठये पाषै॥ आये न आप न पाती लिखी मनकी मनहीमें रही अभिलाषै॥ शीतके अन्त बसन्त लग्यो अब कौन के आगे बसन्त लै राखै॥ ५४॥ दोहा॥ पग अंकुश करमें कमल करिजु दियो करतार सुसखि सुफल ह्वै है तबहिं जब ऐहैं घर यार॥ ५५॥ अनतरमें रचि चिन्ह लखि पीतमके शुभगात। दुखित होइसोखण्डिता बरणत मति अवदात॥५६॥सुग्धा खण्डिता का उदाहरण॥ कवित्त॥ बैठी परयंकपै नवेली निरशंक जहां जागी जोतिजाहिर जवाहिरकी जागैज्यों। कहै पद्माकर कहूंते नन्द नन्दहूं औचकही आइ अलसाइ प्रेम पागेयों॥ झपकोहै पलनि पियाके पीक लीक लखि झुकि झहराइहून नेकु अनुरागै त्यों। वैसही मयङ्क मुखीलागत न अंकऊती देखिकै कलङ्कअब घेरी अङ्क लागै क्यों॥५७॥ दोहा॥ बिन गुन माल गोपाल उर क्यों पहिरी

परभात। चकितचित्त चुपह्वै रही निरखि अनोखी बात॥५८॥ मध्या खण्डिताको उदाहरण॥ कवित्त॥ ख्याल मन भायो कहूं करिकै गोपाल घरै आये अति आलस मढ़े ई बड़े तरकै। कहै पदमाकर निहारी गज गामिनि के गज सुकतानि के हिये पर हार दरकै॥ येते पै न आनन ह्वै निकसे बधू के बैन अधर उराहनै सुदीवे काज फरकै। कंधनत कंचुकी भुजानितें सु बाजूबन्द पौंचनते कंकन हरेही हरे सरकै॥५९॥ दोहा॥ रसिकराज आलस भरे खरे दृगन की ओर। कछुक कोप आदरन कछुकरत भावती भोर॥६०॥ अथ प्रौढ़ा खंडिता को उदाहरण॥ खाये पान बीरासी बिलोचन बिराजै आज अंजन अँजाये अध अधराअमीके हैं। कहै पदमाकर गोविन्द देखौआरसी लैअमल कपोलन पै किन पान पीके हैं॥ ऐसो अवलोकिवेई लायक मुखारबिन्द जाहि लखि चन्द अरबिन्द होत फीकेहैं। प्रेम रस पागि जागि आये अनुराग यातें अब हम जानी के हमारे भाग नीकेहैं॥६१॥ दोहा॥ ताकि रहत छिन और तिय लेत और को नाउँ। ये बलि ऐसे बलमकी बिबिधि भांति बलिजाउँ॥ ६२॥ अथ परकीया खंडिताको उदाहरण॥ कवित्त॥ एहो ब्रजठाकुर ठगोरी डार कीन्ही तब बौरी बिनकाज अबताकी लाज मरिये। कहै पदमाकर एतेपै यो रँगीलो रूप देखे बिनदेखे कहो कैसे धीर धरिये॥ अंकऊं न लागीपै कलङ्कनी कहाई यातें अरज हमारी एक यही अनुसरिये। सांझ के सबेरे दिन दशयें दिवारी फाग कबहूं भलेजू भलै घाइनो तौकरिये॥६३॥ पुनर्यथा॥ सवैया॥ सीख न मानी सयानीसखी न कियो पदमाकर की अमनैकी। प्रीतिकरी तुमसोंबजिकै सुबिसारिकरी तुमप्रीति घनेकी॥ रावरी रीति लखी इमि सांवरे होतिहै सम्पति जो सपने की। सांचहूताको न होतभलो जो न मानतहै कही चारि जनेकी॥६४॥ पुनर्यथा॥ सवैया॥ साहसहून कहूं रख आपनो आपै बनै बनै बिनआपै। त्यों पदमाकर यों मगमें रँग

देखतहौं कबकी रुखराखैं ॥ वाविधि सांवरे रावरे की न मिलै मरजी न मजानमजाखैं। बोलनि बानि बिलोकनि प्रीति की वो मन बेन रहीं अब आंखैं ॥ ९५ ॥ दोहा ॥ गन्यो न गोकुल कुल घनो रमन रावरे हेत। सु तुम चोरि चित चारलौ भोर देखाई देत ॥ ९६ ॥ गणिका खंडिता ॥ कवित्त ॥ गोस पेंच कुण्डल कलंगी शिर पेंच पेंच पेंचन ते खेंचि बिन बेचे बारि आयेहौ। कहै पद्माकर कहां वा मूरि जीवन की जाकी पगधूरि पगरीपै पारि आयेहौ॥ वेगुनके सार ऐसे वेगुनके हार अब मेरी मनुहारि को न याही धरि आयेहौ। पांसा सार खेली कित कौन मनुहारिनसों जित मनुहारि मनुहारि हरिआयेहौ॥९७॥ दोहा ॥ बड़े साहलखि हमकरी तुमसों प्रीति विचारि। कहा जानि तुमकरतहौ हमैं और कीनारि ॥ ९८ ॥ कलहंतरिताको लक्षण ॥ दोहा॥ प्रथमकछू अपमानकरि प्रिय को फिरि पछिताय। कलहंतरिता नायका ताहिकहत कविराय ॥ ९९ ॥ अथ मुग्धा कलहंतरिता को उदाहरण ॥ सवैया ॥ बारी बड़ी सुरझानी बिलोकि जिठानी करै उपचार कितीको। त्यों पद्माकर ऊंची उसास लखै मुख सासको ह्वै रह्यो फीको ॥ एकै कहै इन्हैं डीठि लगीपर भेद न कोऊ लहै दुलहीको। ह्वैकै अजान जो कान्ह सों कीन्हों गुमान भयो वहै ज्यानहीं जीको ॥ १० ॥ दोहा ॥ प्रथम केलि तियकलह की कथा न कछु कहिजाय। अतन तापतनही सहै मनहीं मन अकुलाय ॥ १ ॥ मध्या कलहांतरिता ॥ कवित्त ॥ झालरन द्वार झुकि झूमति बितान बिछे गहब गलीचा अरु गुलगुली गिलमें। जगर मगर पद्माकर सुदीपन की फैली जगा जोति केलि मंदिर अखिलमें॥ आवत तहांई मनमोहन को लाजमैन जैसी कछू करी तैसी दिलही की दिलमें। हेरि हरि बिलमें न लीन्हों हिलमिल में रहीहौं हाइ मिलमें प्रभाकी झिल मिल में ॥ १२ ॥ दोहा ॥ ल्यावो पियहि मनाइयह कह्यो चह-

ति रहि जाति। कलह कहर की लहर में परी तिय पछिताति ॥ १३ ॥ अथ प्रौढ़ा कलहांतरिता को उदाहरण ॥ कवित्त ॥ एअलि इकन्त पाइ पाइन परैहै आइ हौं न तब हेरिया गुमान बज मारैं सों। कहै पदमाकर वै रूठिगे सुऐसी भई नैनन ते नींद गई हाइ के दवारेसों ॥ रैन दिन चैन है न मैन है हमारे बश ऐन सुख सूखत उसास अनुसारे सों। प्राणन की हानि सी दिखानसी लगी है हाइ कौन गुन जान मान कीन्हों प्राण प्यारेसों ॥ १४ ॥ दोहा ॥ घन घमण्ड पावस निशा सरवर लग्यो सुखान। परखि प्राण पति जानिगो तज्यो माननी मान ॥ १५ ॥ अथ परकीया कलहांतरिता को उदाहरण ॥ सवैया ॥ कासों कहा मैं कहौं दुख यों सुख सूखतई है पियूष पियेतैं। त्यों पदमाकर यों उपहास को चास मिटै न उसासलिये तैं ॥ व्यापै व्यथा यह जानि परी मन मोहन मीतसों मान किये तैं। भूलि हूं चूक परी जो कहूं तिहि चूककी हूक न जात हियेतैं ॥ १६ ॥ दोहा ॥ मोहन मीत सभीत गो लखि तेरा सनमान। अब सु दगा दै तूं चल्यो अरे सुहई मान ॥ १७ ॥ अथ गणिका कलहांतरिता को उदाहरण ॥ सवैया ॥ हरि के हार हजारन को धन देत छते सुखसे सरसाने। हौं न लियो पदमाकर त्यों अरु बेलिन वेलि सुधारस साने ॥ वे चलि ह्यांते गये अनतैं हमका अब आपनी बात बखाने। आपने हाथसों आपने पायं पै पाथर पारि परयो पछिताने ॥ १८ ॥ दोहा ॥ कहा देखि दुखि दाहिये कुमति कछू जो कीन। छैल छगूनी छोरितै छलानिलीनो छीन ॥ १९ ॥ विप्रलुब्धा को लक्षण ॥ दोहा ॥ प्रिय बिहीन संकेत लखि जो तिय अति अकुलाय। ताहि बिप्र लुब्धा कहत सुकबिन के समुदाय ॥ ८० ॥ अथ मुग्धा बिप्र लुब्धा को उदाहरण ॥ कबित्त ॥ खेलको बहानों कै सहेलिन के संगचलि आइ केलि मन्दिर लों सुन्दर सजेज पर। कहै पदमाकर तहां न पिय पाके तिय त्योंहीं तनतै रही तमी

पति के तेह पर ॥ बाढ़त व्यथा की कथा काहू सों कछू न कही लचकि लता लौं गई लाजही की जेलपर। बीरी परी बिथरि कपोल पर पीरी परी धीरा परी धाय गिरी सीरी परी सेजपर ॥ ८१ ॥ दोहा ॥ नवल गूजरी ऊजरी निरखि ऊजरीसेज। उदित उजेरी रैनको कहि न सकत कछु तेज ॥ ८२ ॥ अथ मध्या विप्रलुब्धा को उदाहरण ॥ कवित्त ॥ पूर अँसुवान को रह्यो जो पूरि आंखिन में बाहन बह्यो पै चढ़ि बाहिरो बहै नहीं। कहै पदमाकर सु धोखेहू न माल तरु चाहत गह्यो पै गहवर ह्वै गहै नहीं ॥ कांपि कदलीलों या अलीको अवलंब कहूं चाहत लह्यो पै लोक लाजनि लहै नहीं ॥ कंतन मिले को दुख दारुण अनंत पय चाहति कह्यो पै कछू काहू सों कहै नहीं ॥ ८३ ॥ दोहा ॥ सजन बिहीनी सेज पर परे पेखि सुकतान। तबहिं तिया को तन भयो मनहुं अधपक्यो पान ॥ ८४ ॥ अथ प्रौढ़ा विप्र लुब्धाको उदाहरण ॥ कवित्त ॥ आई फाग खेलन गोविन्द सों अनन्द भरी जाको लसै लंक मंजु मखतूल ताग सों। कहै पदमाकर तहां न ताहि मिले श्याम छिनमें छबीली को अनंग दियो दाग सों ॥ कौनकरै होरी कोऊ गोरी समुझावै कहा नागरी को राग लग्यो विषसों विराग सों। कह रसी केसर कपूर लग्यो काल सम गाज सों गुलाब लग्यो अर-गजा आग सों ॥ ८५ ॥ दोहा ॥ निरखि सेज रँगरँग भरी लगी उसासैं लैन। कछु न चैन चितमें रह्यो चढ़त चांदनी रैन ॥ ८६ ॥ अथ परकीया विप्र लुब्धा ॥ कवित्त ॥ गंजन सुगंज लग्यो तैसो पौन पुंज लग्यो दोष मणि कुञ्ज लग्यो गुञ्जन सों गजिकै। कहै पदमाकर न खोज लग्यो ख्यालन को घालन मनोज लग्यो बीर तीर सजिकै ॥ सुखन सुबिंब लग्यो दूषण कदम्ब लग्यो मोहिं न बिलम्ब लग्यो आई गेह तजिकै। मीजन मयङ्क लग्यो मीतहूं न अङ्क लग्यो पङ्क लग्यो पायन कलङ्क लग्यो बजिकै ॥ ८७ ॥

दोहा॥ लखि सँकेत सूनो सुमुखि बोली बिकल सभीति। कहौ कहा किहि सुख लह्यो करि कुमीतसों प्रीति ८८॥ अथ गणिका विप्र लुब्धाको उदाहरण॥ कवित्त॥ निशि अँधियारी तज प्यारी परबीन चढ़ि मालके मनोरथकेरथ पै चली गई। कहै पद्माकर तहीं न मनमोहन सों भेट भई सटकि सहेट तें अली गई॥ चन्दन सों चांदनी सों चन्द सों चमेलिनसों और बन बेलिनके दलनि दली गई। आई झुती छैल कै छलैकै छल छंदनि सों छैल तो छल्यो न आपु छैल सों छली गई॥ ८९॥ दोहा॥ इत न मैन मूरति मिल्यो परत कौन विधि चैन। धनकी भई न धामकी गई ऐसही रैन॥९०॥ लहि सँकेत शोचै जु तिय रमन आगमनहेत। ताहीको उतकण्ठिताबरणत सुकविसचेत ९१॥ अथ उतकण्ठिता को उदाहरण॥ सवैया॥ शोचै अनागम कारण कंत को मोचै उसासन आंसहूं मोचै। मोचै न हेरि हराहिय को पद्माकर मोच सकै न सकोचै॥ कोचै तकै इह चांदनी ते अलि याहि निबाहि व्यथाअवलोचै। लोचै परी सियरी पर्यङ्क पै बीती वरी न खरी खरी शोचै॥ ९२॥ दोहा॥ अरे सु मोमन बावरे इतहिकहा अकुलात। अटकि अटा कित पति रह्यो नितहि क्यों न चलि जात॥ ९३॥ मध्याउक्ता॥ सवैया॥ आये न कन्त कहाधौं रहे भयो भोर चहै निशि जाति सिरानी। योंपद्माकर बूझयौ चहै पर बूझिसकै न सकोचकी सानी॥ धारिसकै न उतारि सकै सु निहारि सिंगार हिये हहरानी। शूलसे फूल लगै फरपै तिय फूल छरीसी परी मुरझानी॥९४॥ दोहा॥ अनत रहे रमि कन्तक्यों यह बूझनके चाय। सुमुखि सखी के श्रवणसों मुख लगाय रहिजाय॥ ९५॥ अथ प्रौढ़ाउक्ता को उदाहरण॥ कवित्त॥ सौतिनके वास तें रहे धौं और बास ते न आये कौन गास ते प्यो करतौ तलास तें। कहै पद्माकर सु बास ते जवास ते सु फूलन की रास ते जगी है महा सासतें॥ चांदनी विकास ते सुधाकर प्रकाश ते

न राखत झलास ते न लाउ खसखासतें॥ पौन करु आस ते न जाउ उड़ि बास ते अरी गुलाब पासते उठाउ आस पास तैं॥९६॥ दोहा॥ कियऊं न मैं कबहूं कलह गयो न कबहूं मौन। पिय अबलौं आये न कत भयो सुकारण कौन॥९७॥ परकीया उक्ता॥ कवित्त॥ फागुन में फागुन बिचारि ना देखाईदेत एती बेर लाई उन कानन में नाइ आव। कहै पद्माकर हितू जो हमारी है तो हमारे कहे बीर वहि धाम लगि धाय आव॥ जोरि जो धरीहै वेद रद द्वारे तौ न होरी मेरी बिरहाग की उलूकनि लौ लाय आव। एरी दून नयननकी नीरमें अबीर घोरि बोरि पिचकारी चित चोर पै चलाय आव॥९८॥ दोहा॥ तजत गेह अरु गेह पति मोहिं न लगी बिलंब। हरि बिलंब लाई सुकत क्यों नहिं कहत कदंब॥९९॥ गणिका उक्ता॥ सवैया॥ काहू कियो धौं कहूं बस भाव तो काहू कहूं धौं कछू छलछायो। त्योंपद्माकर तान तरंगिनिकाहू कि धौं रविरंग रिझायो॥ जानि परै न कछू गतिआजकी जाहितयेतौ बिलंबलगायो।मोहनमोमनमोहिबेकोकिधौं मोमनको मनिहानर पायो॥१००॥ दोहा॥ कहत सखिन सों शशि मुखी सजि सजि सकल सिंगार। मो मन अटक्यो हारमें अटकि रह्यो कित यार॥१॥ साजहि सेज सिंगार तिय पिय मिलाप के काज। बासक शय्या नायका वाहि कहत कविराज॥२॥ मुग्धा बासक शय्या॥ कवित्त॥ सोरह सिंगार को नवेली के सहेलिनहूं कीन्ही केलि मन्दिर में कलपित केरेहैं। कहै पद्माकर सुपासही गुलाब पास खासे खस खास खसबोइनकी ढेरे हैं॥ त्यों गुलाब नीरनसों हीरन के हौज भरे दंपति मिलाप हित आरती उजेरे हैं। चोखी चांदनीन पर चौसर चमेलिनके चंदन की चौकी चारु चांदीके चँगेरे हैं॥३॥दोहा॥ साजि सैन भूषण बसन सबकी नजर बचाय। रही पौढ़ि सिसि नींद के दृग दुवार से लाय॥४॥ मध्या बासक शय्या॥

कवित्त ॥ सजि ब्रजबाल नन्दलाल सों मिलैकै लिये लगनि लगा लगीमें लमकि लमकि उठै। कहै पद्माकर बिराक ऐसी चांदनीसी चारोंवोर चौकनिमैं चमकि चमकिउठै॥ झुकिझुकि झूमिझूमि झिलझिल झेलझैल झरहरी झापन मैं झमकि झमकिउठै। दर दरदेखौं दरी खाननमैं दौरि दौरि दुरि दुरि दामिनी सी दमकि दमकि उठै ॥ ५ ॥ दोहा ॥ शुभ सिंगार साजे सबै दै सखीन को पीठि। चले अधखुले द्वार लौं खुली अधखुली डीठि ॥ ६ ॥ प्रौढ़ा बासक शय्या ॥ कवित्त ॥ चह चही चहल चहूंधा चारु चंदन की चंद्रक चुमीन चौक चौकन चढ़ीहै आव। कहै पद्माकर फराकत फरस बंद फहरि फुहारन की फरस फवी है फाव ॥ मोद मदमाती मन मोहन मिलै के काज साजि मणि मन्दिर मनोज कैसी महताब। गोल गुलगादी गुल गोल में गुलाब गुल गजक गुलाबी गुल गिन्दुक गले गुलाब ॥ ७ ॥ दोहा ॥ यों सिंगार साजे सुतिय को करि सकत बखान। रह्यो न कछु उपमान को तिहूं लोक में आन ॥ ८ ॥ परकीया बासक शय्या ॥ कवित्त ॥ सोसनी दुकूलनि दुराये रूप रोसनीहै बूटेदार घांघरी की घूमनि घुमायकै। कहैपद्माकर त्यों उन्नत उरोजनपै तंगअँगिया है तनी तननि तनाय कै ॥ छज्जन की छांह छकि छैल के मिलैके हेत छाजती छपा मैं यों छबीली छबि छाय कै। ह्वै रही खरीहै छरी फूलकी छरीसी छपि सांकरी गली में फूल पांखुरी बिछायकै ॥ ९ ॥ दोहा ॥ फूल बिनन मिस कुंजमें पहिरि गुंजके हार। मग निरखत नँदलाल को सुबलि बारही बार ॥ १० ॥ गणिका बासक शय्या ॥ सवैया ॥ नीरके तीर उसीरके मन्दिर धीर समीर जुड़ावत जीरे। त्यों पद्माकर पङ्कज पुंज परैनके पात परै जनु पीरे ॥ ग्रीषमकी क्यों गनै गरमी गज गौहर चाह गुलाब गँभीरे। बैठी बधू बनि बाग बिहार में बार बगारि सिवारसे सीरे ॥ ११ ॥ दोहा ॥ अमल अमोलिक लाल मय पहिरि विभू-

षण भार। हरषि हिये परतिय धरयो सुरख सीपको हार ॥ १२ ॥ जा तियके आधीन ह्वै पीतम रहै हमेश। सुखाधीन पतिका कही कबिन नायका बेश ॥ १३ ॥ अथ मुग्धा स्वाधीन पतिका उदाहरण ॥ कवित्त ॥ चाह भरयो चञ्चल हमारो चित नवल बधू तेरी चाल चञ्चल चितौनिमें बसत है। कहै पद्माकर सु चञ्चल चितौनिहूं ते औझकि उझकि झझकनिमें फँसत है ॥ औझकि उझकि झझकनितें सुरझि बेश वाहीकी गहनि माहीं आय बिलसत है। वाही की गहनितें सु नाहींकी कहनि आयो नाहींकी कहनि तें सुनाहीं निकसत है ॥ १४ ॥ पुनर्यथा ॥ सवैया ॥ कबहूं फिर पांव न देहौं यहां भजि जैहौं तहां जहां सूधी सहौ। पद्माकर देहरी द्वारा किवार लगे ललचैहौं न ऐसी चहौ॥ बहियां जु कही छहियां न नेकहु छुवै पावहुगे लहु लाज लहौ। चितचाहैं कहौ बतियांउनहीं उतही रहौ हाहा हमें न गहौ ॥ १५ ॥ पुनर्यथा ॥ सवैया ॥ सतरैबो करो बतरैबो करो इतरैबो करो करो जोईचहौ। पद्माकर आनँद दीबो करो रस लीबो करो सुख सों उमहौ ॥ कछु अन्तर राखो न राखौ चहौ पर या बिनती इक मेरी गहौ। अब ज्यों हियमें नित बैठि रही त्यों दया करिके ढिग बैठि रहौ ॥ १६ ॥ दोहा ॥ तुव अयानपन लखि भटू लटू भये नँदलाल। जब सयानपन देखिहैं तब धौं कहा हवाल ॥ १७ ॥ अथ मध्या स्वाधीन पतिका उदाहरण ॥ ता छिनते रहै औरनि भूलि सु भूली कदम्बनकी परछाहीं। त्यों पद्माकर संग सखान की भूलि भलाय कला अवगाहीं ॥ जा छिनते तू बशीकर मंच सी मेली सु कान्हके कानन माहीं। दै गलबाहीं जु नाहीं करी वह नाहीं गोपाल को भूलत नाहीं ॥ १८ ॥ दोहा ॥ आधे आधे दृगनि रति आधे दृगनि सु लाज। राधे आधे बचन कहि सुबश किये ब्रजराज ॥ १९ ॥ अथ प्रौढ़ा स्वाधीनपतिका उदाहरण ॥ सवैया ॥ मो सुख बीरी दई सु दई सु रही रचि साधि सु-

गन्धि घनेरो। त्यों पद्माकर केसरि खौरि करी तो करी सो सुहाग है मेरो॥ बेनी गुही तो गुही मन भावने मोतिन मांग सवांरि सबेरो। और सिंगार सजे तो सजौ इक हार हहा हियरे मतिगेरो॥ २०॥ दोहा॥ अंगराग औरै अँगनि करत कछू बरजोन। पै मेंहदी न दिवाइहौं तुमसों पगन प्रबीन॥ २१॥ अथ परकीया स्वाधीन पतिका उदाहरण॥ कवित्त॥ उझकि झरोखा झूँ झमकि झुकि झांकी बाम श्यामकी बिसरि गई खबरि तमाशा की। कहै पद्माकर चहूंधा चैत चांदनी सी फैलि रही तैसिये सुगन्ध शुभ स्वासा की॥ तैसी छवि तकत तमोरकी तरोनन की वैसी छवि बसनकी बारनकी बासा की। मोतिनकी मांग की सुखौकी मुसक्यानहूंकी नथकी निहारबेकी नैनन की नासाकी॥ २२॥ पुनर्यथा॥ कवित्त॥ ईशकी दुहाई शीश फूल तें लटकि कट लट ते लटकि लट कन्ध पै ठहरि गौ। कहै पद्माकर सुमन्द चलि कंधहूं ते भूमि भ्रमि भाई सी भजा में त्यों भभरिगौ॥ भाई सी भजा ते भ्रमि आयो गोरी गोरी गोरी बांहते चपि चूनरिन में अरिगौ। हरेउ हरे हरै हरी चूनरिन ते चाहौ जौलौं तौलौं मन मेरो दौरि तेरे हाथ परिगौ॥ २३॥ दोहा॥ मैं तरुणी तुम तरुण तन चुगुल चवाई गांव। सुरजी सैन बताइयो कबहुं हमारो नांव॥ २४॥ गणिका स्वधीनपतिका॥ सवैया॥ छाक छकी छतियां धरकैं दरकै अंगिया उचकें कुचनीके। त्यों पद्माकर छूटत बारहूं टूटत हार सिंगार जेहीके॥ संग तिहारे न भूलहुंगी फिर रंग हिंडोरे सुजीवन जीके। यों मिचकी मचकौ न हहा लचकै कटहा मचकै मिचकी के॥ २५॥ दोहा॥ या जगमें धनि धन्य तू सहज सलोने गात। धरनीधर जो बश कियो कहा और की बात॥ २६॥ अथ अभिसारि का लक्षणम्॥ दोहा॥ बोलि पठावै पियहिकै पियपै आपुहि जाय। ताही को अभिसारिका बरणत कवि समुदाय॥ २७॥ अथ मुग्धा अभिसारि-

का को उदाहरण॥ सवैया॥ किंकिनी छोरि छपाई कहूं कहूं बैजनी पायल पांयते नाई। त्यों पदमाकर पातज्ञ के खरकै कहूं कोपि उठै छबि छाई॥ लाजहि ते गड़िजात कहूं अड़ि जात कहूं गज की गति भाई। बैसकी थोरी किशोरी हरे हरे या बिधि नंद किशोर पै आई॥ २८॥ दोहा॥ केलि भवन नवबेलिसी दुलही उलहि इकन्त। बैठि रही चुप चन्द्र लखि तुमहिं बुलावत कन्त॥ २९॥ ॥ अथ मध्या अभिसारिका को उदाहरण॥ सवैया॥ झूलै दूतै परभैन महाउत लाज के आंकुर परे गथि पायन। त्यों पदमाकर कौन कहै गति माते मतंगनि की दुखदायन॥ ये अँग अंग की रोसनी में शुभ सों सनीचीर चुभ्यो चित चायन। जाति चली ब्रज ठाकुर पै ठमका ठुमकी ठमकी ठकुरायन॥ ३०॥ दोहा॥ इक पग धरति सुमन्द मग इक पग धरति अमन्द। चली जाति यहि बिधि सखा मन मन करत अनन्द॥ ३१॥ प्रौढ़ा अभिसारिका॥ ॥ सवैया॥ कौन है तू कित जाति चली बलि बीति निशा अधराति प्रमानैं। हौं पदमाकर भावति हौं निज भावते पै अबहीं सुहि जानैं॥ तौ अलबेली अकेली डरै किन क्यों डरौ मेरी सहाय के लानैं। है सखि संग मनों भव सों भट कानलों बाण शरासनतानैं॥ ३२॥ पुनर्यथा॥ कवित्त॥ घूंघुट की घूमि के सुभूम के जवाहिर के झिल मिल झालर को भूमिलौं झुलत जात। कहै पदमाकर सुधाकर मुखीके हीर हारन में तारन के तोमसे तुलत जात॥ मन्द मन्द मेकल मतंग लौं चलेई भले भुजन समेत भुज भूषण दुलत जात। घांघरै झकोरिन चहूंधा खोरखोरनमेंखूब खसबोइन के खजाने से खुलत जात॥ ३३॥ दोहा॥ पग दूपुर नूपुर सुभग जन अलापि सुरसात। पियसों तिय आगमन की कही सु अगमन बात॥ ३४॥ अथ परकिया अभिसारिका को उदाहरण॥ कवित्त॥ मौलसिरी मंजुन की गुंजन की कुंजन को मोसों घनश्याम कहि काम की कथैं गयो।

कहै पद्माकर अथाइन को तजि तजि गोप गण निजनिज गेह के पथै गयो॥ सोच मति कीजै ठकुरानी हम जानी-चितचञ्चल तिहारौ चढ़ि चाहिकै रथैगयो। छीनन छपाकर छपाकर मुखो तूंचलि बदन छपाकर छपाकर अथैगयो॥ ३५॥ दोहा॥ चली प्रीति बश मीतपैमीत चल्योतिय चाहि। भईभेंट अधबीच तहँ जहां न कोऊ आहि॥ ३६॥ अथ गणिका अभिसारिका को उदाहरण॥ सवैया॥ केसरि रंग रँगी सिर ओढ़नी कानन कीन्हें गुलाब कलीहौ। भाल गुलाल भर्यो पद्माकर अँगन भूषित भांति भलीहौ॥ औरन को छलती छिन में तुम जातिन औरन सों जुछलीहौ। फाग में मोहन को मनलै फगुवा में कहा अब लेन चलीहौ॥ ३७॥ दोहा॥ सही भांभ ते सुमुखि तू सजि सब साज समाज। को अस बड़भागी जु है चली मनावन काज॥ ३८॥ अथ दिवा अभिसारिका॥ कवित्त॥ दिन कै किवार खोलि कीनो अभिसार पै न जानिपरी काहू कहां जाति चली छलसी। कहै पद्माकर न नाकरी सकारै जाहि कांकरी पगनलगै पङ्कजकैदलसी॥ कामदसों कानन कपूर ऐसी धूरि लगै पदसों पहारनटीलागतहै नलसी। घाम चांदनी सों लगै चन्द्र सों लगत रविमग मखतूल सों महीहूं मखमल सी॥ ३९॥ दोहा॥ सजि सारँग सारँग नयनि सुनि सारँग बन मांह। भर दुपहर हरिपै चली निरख नेहकी छांह॥ ४०॥ अथ कृष्ण अभिसारिका को उदाहरण॥ सवैया॥ सांवरी सारी सखी संग सांवरी सांवरे धारि विभूषण ध्वैकै। त्यों पद्माकर सांवरेई अंग रागनि आंगीरची कुच ह्वैकै॥ सांवरी रैन में सांवरी पै घहरै घनघोर घटा छिति छ्वैकै। सांवरी प्रामरीकीदै खुही बलि सांवरे पै चली सांवरी ह्वैकै॥ ४१॥ दोहा॥ कारी निशिकारी घटाकचरति कारेनाग। कारे कान्हरपै चली अजब लगनको लाग॥ ४२॥ शुक्लअभिसारिका॥ कवित्त॥ सजि ब्रज चन्दपै चली यों मुख चन्द्र जाको चन्द्र चांदनी

को सुख मन्द सों करत जात। कहै पद्माकर त्यों सहज सुगन्ध ही के पुञ्ज बन कुंजन में कंज से भरतजात॥ धरत जहांई जहां पग है सु प्यारी तहां मंजुल मजीठही की माठ सी ढरत जात। हारन ते हीरे सेत सारी के किनारन तै वारन तैं सुकता हजारन झरत जात॥ ४३॥ दोहा॥ जुवति जुन्हाईसों न कछु और भेद अवरेखि। तिय आगम पिय जानिगौ चटक चांदनी पेखि॥ ४४॥ चलन चहै परदेश को जा तिय को जब कन्त। ताहि प्रवत्स्यत्प्रेयसी कहत सुकवि मतिमंत॥ ४६॥ अथ मुग्धा प्रवत्स्यत्पतिका उदाहरण॥ सवैया॥ सेज परी सफरी सी पलोटति ज्यों ज्यों घटा घनकी गरजैरी। त्यों पद्माकर लाजनि तैं नकहे दुलही हिय की हरजैरी॥ आली कछू को कछू उपचार करै पै न पाइसकै सरजैरी। जाहि न ऐसे समय मथुरै यह कोउन कान्हरको बरजैरी॥ ४६॥ दोहा॥ बोलत बोल नवली बिकल थरथरात सब गात। नव यौवन के आगमन सुनि पिय गमन प्रभात॥ ४७॥ अथ मध्या प्रवत्स्यत्प्रेयसी को उदाहरण॥ सवैया॥ गो गृह काज गुवालन के कहै देखिबे को कछू दूरिके खेरो। मांगि बिदा लये मोहिनी सों पद्माकर मोहन होत सबेरो॥ फेटगही न गही बहियां नगरौ गहि गोविन्दगौनते फेरौ। गोरी गुलाबके फूलनको गजरालै गोपालकी गैलमें गेरौ॥ ४८॥ दोहा॥ मुनि सखीन सुख शशिमुखी बलम जाहिंगे दूरि। बूझ्यो चहति वियोगिनी जिय ज्यावन की मूरि॥ ४९॥ प्रौढ़ा प्रवत्स्यत्पतिका॥ कवित्त॥ सौदिग को मारग तहां कौ बेगि मांगी बिदा प्यारी पद्माकर प्रभात राति बीते पर। सो सुनि पियारी पिय गमन बराइबे कौ आंसुन अन्हाइ बोली आसन सुतीते पर॥ बालम बिदेश तुम जातहौ तौ जाउ पर सांचो कहिजाउ कब ऐहौ भौन रीते पर। पहरके भीतरकै दोपहरभीतरहीं तीसरे पहर कैधों सांझहीं बितीतेपर॥५०॥ पुनर्यथा॥ सवैया॥ जातहैं तो अब

जान देरी छिनमें चलिबेकी न बात चलैहैं। त्यौं पदमाकर पौनके झूकन कैलिया कूकनि को सहि लैहैं॥ बेउ लहै बन बाग बिहार निहारि निहारि जबै अकुलैहैं। जैहैं न फेरि फिरै घरऐहैं सुगांव तै बाहेर पांव न दैहैं॥५१॥ दोहा॥ असन चले आंसू चले चले मैनके बाण। रसन गमन सुनि सुखचले चलत चलैंगे प्राण॥ ५२॥ अथ परकीया प्रवत्स्यत् प्रेयसी॥ सवैया॥ जो उरझान नहीं झरसी मृदु मालती माल बहै मगनाखै। नेहवती युवती पदमाकर पानी न पान कछू अभिलाखै॥ झांकि झरोखे रही कबकी दबकी दबकी सुमनै मनभाखै। कोउ न ऐसो हितू हमरो जु परोसिन के पिय को गहि राखै॥५३॥ दोहा॥ ननंद चाह सुनि चलन की बरजत क्यों न सुकंत। आवत बन बिरहीनको बैरी बधिक बसंत॥ ५४॥ गणिका प्रवत्स्यत्प्रेयसी॥ सवैया॥ आंखिनके अँसुवानिही सों निज धामहीं धाम धरा भरि जैहैं। त्यों पदमाकर धीर समीरन धीर धनी कहुं क्यों धरि जैहैं॥ जो तजि मोहिं चलोगे कहूं तो इती बिरहागिनियां अरि जैहैं। जैहैं कहां कछु रावरे को हमरे हियको तो हरा हरि जैहैं॥ ५५॥ दोहा॥ फबत फाग फजियत बड़ी चलन चहत यदुराय। को फिरि जाइ रिझाइबो धुनि धमारिकी गाय॥ ५६॥ आवत बलम बिदेशते हरषित हाव जु बाम। आगम पतिका नायका ताहि कहत रस धाम॥ ५७॥ सुग्धा आगत पतिका॥ कवित्त॥ कानि सुनि आयसु सुजान प्राण प्रीतमको आनि सखियान सजे सुन्दरिके आस पास। कहै पदमाकर सु पन्नन को फौज हरे ललित लवाब भरेहैं जल बांस बांस॥ गूंदि गैंदै गुलगंज गोहरन गज गुज गुपत गुलाबी गुल गजरे गुलाब पास। खासे खसबीजन सुखौन पौन खाने खुले खसके खजाने खसखाने खूब खस खास॥ ५८॥ दोहा॥ आवत लेन बिरागमन रमणि सुनत यह बानि। हरषि छपावन हित भटू रही पौढ़ि पट

तानि ॥ ५९ ॥ मध्या आगत पतिका ॥ सवैया ॥ नँदगांव ते आइगा नन्दलला लखि लाड़िलो ताहि रिझाय रही। मुखघूंघुट घालि सकै नहिं माइके माइके पीछे दुरायरही॥ उचके कुच कीरनकी पदमाकर कैसीकछू छबि छायरही। ललचाय रही सकुचाय रही शिर नाय रही मुसकाय रही ॥ ६० ॥ दोहा ॥ बिछुरि मिले पिय तीयको निरखत सुमुखि स्वरूप। कछु उराहनो देनको फरकत अधर अनूप ६१ ॥ प्रौढ़ा आगतपतिका ॥ कवित्त ॥ आजु दिन कान्ह आगमनके बँधाये सुनि छाये मग फलन सुहाये थल थलके। कहै पदमाकर त्यों आरती उतारिबे को थारनमें दीप-हार हारनके छलके ॥ कांचनके कलश भराये भरि पन्नन के ताने तुंग तोरन तहाईं झलाझलके। पौरके दुवारे ते लगाय केलि मन्दिर लौं पदमनि पांवड़े पसारे मखमलके ॥ ६२ ॥ दोहा ॥ आवत कन्त बिदेश ते हौं ठानत सुदमान। मान-भंगो अब करिहंगे न पुनि गमनको आन ॥ ६३ ॥ परकी-या आगत पतिका ॥ सवैया ॥ एकै चलैं रस गोरस लै अरु एकै चलैं मग फल बिकावत। त्यों पदमाकर गावत गीत सु एकै चलैं उर आनँद छावत ॥ यों नँदनंद निहारिबेको नँदगांवके लोग चलेसब धावत। आवतकान्हवने बन तेंअब प्राण परोसे परोसिनपावत ॥ ६४ ॥ दोहा ॥ रमनिरंगअै-रौ भयोगयो बिरहको शूल। आगो नैहरसो जोसुनि वहै बेद रसमूल ॥ ६५ ॥ गणिका आगतपतिका उदाहरण ॥ सवैया ॥आवत नाहउछाहभरेअवलोकिबे कोनिज नाटक शाला। हौं नचि गाय रिझावङ्गी पदमाकरत्योंरचि रूप रसाला ॥ ये शुकमेरे सुमेरे कहे योंदूते कहि बोलियो बैन बिशाला। कंतविदेशरहेहौ जितैदिनदेङ्गतितैमुक्तानिकी माला ॥६६॥ दोहा ॥ वे आयेल्याये कहायह देखनके काज। सखिन पढ़ावति शशिमुखी सजत आपनी साज ॥ ६७ ॥ बिबिध कही ये सब तिया प्रथम उत्तमा मानि। बहुरि मध्यमा दूसरी तीजी अधमा जानि ॥ ६८ ॥ अथ उत्तमा

को लक्षण ॥ दोहा ॥ सुपिय दोष लखि सुनि जुतिय धरै न हियमें रोष। ताहि उत्तमा कहत हैं सुकवि सबै निरदोष ॥ ६८ ॥ कवित्त ॥ पाती लिखी सुमुखी सुजान प्रिय गोविंद को श्रीयुत सलोने श्याम सुखनि सने रहौ। कहै पद्माकर तिहारो छेम छिन छिन चाहियतु प्यारे मन मुदित घने रहौ ॥ बिनती इती है कै हमेशह्न मुहैं तौ निज पायन की पूरी परिचारिका मते रहौ। याही में मगन मन मोहन हमारो मन लगनि लगाय लग मगन बने रहौ ॥ ७० ॥ दोहा ॥ धरतिन नाह गुनाह उर लोचन करति न लाल। तिय पियकी छतियां लगी बतियां करति बिशाल ॥ ७१ ॥ पिय गुनाह चित चाह लखि करै मान सनमान। ताही तियको मध्यमा भाषत सुकबि सुजान ॥ ७२ ॥ अथ मध्यमा को उदाहरण॥ कवित्त ॥ मंद मन्द उरपै अनन्दहीके आंसुन की बरसै रुबूंदै सुकतान हीके दानेसी। कहै पद्माकर प्रपंची पंच बाणन काननकी मान पै परी त्यों घोर घानेसी ॥ ताजी चिबलीन में बिराजी छबि छाजो सबै राजी रोम राजी करि अमित उठानेसी। सोहै पेख पीको बिहसोहै भये दोऊ दृग सोहैं सुनि भौंहैं गई उतरि कमानैसी ॥ ७३ ॥ पुनर्यथा ॥ कवित्त ॥ जाके मुख सामुहे भयोई जो चाहत सुख लीन्हों सो नवाइ डीठि मगन अवागिरी। बैन सुनिबे को अति व्याकुल छतेजे कान तेऊ मूंदि राखे मजा मनछ'न मांगीरी। भारी डारी पुलकि प्रसेदहूं निवारि डारो नेक रसनाहूं त्यों भरी न कछू हांगीरी। एते पै रह्यो ना प्राण मोहन लटू पै भटू टूक टूक ह्वै कै जो छटक भई आंगीरी ॥ ७४ ॥ दोहा ॥ रह्यो मान मनको मनोहं सुनत कान्ह के बैन। बरजि बरजि हारे तऊ रुके न गरजी नैन॥ ७५ ॥ अथ अधमा को लक्षण ॥ दोहा ॥ ज्योंही ज्यों पिय हित करत त्यों परति सरोस। ताहि कहत अधमा सुकवि निठुराई की कोस ॥ ७६ ॥ अथ अधमा को उदाहरण ॥ सवैया ॥

सवैया ॥ ह्वै उरझाय रिझायबे कोरसरागकवित्तनकी धुनि छाई। त्यों पदमाकर साहसकै कबहूंन बिषाद की बात सुनाई ॥ सपनेहू कियोनकछू अपराध सुआपने हाथन सेज बिछाई। प्यौ परि पांय मनाय जऊ तऊ पापिनि को कछु पीर न आई ॥ ७७ ॥ दोहा ॥ मान ठानि बैठी इतौ सुबस नाह निज हेरि। कबहूं जु परबश होहि तो कहा करैगी फेरि ॥ ७८ ॥ इति नायका निरूपण ॥ अथ नायक निरूप्यते ॥ दोहा ॥ सुन्दर गुण मन्दिर युवा युवति बिलोकै जाहि। कवितारांग रसज्ञजो नायक कहिये ताहि ॥ ७९ ॥ अथ नायक लक्षण ॥ कवित्त ॥ जगत बसीकरन हो हरण गोपिन को तरुण चिलोक में न तैसी सुन्दराई है। कहै पदमाकर कलानि को कदम्ब अवलंबनि सिंगारको सुजान सुखदाई है ॥ रसिक शिरोमणि सुराग रतनागर है शील गुण आगर उजागार बड़ाई है। ठौर ठकुराई कोजु ठाकुर ठसकदार नन्दके कन्हाई सोसुनंदकेकन्हाई है॥ ८०॥दोहा॥दौरेकौन बिलोकिबोरसिक रूपअभिराम। सब सुखदायकसांचहूं लखिबे लायक श्याम॥८१ ॥ दोहा ॥ नायक के भेद ॥ दोहा ॥ त्रिविध सुनायक पति प्रथम उपपति वासक और। जो बिधि सौ व्याह्यौ तियन सोई पति सब ठौर ॥ ८२ ॥ पति को उदाहरण ॥ सवैया ॥ मंडपही में फिरै मड़रात नजात कहूं तजि नेहकी औनौ। त्यों पदमाकर ताहि सराहत बात कहै जु कछू कऊं कौनौ ॥ ये बड़ भागिनी तोसे तुहीं बलिजो लखि रावरो रूप सलौनौ। ब्याहही तें भये कान्ह लटू तब ह्वै है कहा जब होहिगो गौनौ ॥ ८३ ॥ दोहा ॥ आई चालि सु शशि-मुखी नख सिख रूप अपार। दिन २ तिय यौबन बढ़त छिन छिन तियको प्यार ॥ ८४ ॥ सु अनकूल दच्छिण बऊरि सट अरु धृष्ट बिचार। कहै कविन पति एक के भेद पेखिकै चार ॥ ८५ ॥ जो पर बनिता तें बिमुख सानुकूल सुखदानि। जु बऊ तियन को सुखद समसो दच्छिण गुणखानि॥

८६॥ अनुकूल को उदाहरण॥ सवैया॥ एकही सेजपै सोवत हैं पद्माकर दोऊ महा सुख साने। सापने में तिय मान कियो यह देखि पिया अतिही अकुलाने॥ जागि परे पै तऊ यह जानत पौढ़ि रही हम सों रिस ठाने। प्राण पियारी के पां परिके करि सौंह गरेकी गरे लपटाने॥ ८७॥ दोहा॥ मन मोहन तन घन सघन रमण राधिका मोर। श्री राधा मुखचंद्रको गोकुल चन्द्र चकोर॥ ८८॥ अथ दक्षिण को उदाहरण॥ कवित्त॥ देखि पद्माकर गोबिन्द को अनन्द भरी आई सजि सांझही है हरष हिलोरै में। ये हरि हमारेई हमारे चलो झूलन को हेम के हिंडोरन झुलान के झकोरे में॥ या बिधि बधून को सुबैन सुन बनमाली मृदु मुसुक्याइ कह्यो नेह को निहोरे में। कालिह चलि झूलैंगे तिहारेई तिहारी सौंह आजु तुम झूलौ हौं हमारेई हिंडोरे में॥ ८९॥ दोहा॥ निज निज मनके चुनि सबै फूल लेऊ इक बार। यह कहि कान्ह कदंब की हरष हलाई डार॥ ९०॥ धरै लाज उरमें न कछु करै दोष निरशंक। टरै न टारोकैसहूं कह्यो धृष्टि सकलंक॥ ९१॥ अथ धृष्ट को उदाहरण॥ सवैया॥ टानै मजा अपने मनकी उर आनै न रोषऊ दोषदिये को। त्यौं पद्माकर यौबन के मद पै मद है मधु पानपिये को॥ राति कहूं रमि आयो घरै उरमानै नहीं अपराध किये को। गारिदै मारिदै टारत भावती भावतो होत है हार हिये को॥ ९२॥ यदपि न बैन उचारियतु गहि निवाहियतु बांह। तदपि गरेई परत है गजब गुनाही नांह॥ ९३॥ सहित काज मधुरै मधुर बैननि कहै बनाय। उर अंतर घट कपट मय सो शठ नायक आय॥ ९४॥ शठ को उदाहरण॥ सवैया॥ करिकंद को मंद दुचंद भई फिरि दाखन के उरदागती है। पद्माकर स्वादु सुधातें सिरैं मधुते महा माधुरी जागती है॥ गनती कड़ा येरी अनारन कीये अँगूरन तें अति पागती है। तुम बातनि सीटी कहौ

रिस में मिसरी तें मीठी हमैं लागती है॥ ९५॥ दोहा॥ हौंन कियो अपराध बलि दृथा तानियत भौंह। तुम उर सिज हर परसि कै करत रावरी सौंह॥ ९६॥ उपपति ताहिबखानहो जु परबधू को मीत। बार बधुन को रसिक सो बैसिक अलज अभीत॥ ९७॥ अथ उपपति को उदाहरण॥ सवैया॥ आछे किये कुच कांचुकी में घटमें नट कैसे बटा करिबे को। मो दृग दूपै किये पदमाकर तो दृग छूट छटा करिबे को॥ कीजै कहा बिधिकी बिधि को दियो दारुण लौट पटा करिबे को। मेरो हियो कटिबे को कियो तिय तेरो कटाच्छ कटा करिबे को॥ ९८॥ पुनर्यथा॥ सवैया॥ ऐसे कढ़े गन गोपिन के तन मानो मनो भव भाइसे काढ़े। कहै पदमाकर खालनके डफबाजि उठे गल गाजत गाढ़े॥ छाक छके छलछाइन में छिकपावै न छैल छिनौ छबि बाढ़े। केसरिलौ सुख मीजिबेकोरस भीजत सेकर मीजत ठाढ़े॥ ९९॥ दोहा॥ जाहिर जाइ न सकै तहंधरहायन के चास। परे रहत नित कान्ह के प्राण परोसिन पास। १००। बैसिक को उदाहरण॥ सवैया छोरत ही जु छरा के छिनौ छिन छाये तहाइ उमंग अदाके। त्यों पदमाकर जेमिसकीनके सोरघनै सुख मोरि मजा के॥ दैधन धाम धनी अबते मनही मनमानि समान सुधाके। बार बिलासिन तीके जपे अखरा अखरा न खरा अखरा के॥ १॥ दोहा॥ हेरिहि हरन कांतिवह सुनिसी करति सुभांति। दियो सौंपि मन ताहि तौधन की कहा बिसांति॥ २॥ औरौ तीन प्रकार के नायक भेद बखान। मानी सुबसन चतुर पुनि क्रिया चतुर पहिचान॥ ३। करै जु तिय पै मान पिय मानी कहिये ताहि। करै वचन की चातुरी बचन चतुरसो आहि॥ ४॥ करैक्रिया सों चातुरी क्रिया चतुर सो जान। इनके उदित उदाहरण क्रमते कहत बखान॥ ५॥ मानी को उदाहरण॥ सवैया॥ बाल बिहाल परी कबकी दब की यह प्रीति कीरीति निहा-

रो। त्यों पदमाकर है न तुम्हें सुधि कीनौ जोबैरी बसंतव-
गारो॥ताते मिलो मनभावतीसों बलि ह्यांतेहहा बचमा-
न हमारो। कोकिल की कल बानि सुने पुनि मान रहैगौ
न कान्ह तिहारो॥ ६॥ दोहा॥ जगत जुराफ़ा ह्वै जियत
तज्यौ तेज निज भान। रूसि रहे तुम पूस में है यह कौन
सयान॥ ७॥ संयुत सुमन सुबेलि सी सेलीसी गुण ग्राम।
लसत हवेली सीसु धर निरखि नवेलीबाम॥ ८॥ बचन च-
तुर के उदाहरण॥ सवैया॥ दाऊ ननंद बबान यशोमति
न्योते गये कहूं लै संग भारी। हौंहूं इके पदमाकर पौरि
में सूनी परी बखरी निशि कारी॥ देखे न क्यों कढ़ि तेरे
सुखेत पै धाइ गई छुटि गाय हमारी। ग्वाल सों बोलि
गोपाल कह्यो सुगवालिनि पै मनमोहनी डारी॥९॥दोहा
बिजन बाग सकरी गली भयो अंधेरी आय। कोऊ तोहिं
गहै जो इततौ फिरि कहा बसाय॥१०॥ क्रिया चतुर को
उदाहरण॥ सवैया॥ आइ सुन्योति बुलाई भलो दिन चा-
रिको जाहि गोपाल ही भावै। त्यौंपदमाकरकाहू कह्यो
कै चलो बलि बेगिही सासु बुलावै॥ सोसुनि रोकि सकैक्यों
तहां गुरु लोगनसे यह व्योंत बनावै। पाऊनी चाहैं चल्यो
जबहीं तबहीं हरि सासुहिं छींकत आवै॥ ११॥ दोहा॥
जल बिहार मिस भीर में लै चुभकी इकबार। दह भीतर
मिलि परसपर दीऊ करत बिहार॥ १२॥ व्याकुल होइ
जो बिरह बश बसि विदेश में कंत। ताही सों प्रोषित क-
हत जे कोविद बुधि वंत॥ १३॥ प्रोषित का उदाहरण॥
कवित्त॥ सांझ के सलोने घन सबज सुरंगन सों कैसे तो अ-
नंग अंग अंगनि सता वतौ। कहैपदमाकर झकोर झिल्ली
सोरन को मोरन को महतन कोऊ मन ल्यावतौ॥ काहू
बिरही की कही मानि ले तौ जोपै दई जगमें दई तौ
दया सागर कहावतौ। येरी विधि बौरी गुणसार घनो
होतो जो पै बिरह बनायौ तौन पावस बनावतौ॥ १४॥
दोहा॥ तजिबिदेश सजि वैसही निज निकेतमेंजाय। कब

समेटि भुज भेटवी भामिनि हियेलगाय ॥१५॥ फिरिफिरि सोचति पथिक यह मेरो निरखि सनेह। तज्यो गेह निज गेह प्रति त्योंन तजै कहं देह ॥ १६ ॥ विकल बटोही विरह बस यहैरहौ चित चाह। मिलै जु कछुं पारसपरौ सुरकि मिलौं तौ ताहि ॥ १७ ॥ बूझै जोन तियान के ठानै बिविध बिलास। सुअनभिज्ञ नायक कह्यो वहै नायका भास ॥ ॥ १८ ॥ अनभिज्ञ नायका ॥ कवित्त ॥ नैननही सैन करै बीरी मुख दैन करै लैन करै चुंबन पसारि प्रेम पाता है। कहै पद्माकर त्यों चातुरी चरित्र करै चिचकरै सोहेजो बिचित्र रति राताहै ॥ हाव करै भाव करै बिविध बिभाव करै बूझौ पैान एते पै अबूझनको भ्राताहै। ऐसी परवीनको कियो जोयह पुरुष तौ बीस बिसै जानी महा मूरखबिधाताहै ॥ १९ ॥ दोहा ॥ करि उपाय हारीजु मैं सनमुख सैन बनाय। समुझत प्यौ नदूतेऊपै कहा कीजियतु हाय ॥ २० ॥ जाहि जबहि आलंबिकै उर उपजत रसभाव। आलंबन सुविभाव कहि वरणत सब कविराव ॥ २१ ॥ आलंबन शृंगारके कहेभेदसमुझाय। सकल नायका नायकऊलक्षण लक्षि बनाय ॥ २२ ॥ बरणत आलंबनहिमैं दरशन चारि प्रकार। श्रवण चित्रशुभ स्वप्नमें पुनिपरतच्छ निहार ॥ २३ ॥ इन चारिऊ दरशननके लक्षण नाम प्रमान। तिनके कहत उदाहरण समझऊ सबैसुजान ॥ २४ ॥ श्रवण दर्शन ॥ सवैया ॥ राधिका सों कहि आई जुतूं सखि सांवरे की मृदु मूरति जैसी। ताछिन ते पद्माकर ताहि सुहात कछून विसूरति वैसी ॥ मानऊ नीर भरी घन की घटा आंखिन में रही आनि उनैसी। ऐसी भई सुनि कान्ह कथा जु विलोकहि गी तब होइगी कैसी ॥ २५ ॥ दोहा ॥ सुनत कहानी कान्ह की तीय तजी कुलकान। मिलन काज लागी करन दूतिन सों पहिचान ॥ २६ ॥ अथचित्रदर्शन ॥ सवैया ॥ चित्रके मंदिर ते इक सुंदरीक्यों निकसी जिन्ह नेहनसाहै। त्यों पद्माकरखोलि रही दृगबोलै नबोल अडोल दशाहै ॥ भृंगीप्र-

संगतै भंगहोइहोत जुपै जगमें जड़कीट महाहै। मोहनमीत कोचित्र लिखे भई चित्रही सो तौचित्र कहा है॥ २७॥ दोहा॥ हरषि उठति फिर फिर परखि फिर परखति चखलाय। मिच चित्र पट कोतिया उर सों लेतिलगाय॥२८॥ अथ स्वप्न दर्शन॥ सवैया॥ सनै संकेतमें सोंधे सनी सपनेमें नईदुलही तुमिलाई। हौंहूं गही पदमाकर दौरि सों भौंह मरोरति सेजलों आई॥ यामनकी मनही में रहीजु समेटि तियालै हियासों लगाई। आँखें गईं खुलि सीवी सुनै सखी हाहूमैं नीवी न खोलन पाई॥२९॥दोहा॥ सुंदरि सपने में लख्यौ निशि में नंदकिशोर। होत भोर लै दधि चली पूछत सकरीखोर॥ ३०॥ प्रत्यक्ष दर्शन को उदाहरण॥ सवैया॥ आई भलेहो चली सखियान में पाई गोविंद कि रूपकि झांकी। त्यों पदमाकर हार दियो गृह काज कहा अरु लाज कहांकी॥ हैनखतै सिख लौं मृदुमाधुरीबांकियै भौंहैंविलोकनि बांकी॥३१दोहा॥ हौं लखि आई लखऊगी लखैन क्योंब्रज लोग। निशिदिन सांचऊ सांवरो दुगुन हेखिबे योग॥३२॥ इति श्रीकूर्मवंशावतंसश्रीमन्महाराजाधिराजराजराजेन्द्र श्रीसवाईमहाराज जगतसिंहाज्ञया मथुरास्थाने मोहनलालभट्टात्मज कविपदमाकर विरचित जगद्विनोद नामकाव्ये शृंगार रसालंबन विभाव प्रकरणम्॥ १॥

अथउद्दीपनविभावलक्षण॥ दोहा॥ जिनहिं विलोकत होतुरत रस उद्दीपन होत। उद्दीपन सु विभाव है कहत कविनको गोत॥ १॥ सखा सखी दूती सुबन उपबन षटऋतु पौन। उद्दीपनहि बिभाव में बरणत कविमति भौन॥ २॥ चन्द चांदनी चन्दनऊ पुञ्जप पराग समेत। योहीं और सिंगार सब उद्दीपनके हेत॥ ३॥ कहे जु नायकके सबै प्रथमहिबिबिध प्रकार। अबबरणत हौंतिनहिंके सचिवसखा जेचार॥४॥ पीठ मर्द बिट चेठ पुनि बन्दरि बिदूषक होइ। सोचै मान तियान को पीठ मर्द है सोइ॥ ५॥ पीठ मर्दको

उदाहरण ॥ कवित्त ॥ घूमि देखौ धरकि धमारन की धूम देखौ भूमि देखौ भूमित छवावै छबी छबिकै। कहै पद्माकर उमंग रंग सींचिदेखौ केसरि की कीच जो रच्यो मैं ग्वाल गबिकै॥ उड़त गुलाल देखौ तानन के ताल देखौ नाचत गोपाल देखौ लैहौ कहा दबिकै। झेलि देखौ झकि सकेलि देखौ ऐसो सुख मेलि देखौ मूठि खेलि देखौ फाग फबिकै॥६॥ दोहा॥ हौं गोपाल पै भल चहत तेरोई ब्रजबाल। चलति क्यों न नँदलाल पै लै गुलाल रँग लाल॥ ७॥ सुबिट बखानत है सुकवि चातुर सबल कलान। दुहुन मिलावै में चतुर वहै चेट उर आन॥ ८॥ बिटको उदाहरण॥ सवैया॥ पीत पटी लकुटी पद्माकर मोरपखा लै कह्नं गहि नाखी। यों लखि हाल गुवालको ता छिन बाल सखा सुकला अभिलाखी॥ कोकिल कोकिल कैसो कुहू कुहू कोमल कोक की कारिका भाखी। रूसि रही ब्रजबालके सामुहे आइ रसालकी मञ्जरी राखी॥९॥ दोहा॥ हरिको मीत पछीत इमि गायो बिरह बलाय। परत कान्ह तजि मान तिय मिली कान्ह सों जाय॥ १०॥ अथ चेटक को उदाहरण॥ सवैया॥ साजि सँकेतमें सांवरे को सु गयोईजहां झुती ग्वालि सयानी। त्यों पद्माकर बोलि कह्यो बलि बैठी कहां इतही अकुलानी॥ तौलौं न जाइ तहां पहिरै किन जौलौं रिसात न सासु ज्यठानी। हौं लखि आयो निकुंजही में परी कालिह जु रावरी माल हिरानी॥ ११॥ दोहा॥ उतन ग्वालि तू कित चली येउ नये घन घोर। हौं आयो लखि तुव घरै पैठत कारो चोर॥ १२॥ खांग ठानि ठानै जु कछु हांसी बचनबिनोद। कह्यो बिदूषक सो सखा कविन मान मद मोद॥ १३॥ अथ बिदूषक को उदाहरण॥ सवैया॥ फाग के द्योस गोपालन ग्वालिनी कै इक ठानि कियो मिसिकाऊ। त्योंपद्माकर झोरि झमाई सु दौरी सबै हरि पै इक हाऊ॥ ऐसे समै वहै भीत बिनोदी सु नेसुक नैन किये डरपाऊ। लै हर मू-

सर जसर ह्वै कहूं आयो तहां बनिकै बलदाऊ ॥ १४ ॥ दोहा ॥ कटि हलाय हलकाय कछु अद्भुत ख्याल बनाय। अस को जाहि न फाग में परगट दियो हँसाय ॥ १५ ॥ इति सखा ॥ अथ सखी ॥ दोहा ॥ जिनसों नायक नायका राखै कछु न दुराव। सखी कहावैं ते सुघर सांची सरल सुभाव ॥ १६ ॥ काज सखिनके चारि ये मंडन शिक्षा दान। उपालंभ परिहास पुनि बरणत सुकवि सुजान ॥ १७ ॥ मंडन तियहि सिंगारिबो शिक्षा बिनय बिलास। उपालंभ सो उरहनों हँसी करब परिहास ॥ १८॥ मंडनको उदाहरण ॥ सवैया ॥ मांग सवांरि सिंगारि सुवारनि बेनी गुही जु छुवानि लों छावै। त्यों पद्माकर या बिधि औरहू साजि सिंगार जु श्यामको भावै ॥ रीझै सखी लखि राधिका को रँग जा अँग जो गहिनो पहिरावै। होत यों भूषित भूषण गात ज्यों डाकत ज्योति जवाहिर पावै ॥ १९॥ दोहा ॥ कहा करौं जो आंगुरिन अनी घनी चुभि जाय। अनियारे चख लखि सखी कजरा देत डराय ॥ २० ॥ अथ शिक्षा ॥ सवैया ॥ झांकति है का झरोखा लगीलग लागिबे को इहां झेल नहीं फिर। त्यों पद्माकर तीखे कटाच्छनकी सर कौसर सेल नहीं फिर ॥ नयनहीं की चला चलकै घन घावन को कछु तेल नहीं फिर। प्रीति पयोनिधि में घुसि कै हँसि कै कढ़िबो हंसि खेल नहीं फिर ॥ २१ ॥ दोहा ॥ बहत लाजबूड़त सुमन भ्रमत नैन तेहि ठांव। नेह नदी की धारमें तून दीजिये पांव ॥२२॥अथ उपालम्भन ॥ कवित्त ॥ ब्रज बहि जाय न कहूं यों आई आंखिन ते उमंगि अनोखी घटा बर्षति नेहकी। कहै पद्माकर चलावै खान पान की को प्राणन परीहै आनि दहसति देहकी ॥ चाहिये न ऐसी दृषभान की किशोरी तोहिं आइ दै दगा जो ठीक ठोकर सनेहकी। गोकुल की कुलकी न गैलकी गोपाली सुधि गोरस की रसकी न गौवन न गेहकी ॥ २३ ॥ दोहा ॥ कौन भांति आये निरखि तुम तहं नंदकिशोर।

भर भराति भामिनि परी घन घराति घन घोर॥ २४॥ अथ परिहास उदाहरण॥ सवैया॥ आई भले दुत चाल तूं चातुर आतुर मोहन के मन भाई। सौतिन के सर को पदमाकर पाइ कहांव दूती चतुराई॥ मैंन सिखाई सिखाई समै नहिं यों कहि रैन की बात जताई। ऊपर ग्वालि गोपाल तरै सुहरे हँसि यों तसवीर दिखाई॥ २५॥ दोहा॥ को तेरो यह सांवरो यों बूझ्यो सखिआइ। सुखते कही न बात कछु रही सुमुखि सुख नाय॥ २६॥ अथ दूती लक्षण॥ दोहा॥ दूतपने मेंहीं सदा जो तिय परम प्रवीन। उत्तम मध्यम अधम हैं सो दूती बिधि तीन॥ २७॥ हरे शोच उचरै बचन मधुर मधुर हित मानि। सो उत्तम दूती कही रस ग्रंथन में जानि॥ २८॥ अथ उत्तमा दूती को उदाहरण॥ कवित्त॥ गोकुल की गलिन गलिन यह फैली बात कान्हे नन्दरानी वृषभान भौन ब्याहती। कहै पदमाकर यहांई त्यों तिहारो चलै ब्याह को चलन वहै सांवरो सराहती॥ शोचति कहाहौ कहा करि हैं बवाइन ये आनँद की अवलीन कहा अवगाहती। प्यारौ उपपति तै सुहोत अनुकूल तुम प्यारी परकीया तें सकीया होन चाहती॥ २९॥ दोहा॥ कालिह कलिन्दी के निकट निरखि रहे हौ जाहि। आई खेलन फाग वह तुमहीं सों चित चाहि॥ ३०॥ कछुक मधुर कछु कछु परुषु कहै बचन जो आय। ताही को कवि कहत हैं मध्यम दूती गाय॥ ३१॥ अथ मध्यम दूतीको उदाहरण॥सवैया॥ बैन सुधाके सुधासी हँसी बसुधामें सुधाकी सटा करतीहै। त्यों पदमाकर बारहि बार सुबार बगारि घटा करतीहै॥ बीर बिचारे बटोहिन पै इक काजही तौ यों लटा करती है। बिज्जु छटासी अटापै चढ़ी सु कटाच्छनि घालि कटा करतो है॥ दोहा॥ कुंज भवन लौं भावते कैसे सुकहि सु आय। जावक रंग भारनि भटू मगमें धरति न पांय॥ ३३॥ कै पियसों कै तियहिसों कहै पुरुषही बैन। अधम दूतिका

कहतहैं ताकी सोभति ऐन ॥ ३४॥ अथ मध्यमाको उदाहरण ॥ सवैया ॥ऐहै न फेर गई जोनिशा तन यौवनहै घनकी परछांहीं। त्यों पदमाकर क्यों न मिलै उठि यों निबहैगो न नेह सदाहीं॥ कौनसयानि जोकान्ह सुजान सों ठानि गुमानरही मनमाहीं। एकै जुकंज कलीन खिली तोकहो कहूं भौर को ठौर है नाहीं॥ ३५ ॥ दोहा ॥ कैगुमान गुण रूपके तैनठान गुन मान। मन मोहन चित चढ़ि रही तोसी कितीन आन ॥ ३६ ॥ है दूती के काज ये बिरह निवेदन एक। संवट्टन दूजो कह्यो सुकविन सहित बिबेक ॥ ३७ ॥ बिरह व्यथानि सुनाय कै बिरह निवेदन जानि। दोउन को जु मिलायबो सो संवट्टन मानि ॥ ३८ ॥ अथ बिरह निवेदन को उदाहरण ॥ कवित्त ॥ आई तजि हौं तो ताहि तरनि तनूजा तीर ताकि ताकि तारापति तरफति तातीसी। कहै पदमाकर घरीकहीमेंघनश्याम काम तौक तलवाज कुंजन ह्वै कातीसी॥ याही छिन वाही सों न मोहन मिलौगे जोपै लगनि लगाई एती अगिनि अवातीसी। रावरी दुहाई तो बुझाई न बुझैगी फेर नेह भरी नागरी को देह दिया बातासो ॥ ३९ ॥ दोहा ॥ को जिवावतो आजु लों बाढ़े बिरह बलाय। होति जु पैन नहाइसी ताकी तनक सहाय ॥ ४० ॥ उदाहरण ॥ कवित्त॥ तासंनकी गिलमें गलीचा मखतूलन के भरपै झुमाऊ रही झूमि रंग द्वारीमें। कहै पदमाकर सुदीपमणि मालिनि की लालन की सेज फूल जालन समारी में ॥ जैसे तैसे नित कुल बल सों छबीली वह छिनक छबीले को मिलाय दई प्यारी में। छूटि भाजी करतें सु करके बिचिच गति चिच कैसी पूतरी न पाई चिचसारी में ॥ ४१ ॥ दोहा ॥ गौरी को जु गोपाल को होरीके मिस ल्याय। बिजन सांकरी खोरिमें दोऊ दिये मिलाय ॥ ४२ ॥ आपुहि अपनो दूतपन करै जु अपने काज। ताहि स्वयंदूती कहत ग्रन्थन में कविराज ॥ ४३ ॥ अथ स्वयंदूति का का उदाहरण ॥

सवैया ॥ रूषि कहूं कढ़ि माली गयो गई ताहि मनावन सासु उताली। त्यों पदमाकर न्हान नदी जेउतीं सजनी सँग नाचन वाली ॥ मंजु महा छविकी कवकी यह नीकी निकुंज परी सब खाली। हौं इह बागकी मालिन हौं इत आय भले तुमहौ बनमाली ॥ ४४ ॥ दोहा ॥ मोही सों किन भेट ले जौलौ मिलै न बाम। शीत भीत तेरो हियो मेरो हियो हमाम ॥ ४५ ॥ षट् ऋतु वर्णन बसंत ॥ कवित्त ॥ कूलन में केलिमें कछारनमें कुंजनमें क्यारिनमें कलिन कलीन किलकंत हैं। कहै पदमाकर परागनमें पानहूंमें पानन में पीकमें पलासन पगंत हैं ॥ हारमें दिशानमें दुनोमें देश देशनमें देखो दीप दीपनमें दीपत दिगंत हैं। बीथिन में ब्रजमें नवेलिनमें बेलिनमें बननमें बागनमें बगरो बसन्त हैं ॥ ४६ ॥ कवित्त ॥ और भांति कुंजनमें गुंजरत भौंर भीर और डौर भौंरन में बौरन के ह्वै गये। कहै पदमाकर सु और भांति गलियान छलिया छबीले छैल और छबि छ्वै गये ॥ और भांति विहंग समाजमें अवाज होत ऐसो ऋतु राजके न आज दिन द्वै गये। और रस और रीति और राग और रंग और तन और मन और बन ह्वैगये ॥ ४७ ॥ कवित्त ॥ पात बिन कीन्हें ऐसी भांति गन बेलिन के परत न चीन्हें जे ये लरजत लुंजहैं। कहै पदमाकर बिसासी या बसन्तके सु ऐसे उतपात गात गोपिनके भुंजहैं ॥ ऊधौ यह सूधौ सो सँदेशो कहि दीजो भले हरिसों हमारो ह्यां न फूले बन कुंजहैं। किंशुक गुलाब कचनार औ अनारन की डारन पै डोलत अँगारनके पुंजहैं ॥ ४८ ॥ सवैया ॥ ये ब्रज चन्द चलो किन वा ब्रज लूकैं बसन्तकी ऊकन लागी। त्यों पदमाकर पेखो पलासन पावक सी मानों फूकन लागी ॥ वै ब्रज बारी बिचारी बधू बनवारी पियेलौं हूकन लागी। कारी कुरूप कसाइनै पै सु कुहूं कुहू कोलिया कूकन लागो ॥ ४९ ॥ अथ ग्रीष्म ॥ कवित्त ॥ फहरै फुहार नीर नहर नदीसी बहै छहरै छबीन छाम छीटिन की छाटीहै। कहै

पदमाकर त्यों जेठकी जलाकैं तहां पावैं क्यों प्रवेश बेस बेलिन की बाटी है॥ बारह्व दरीन बीच चारह्व तरफ तैसो बरफ बिछाइ तापै शीतल सुपाठी है। गजक अँगूर की अँगूर से उचोहै कुच आसव अंगूरको अंगूरही की टाटीहै॥ ५०॥ अथ वर्षा॥ कवित्त॥ मल्लिकन मंजुल मलिन्द मतवारे मिले मन्द मन्द मारुत सुहीम मनसा की है। कहै पदमाकर त्यों नदन नदीन तित नागर नवेलिनकी नजर निशाकी है॥ दौरत दरेरो देत दादुर सुदूंदै दीह दामिनी दमंकनि दिशानिमें दसाकी है। बहलनि बुन्दनि विलोको बगुलान बाग बँगला नवेलिन बहार बरषाकी है॥ ५१॥ कवित्त॥ चंचला चमाकैं चहूं ओरन ते चाह भरी चरज गईती फेर चरजन लागीरी। कहै पदमाकर लवंगन की लोनी लता लरज गईती फेर लरजन लागीरी॥ कैसे धरों धीर बीर बिबिध समीरै तन तरज गईती फेर तरजन लागीरी। घुमड़ घमंड घटा घनकी घनेरी अबै गरज गईती फेर गरजन लागीरी॥ ५२॥ कवित्त॥ बरषत मेह नेह सरसत अंग अंग झरसत देह जैसे जरत जवासोहै। कहै पदमाकर कलिन्दीके कदम्बन पै मधुप न कीन्हों आइ मरुतम बासो है॥ ऊधो यह ऊधम जताइ दीजो मोहन को ब्रजसो सुवासो भयो अगिन अवासो है। पातिकी पपीहा जलपान कौन प्यासो कहा व्यथित वियोगिनि के प्राणन को प्यासो है॥ ५३॥ शरद॥ कवित्त॥ तालन पै ताल पै तमालन पै मालन पै वृन्दाबन बीथिन बहार बंशीबट पै। कहै पदमाकर अखंड रासमण्डल पै मण्डित उमड़ि महा कालिन्दीके तट पै॥ छिति परछान पर छाजत छतानपर ललित लतान पर लाड़िलीके लट पै। आई भले छाई यह शरद जुन्हाई जिहि पाई छबि आजुहि कन्हाईके मुकुट पै॥ ५४॥ कवित्त॥ खनक चुरीन की त्यों ठनक मृदंगनकी रुनुक झुनुक सुर नूपुर के जालको। कहै पदमाकर त्यों बांसुरी की धुनि मिलि रच्यो बांधि सरस सनाको एक

तालको॥ देखते बनत पै न कहत बनैरी कछु बिबिध बिलास यों झलास इक ख्यालको। चन्द छबि राशि चांदनी को परकाश राधिका को मन्द हास रासमण्डल गोपाल को॥ ५५॥ हेमन्त॥ अगरकी धूप मृग मदकी सुगंध वर बसन बिशाल जाल अंग ढांकियतु है। कहै पदमाकर सु पौनको न गौन जहां ऐसे भौन उमँगि उमंगि छाकियतु है॥ भोग औ सँयोग हित सुरित हिमन्तही में एते और सुखद सुहाय बाकियतु है। तानकी तरंग तरुणापन तरणि तेज तेल तूल तरुणि तमाल ताकियतु है॥ ५६॥ कवित्त॥ गुलगुली गिलमें गलीचा हैं गुणीजनहैं चांदनी हैं चिकहैं चिरागनको माला हैं। कहै पदमाकर त्यों गजक गिजाहैं सजी सेजहैं सुराहीहैं सुराहै और प्याला हैं॥ शिशिरके पालाको न व्यापत कसाला तिन्हैं जिनके अधीन एते उदित मसाला हैं। तान तुकताला हैं बिनोद के रसाला हैं सुबाला हैं दुशाला हैं बिशाला चित्रशाला हैं॥ ५७॥ इतिश्री कूर्मवंशावतंस श्रीमन्महाराजा धिराज राजेन्द्र श्रीसवाई महाराज जगतसिंहाज्ञया कविपदमाकर विरचित जगद्विनोदनामकाव्ये आलंबन विभाव प्रकरणम्॥ २॥

अथ अनुभाव॥ दोहा॥ जिनहीं ते रति भाव को चित में अनुभव होत। ते अनुभव शृंगारके बरणत हैं कवि गोत॥ १॥ सात्विक भाव स्वभाव धृति आनँद अंग बिकास। इनहीं ते रति भाव को परगट होत बिलास॥ २॥ अथ अनुभव को उदाहरण॥ कवित्त॥ गोरस को लूटिबो न छूटिबो छराको गनै टूटिबो गनै न कछू मोतिन के माल को। कहै पदमाकर गुवालिनि गुनीली हेरि हरषै हसैं यों करै झूठो झूठे ख्याल को॥ हां करति ना करति नेह की निशा करति सांकरी गलीमें रंग राखति रसालको। दीबो दधिदान को सुकैसे ताहि भावतहैजाहि मनभायो झार झगरो गोपाल को॥ ३॥ दोहा॥ मृदु मुसकाय

उठाय भुज छण घूंघुट उलटारि। को धनि ऐसी आहि तू इकटक रही निहारि॥ ४॥ स्तम्भ स्वेद रोमांच कहि बरुरि कहत स्वरभंग। कम्प बरण वैवर्न्य पुनि आंसू प्रलय प्रसंग॥ ५॥ अन्तरगत अनुमानमें आठउ सात्विक भाय। जम्भा नवम बखानहीं जे कबीन के राय॥ ६॥ हरष लाज भय आदि ते जबै अंग थकिजात। स्तम्भ कहत तासों सबै रसग्रंथनि सरसात॥ ७॥ अथ स्तम्भ॥ सवैया॥ या अनुराग की फाग लखौ जहँ रागती राग किशोर किशोरी। त्यों पदमाकर घाली घली फिर लालही लाल गुलाल की झोरी॥ जैसीकी तैसी रही पिचकी कर काहू न केसरि रंगमें बोरी। गोरिन के रँग भीजगो सांवरो सांवरेके रंग भीजी सु गोरी॥ ८॥ दोहा॥ पियहि परखि तिय थकि रही बूझेउ सखिन निहार। चलति क्योंन क्यों चलउमग परत न पग रँग भार॥ ९॥ रोष लाज उर हरष श्रम इनहीं ते जो होत। अंग २ जाहिर सलिल स्वेद कहत कवि गोत॥ १०॥ स्वेदको उदाहरण॥ कवित्त॥ येरी बलबीर के अहीरनकी भीरनमें सिमिटि समीरन अंबीरको अटा भयो। कहै पदमाकर मनोज मन मौजनहीं मैनके हटामें पुनि प्रेमको पटाभयो॥ नेही नँदलालकी गुलालकी घलाघलमें राजै त्यों तन तपसी जघन घटा भयो। चोरै चखचोटिज चलाक चित्त चोरी भयो लूटि गई लाज कुलकानि को कटा भयो॥ ११॥ दोहा॥ यों श्रम सीकर सुमुख ते परत कुचन पर बेश। उदित चन्द सुकता छतनि पूजत मनजं महेश॥ १२॥ शीत भीति हरषादि तें उठे रोम समुहाय। ताहि कहत रोमांच हैं सुकबिनके समुदाय॥ १३॥ अथ रोमांच॥सवैया॥ कैधौं डरी तूखरी जल जन्तु ते कै अंग भार सिवार भयोहै। कै नखते सिखलौं पदमाकर आहिरै झार सिंगार भयोहै॥ कैधौं कछू तोहिं शीत बिकार है ताहीको या उद्गार भयो है। कैधौं सुवारि बिहारहिमें तन तेरो कदम्बको हार भयोहै॥ १४॥ दोहा॥ पुलकित

गात अन्हात यों अरी खरी छबि देत। उठे अंकुरे प्रेम के मनहुं हेमके खेत॥ १५॥ हरष भीत मद क्रोध ते बचन भांतिही और। होत जहां खरभंगको बरणत कबि शिरमौर १६॥ अथ खरभंग॥ सवैया॥ जात हती निज गोकुल में हरि आवै तहां लखिकै मगसूना। तासों कहौं पद्माकर यों अरे सांवरो बावरे तैं हमैं छू ना॥ आज धौं कैसी भई सजनी उत बाविध बोल कढ्योई कहूंना। आनि लगायो हियो सों हियो भरि आयो गरो कछि आयो कछू ना॥ १७॥ दोहा॥ हौं जानत जो नहिं तुम्हैं बोलत अध अँखरान। संग लगे कहुं और के करि आये मदपान॥ १८॥ हरष हितेकै कोप ते कै भ्रम भय ते गात। थरथरात तासों कहत कम्प सुमति मरसात॥ १९॥ अथ कम्प॥ सवैया॥ साजि सिंगारनि सेज पै पार भई मिसही मिस ओट जिठानी। त्यों पद्माकर आयगो कन्त इकन्त जबै निज तंत में जानी॥ प्यो लखि सुन्दरि सुन्दर सेज ते यों सरकी थिरकी थहरानी। बातके लागे नहीं ठहरात है ज्योंजलजातके पात पै पानी॥ २०॥ दोहा॥ थर थरात उर कर कँपत फरकत अधर सुरंग। फरकि पीउ पलकनि प्रगट पीक लीक को ढंग॥ २१॥ मोहितते कै क्रोध तें कै भयही ते जान। बरण होत जहँ और बिधि सो बैवर्ण्य बखान॥ २२॥ सवैया॥ सापनेहूं न लख्यो निशिमें रति भौनते गौन कहूं निज पीको। त्यों पद्माकर सौति संयोगन रागभयो अन भावती जीको॥ हारन सों हहरात हियो सुकता सियरात सु बेसरही को। भावते के उर लागी जऊ तऊ भावती को मुख ह्वै गयो फीको॥ २३॥ दोहा॥ कहि न सकत कछु लाज ते अकथ आपनी बात। ज्यों ज्यों निशि नियरातहै त्यों त्यों तिय पियरात॥ २४॥ हरष रोष अरु शोक भय धूमादिक ते होत। प्रगट नीर अँखियानमें अश्रु कहत कबि गोत॥ २५॥ अश्रुको उदाहरण॥ कवित्त॥ भेद बिन जाने एती बेदन बिसाहिबे को आज हौं गई ही।

बाटबंशीवट वारेकी। क्रीड़त विलोकि नंदवेषहू निहारि भईबिकल छबिकाम्हरति वारेकी।कहै पद्माकर लटू ह्वै लोटपोटभई चित्तमेंचुभीजोचोट चायचटवारेकी॥ बावरी लौबूझति बिलोकितकहां तूबीर जानै कहाकोऊप्रेमप्रेम हटवारे की॥ २६॥ दोहा॥ आंखिनते आंसू उमड़ि परत कुचन पर आन। जनु गिरीशके शीशपर डारत भषिसुकतान॥ २७॥ तन मनकी न सम्हार जहँ रहै जीव गनगोय-सो सिंगार रस में प्रलय बरणत सब कवि कोय॥ २८॥ प्रलयको उदाहरण॥ सवैया॥ ये नँदगांव ते आये इहां उत आई सुता वह कौनहूं ग्वालकी। त्यों पद्माकर होत जुरा जुरी दोउन फाग करी इह ख्याल की॥ डीठ चली उनकी इनपै इनकी उनपै चली मूठि गुलालकी। डीठसी डीठ लगी उनको इनकै लगि मूठि सी मूठि गुलालकी॥ २९॥ दोहा॥ दै चखचोट अँगोट मग तजी युवति बनमाहिं। खरी बिकल कबकी परी सुधि शरीरकी नाहिं ३०॥ पिय बिछोह सम्मोह कै आलसही अवगाहि। छिनइन बदन बिकासिवो जम्भा कहिये ताहि॥ ३१॥ जम्भा को उदाहरण॥ सवैया॥ आरस सों रससों पद्माकर चौंकि परे चख चुम्बनके किये। पीक भरी पलकैं अलकैं अलकैं अलकैं छबि छूटि छटा लिये॥ सो मुख भाषि सकै अबको रिसकै कसकै मसकै छतिया छिये। रातिकी जागी प्रभात उठी अँगरात जँभात लजात लगी हिये॥ ३२॥ दोहा॥ दर दर दौरति सदन द्युति सम सुगन्ध सरसाति। लखत क्यों न आलस भरी परी तिया जमुहाति॥ ३३॥ इति सात्विक भाव वर्णनम्॥ दोहा॥ अनुभावहि में जानिये लीलादिक जे हाव। ते संयोग शृंगारमें बरणत सब कविराव॥ ३४॥ हाव लक्षण। दोहा॥ प्रगट स्वभाव तियानके निज सिंगारके काज। हाव जानियेते सबैयों भाषत कविराज॥ ३५॥ लीला प्रथम बिलास तिय पुनि बिच्छित्त बखान। बिभ्रम किलकिञ्चित बहुरि मोट्टाइति पुनिजान॥

॥ ३६ ॥ बिब्बोकङ्ग पुनि बिहृत गनि बङ्गरिकुट्टमित गाव। रसग्रंथन में ये दशङ्ग हाव कहत कविराव॥ ३७ ॥ पियतियको तिय पीउको धरै जु भूषण चीर। लीला हाव बखानहीं ताही को कवि धीर ॥ ३८॥ अथ लीलाहाव को उदाहरण ॥ कवित्त ॥ रूप रचि गोपीको गोविन्द गो तहाईं जहां कान्ह बनि बैठी कोऊ गोप की कुमारी है। कहै पद्माकर यों उलट कहैको कहा कसकै कन्हैया कर मसकै जु प्यारी है॥ नारीतें न होत नर नरतें न होत नारी विधिके करेहूं कहूं काहू ना निहारी है। काम कर्ता की करतूत या निहारी जहां नारी नर होत नर होत लख्यो नारी है ॥ ३९ ॥ पुनर्यथा ॥ सवैया ॥ ये दूत घूंघट घालि चलैं उत बाजत बांसुरी की धुनि खोलैं। त्यों पद्माकर ये इतै गोरस लै निकसैं यों चुकावत मोलैं ॥ प्रेम के फन्दे सु प्रीतकी पैटमें पैठतही है दशा यह जौलैं। राधा मयी भई श्यामकी सूरतश्याममयी भई राधिका डोलैं ४०॥ दोहा॥ तिय बैठी पियको पहिरि भूषण वसन विशाल। समुझि परत नहिं सखिन को को तिय को नँदलाल ४१ ॥ जो तिय पियहि रिझावई प्रगट करै बङ्ग भाव। सुकवि बिचार बखानहीं सो विलास निधि हाव ॥ ४२ ॥ अथ विलास हाव वर्णन ॥ कवित्त ॥ शोभित सुमनवारी सुमना सुमनवारी कौनहूं सुमनवारी को नहिं निहारी है। कहै पद्माकर त्यों बांधनू बसन वारी वा ब्रज बसनवारी छो हरन हारी है ॥ सुवरणवारी रूप सुबरनवारी सजै सुबरन वारी काम करकी सम्हारी है। सीकरन वारी खेद सीकरन वारी रति सीकरन वारी सो बशीकरनवारी है ॥ ४३ ॥ पुनर्यथा ॥ सवैया ॥ आईहो खेलन फागहूं द्यप्रभान पुरा ते सखी सँग लीने। त्यों पद्माकर गावती गीत रिझावती भाव बताय नवीने ॥ कंचनकी पिचकी कर में लिये केसरिके रँगसों अँग भीने। छोटीसी छाती छुटी अलकैं अति बैस की छोटी बड़ी परबीने ॥ ४४ ॥ दोहा ॥

समुझि श्यामको सामुहे करते बार बगार। मनमोहन मन हरनको लगीं करन शृंगार ॥ ४५ ॥ तनक तनकहीमें जहां तरुणि महा छवि देत। सोई वा क्षितिछाव को वरणत बुद्धि निकेत ॥ ४६ ॥ अथ बिच्छिति वर्णन ॥ सवैया ॥ मानों मयंकहि के पर्यङ्क निशंक लसै सुत बङ्क महीको। त्यों पद्माकर जागि रह्यो जनु भाग हिये अनुराग जु पीको ॥ भूषण भार सिंगारन सों सजि सौतिनको जु करै मुखफीको। ज्योति को जाल विशाल महा तिय भाल पै लाल गुलालको टीको ॥ ४७ ॥ दोहा ॥ जनु मलिन्द अरविन्द बिच बस्यो चाहि मकरन्द। इमि इक मृग मद विन्दु सों किये सुवश व्रजचन्द ॥ ४८ ॥ होत काज कछुको कछू हरबराय जिहि और। विभ्रम तासों कहतहैं छाव सबै गिर मौर ॥ ४९ ॥ सवैया ॥ विभ्रम ॥ बछरै खरी प्यावै गऊ तिहिको पद्माकर को मन लावत है। तिय जानि गिरैया गही वनमाल सु सेचे ललाट्च्यो छावत है ॥ उलटी कर दोहनी मोहनी की अँगुरी थन जानिकै दावत है। दुहिबो जो दुहाइबो दोउनको सखि देखतहीं बनि आवत है ॥ ५० ॥ दोहा ॥ पहिर कण्ठ बिच किंकिणी कस्यो कमर बिच हार। हरबराय देखन लगी कबते नन्दकुमार ॥ ५१ ॥ होत जहां इकबारही चास हास रस रोष। तासों किलकिञ्चित कहत छाव सबै निर्दोष ॥ ५२ ॥ किलकिञ्चित ॥ सवैया ॥ फागुनमें मधुपान समय पद्माकर आइ गे श्याम सँघाती। अंचल ऐंचो उँचाय भुजा भरै भूमि गुलाल की ख्याल सुहाती ॥ भृकुटिछ दै झझकाय जहां तिय झांकी झुकी झझकी मदमाती। रूसि रही घरी आधक लौं तिय झारत अंग निहारत छाती ॥ ५३ ॥ दोहा ॥ चढ़त भौंह धरकत हियो हरषत मुखमुसक्यात। मदछाकी तियको जु पिय छबि छकि परसत गात ॥ ५४ ॥ जहँ अंगन की छवि सरस बर तन चखन चितौनि। ललित छाव ताको कहत जे कवि कविता भौन ॥ ५५ ॥ अथ ललित ॥

कवित्त॥ हाव सजि ब्रजचन्द पै चली यों मुख-चन्द जाको चन्द चांदनीको मुख मन्द सो करत जात। कहै पदमाकर त्यों सहज सुगन्धही के पुंजबन कुंजनमें कंजसे भरत जात॥ धरत जहांई जहां पग है पियारी तहां मंजुल मजीठही के माठ से ढरत जात। वारन ते हीरा सेत सारीकी किनारन तें हारन तें मुकता हजारन झरत जात॥ ५६॥ दोहा सजि शृंगार कुमार तिय कुटि लघु दृगनि दराज। लखऊ नाह आवत चली तुमहिं मिलन तकि आज॥ ५७॥ सुनत भाव ते की कथा भाव प्रगट जहँ होत। मोट्टायित तासों कहैं हाव कविनके गोत॥ ५८॥ अथ मोट्टायित हाव को उदाहरण॥ सवैया॥ रूप दुहूं को दुहून सुन्यो सु रहैं तब ते मानों संग सदाहीं। ध्यानमें दोऊ दुहून लखैं हरषैं अँग अंग अनंग उछाहीं॥ मोहि रहे सबके यों दुहूं पदमाकर और कछू सुधि नाहीं। मोहनको मन मोहनी में बस्यो मोहनीको मनमोहन माहीं॥ ५९॥ दोहा॥ बशीकरन जबते सुन्यो श्याम तिहारो नाम। दृगनि मूंदि मोहित भई पुलकि पसीजनि बाम॥ ६०॥ करै निरादर ईठ को निज गुमान गहि बाम। कहत हाव बिब्बोक बहु जे कवि मति अभिराम॥ ६१॥ अथ बिब्बोक हावको उदाहरण॥ सवैया॥ केसर रंग महावरसे सरसै रस रंग अनंगचमूके। धूम धमारनको पदमाकर छाय अकाश अबीर के मूके॥ फाग यों लाड़िली की तिहिमें तुम्हैं लाज न लागत गोप कहूंके। छैलभये छतियां छिरकौ फिरौ कामरी ओढ़े गुलालके ढूके॥ ६२॥ दोहा॥ रहो देखि दृग दै कहा तुहिं न लाज कछु छूत। मैं बेटी वृषभान की तू अहीर को पूत॥ ६३॥ लाजनि वालि सकै नहीं पियहि मिलेहू नारि॥ बिहृत हाव तासों सबै कवि जन कहत बिचारि॥ ६४॥ अथ बिहृत हावको उदाहरण॥सवैया॥ सुन्दरिको मणिमन्दिर में लखि आये गोविन्द बनैबड़ भागे। आनन ओप सुधाकर सो पदमाकर जीवन ज्योति

के जागे॥ औचक ऐंचत अंचल के पुलकी अँग अंगहि यों अनुरागे। मैन के राज में बोलि सकी न भटू ब्रजराज सों लाजके आगे॥ ६५॥ दोहा॥ यह न बात आछी कछू लखि यौवन परगास। लाजहि ते चुप ह्वै रहति जो तू पिय के पास॥ ६६॥ तन मर्दत प्रियके तिया दरशावत झुठ रोष। याहि कुट्टमित कहत हैं भाव सुकवि निर्दोष॥६७॥ अथ कुट्टमित वर्णन॥ कवित्त॥ अंचल के ऐंचे चल करती दृगंचलको चंचलातै चंचल चलैन भजिहारे को। कहैपद्माकर परै सी चौक चुंबन में छलनि छुपावै कुच कुंभनि किनारेको॥ छातीको छिपे पै परी रातीसी रिसाय गलबाहीं किये करै नाहिहूँ उचारै कौ। हीं करत भीतल तमासे तुंगती करतसी करति रतिमें बशी करति प्यारेको॥६८॥ दो०॥ कर ऐंचत आवत इंची तिय आपहि पिय ओर। झठिहुं हूसि रहै छिनक छुवत छरा को छोर॥ ६९॥ दै जुडिठाई नाह संग प्रगटै विविध बिलास। कहत ग्यारहें हाव सो हेला नाम प्रकास॥७०॥ अथ हेला हाव वर्णन॥ सवैया॥ फाग के भीर अभीरन त्यों गहि गोविंद लै गई भीतर गोरी। भाय करी मनकी पदमाकर ऊपर नाय अबीरकी झोरी॥ छीन पितंबर कंबर तैं सुबिदा दई मीड कपोलन रोरी। नयन नचाइ कही मुसकाइ लला फिर आइयो खेलन होरी॥ ७१॥ दोहा॥ हर विरंचि नारद निगम जाको लहत न पार। ता हरि कों गहि गोपिका गरबि गुहावत बार॥ ७२॥ हानि क्रिया कछु तिय परुष बोधन करै जुभाव। रस ग्रंथन में कहत हैं तासों बोध कहाव॥ ७३॥ बोधक हाव वर्णन॥ सवैया॥ दोऊ अटान चढ़ै पदमाकर रेखें दुहूको दुवो छबि छाई। त्यों ब्रजबाल गोपाल तहां बनमाल तमालहि की दर्शाई॥ चन्द्रमुखी चतुराई करी तब ऐसी कछू अपने मन भाई। अंचल ऐंचे उरोजन तैं नन्दलाल को मालती माल दिखाई॥ ७४॥ दोहा॥ निरखि रहे निधि बन तरफ नागर नन्द कुमार।

तोरि हीर को हार तिय लगी बगारन बार ॥ ७५ ॥

इतिश्रीकूर्मवंशावतंस श्रीमन्महाराजाधिराज राजेंद्र श्रीसवाईमहाराजजगतसिंहाज्ञया मथुरास्थाने मोहन लालभट्टात्मज कविपद्माकर विरचित जगद्विनोदनाम काव्येअनुभावप्रकरणम् ॥

अथ संचारी भाव ॥ दोहा ॥ थाई भावन को मिले अभिमुख रहै मिताव। जे नव रस में संचरैं ते संचारी भाव ॥ १ ॥ थाई भावन में रहत या विधि प्रगट बिलात। ज्यों तरंग दरियाव में उठि २ तितहि समात ॥ २ ॥ थिर ह्वै थाई भाव तब भिरि पूरण रस होत। थिर न रहत रस रूप लों संचारिन को गोत ॥ ३ ॥ थाई संचारीन को है इतनोई भेद। असंचारिन के कहतहैं तेतिस नामनिवेद ॥ ४ ॥ कवित्त ॥ कहि निरवेद ग्लानि शंका त्यों असूया श्रम मद धृत आलस विषाद मति मानिये। चिन्ता मोह सुप्त न विबोध स्मृति अमख गर्व उतसुक तासु अवहित्थ ठानिये ॥ दीनता हरष व्रीड़ा उग्रता सु निद्रा व्याधि मरण अपस्मार आवेगज्ञ आनिये। त्रास उन्माद पुनि जड़ता चपलताई तेतिसौ वितर्क नाम याही विधि जानिये ॥ ५ ॥ दोहा ॥ या विधि संचारी सबै बरणतहैं कविलोग। जेज्यहि रसमें संचरैं तेतहं कहिबे योग ॥ ६ ॥ डर उपजै कछु खेद लहि विपति ईर्षा ज्ञान। ताहीते निज निदरिबो सो निरवेद बखान ॥ ७ ॥ अति उसास अरु दीनता विवरण अश्रु निपात। निरवेदज्ञ ते होतहै वे सुभाव निजगात ॥ ८ ॥ निर्वेद सवैया ॥ यों मन लालची लालच में लगि लोभ तरंगन में अवगाह्यो। त्यों पदमाकर देह के गेह के नेहके काजन काहि सराह्यो ॥ पाप किये पै न पातकी पावन जानिकै रामको प्रेम निबाह्यो। चाह्यो भयो नकछू कबहूं यमराजहू सों दृढ़ा बैर बिसाह्यो ॥ ९ ॥ दोहा ॥ भयो न कोऊ होइगो मोसमान मतिमन्द। तज्यो न अबलों विषय विष भज्यो न दशरथ नन्द ॥ १० ॥ भखहितेकि पियास

तें कै रति अमते अंग। विच्छेद होत गलानि सों कम्पादिक स्वर भंग॥ ११॥ ग्लानि को उदाहरण॥ सवैया॥ आज लखी मृगनैनी मनोहर बेणी छुटी छहरै छबि छाई। टूटे हरा हियरा पै परे पदमाकर लीकसी लंक लुनाई॥ कैरति केलि सकेलि सुखै कलि केलि के भौन ते बाहिर आई। राजि रही रति आंखिन में मन में धौं कहा तन में शिथिलाई॥ १२॥ दोहा॥ शिथिल गात कांपत हियो बोलत बनत न बैन। करी खरी विपरीत कछु कहत रंगीले नैन॥ १३॥ कै अपनी दुर्नीति कै दुवन क्रूरता मानि। आवै उरमें शोच अति सो शंका पहिचानि॥ १४॥ अथ शंका कवित्त॥ मोहि लखि सोवत वियोरि गौ सुबेनी बनी तोरिगो हिये को हरा छोरिगो सुगैया को। कहै पदमाकर त्यों घोरिगो घनेरो दुख बोरि गो बिसासी आज लाजहीकी नैयाको॥ अहित अनैसो ऐसो कौन उपहास यहै शोचत खरीमैं परी जोवत जुन्हैंयाको। बूझैंगे चबैया तब कैहौं कहा दैया द्रुत पारिगोको मैया मेरी सेज पै कन्हैया को॥ १५॥दो०।लगैनकछु ब्रज गलिन मेंआवत जात कलंक। निरखि चौथ को चांद यह शोचत सुमुखि सशंक॥ १६॥ सहि न सकै सुख और को यहै असूया जान। क्रोध गर्व दुख दुष्टता ये सुभाव अनुमान॥ १७॥ अथ असूया को उदाहरण॥ कवित्त॥ आवत उसासी दुख लगै और हांसी सुनि दासी उर लाय कहो को नहिं दहा कियो। कहैपदमाकर हमारे जान ऊधौ उन तात कौन मात कौन भ्रातकौ कहा कियो॥ कंकालिनि कूबरी कलंकिनि कुरूप तैसी चेट कनि चेरी ताके चित्त को चहा कियो। राधिका की कहावत कहिदीजो तुम मोहनसों रसिक शिरोमणि कहायवों धौंकहा कियो॥ १८॥ दो०॥ जैसो को तैसो मिलै तबहीं जुरत सनेह। ज्यों त्रिभंग तनश्याम को कुटिल कूबरी देह॥ १९॥ धन यौवन रूपादि तें कै मदादि के पान। प्रगट होत मदभाव तहं

औरै गति बतरान ॥ २० ॥ मदको उदाहरण ॥ सवैया ॥ पूष निशा में सुबारुणी लै बनि बैठे दुहूं मद के मतवाले। त्यों पदमाकर झूमैं झुकैं घन घूमि रचे रस रंग रसाले ॥ भीत को जीति अभीत भये सुगनै न सखी कछू शाल दुशाले। छाक छका छबिही को पिये मद नैनन के किये प्रेम के प्याले ॥ २१ ॥ दोहा ॥ धन मद यौबन मदमहा प्रभुता को मद पाय। तापर मदको मद जिन्हैं को त्यहि सकै सिखाय ॥ २२ ॥ अति रत अति गति ते जहां सुअनिखेद सरसाय। सोश्रम तहां सुभावये खेद उसास मनाय ॥२३॥ ॥ अथ श्रमको उदाहरण ॥ सवैया ॥ कैरति रंग थकीथिर ह्वै पर्यंक में प्यारी परी मुख बाइ कै। त्यों पदमाकर खेद के बुन्द रहे मुक्ताहल से तन छायकै ॥ बिन्दु रचे मेहँदी के लसे कर तापर यों रह्यो आनन आइकै। इन्दु मनों अरविन्दपै राजत इंद्र वधून के इन्द बिछायकै ॥ २४ दोहा ॥ श्रम जलकन पलकन प्रगट पलकन थकत उसास। करी खरी विपरीत रति परी बिसासी पास ॥ २५ ॥ साहस ज्ञान सुसंगतैं धरै धीरता चित्त। ताहीसों धृत कहतहैं सुकवि सबै नित नित्त ॥ २६ ॥ धृति को उदाहरण॥ ॥ सवैया ॥ रे मन साहसी साहस राखु सुसाहस सों सब जेर फिरेंगे। त्यों पदमाकर या सुखमें दुख त्यों दुख में सुख सेर फिरेंगे। वैसही वेणु बजावत श्याम सुनाम हमारो हू टेर फिरेंगे ॥ एक दिना नहिं एकदिना कबहूं फिर वे दिन फेर फिरेंगे ॥ २७ ॥ पुनर्यथा ॥ सवैया ॥ या जग जीवन को है यहै फल जो छल छांड़ि भजै रघुराई। शोधि कै संत महंतनहूं पदमाकर बात यहै ठहराई ॥ ह्वै रहै होनी प्रयास बिना अन होनी न ह्वै सकैकोटि उपाई। जोविधि भालमेंलीक लिखीसो बढ़ाई बढ़ै न घटै न घटाई२८दोहा॥ बनचर बनचर गगनचर अजगर नगर निकाय। पदमाकर तिन सबनकी खबर लेत रघुराय ॥ २९ ॥ जागरणादिक ते जहां जो उपजत अलसानि। ताही सों आलस कहत

कवि कोविद जे आनि ॥ ३० ॥ आलस को उदाहरण ॥ ॥ कवित्त ॥ गोकुल में गोपिन गोविन्द संग खेली फाग रति भरी आलसमें ऐसी छवि छलकैं। देह भरी आलस कपोल रस रोरी भरे नींद भरे नयन कछूक झपैं झलकैं॥ लाली भरे अधर बड़ाली भरे मुख वर कवि पदमाकर विलोकै कौन सलकैं। भाग भरे लाल औ सुहाग भरे सब अंग पीक भरी पलक अबीर भरी अलकैं॥३१॥दोहा॥ निशि जागी लागी हिये प्रीति उमंगत प्रात। उठि न सकत आलस बलित सहज सलोने गात॥ ३२ ॥ फुरै न कछु उद्योग जहं उपजै अतिही शोच। ताहि विषाद बखानहीं जे कवि सदा अपोच ॥ ३३ ॥ अथ विषाद वर्णन ॥ कवित्त ॥ शोचन हमारे कछू त्याग मनमोहन के तनको न शोचनो पै योंहीं जरे जाय हैं। कहै पदमाकर न शोच अब एहू यह आइहै तौ आनि है न आइहै न आइ है॥ योग को न शोच और भोगको न शोच कछू यही बड़ो शोच सोतो सबनि सुहाइ है। कूबरीके कूबर में बेध्यो है त्रिभंगता त्रिभंग को त्रिभंगी लागे कैसे मुरझाइहै ॥३४॥ पुनर्यथा॥कवित्त ॥ एकै संग हाल नन्दलाल औ गुलाल दोऊ दृगनि गये जु भरि आनन्द मढ़ै नहीं। धाय धाय हारी पदमाकर तिहारीसौंह अबतो उपायएक चित्तमें चढ़ै नहीं॥कैसीकरों कहां जाउं कासों कहौं कौन सुनै कोऊ तो निकासौ जासे दरद बढ़ै नहीं। मेरी मेरी बीर जैसे तैसे इन आंखिन ते कढ़िगो अबीर पै अहीर को कढ़ै नहीं ॥३५॥ दोहा ॥ अब न धीर धारत बनत सुरत बिसारी कन्त। पिक प्रापी पीकन लगे बगरेउ बाग बसन्त ॥ ३६ नीति निगम आगमन तें उपजै भलो विचार। ताही सों मति कहत हैं सब ग्रंथन को सार ॥ ३७ ॥ मति को उदाहरण ॥ सवैया ॥ बादही बाद बदी को बकै मति बोरदे बंज विषय विषही को। मानि लै या पदमाकर को कही जो हित चाहत आपने जीको ॥ शंभु के जीवको जीवन मूरि सदा सुख दायक

सबहीको। रामही राम कहै रसना कसना तु भजै रस नाम सहीको ॥ ३९ ॥ दोहा ॥ पाछे परन कुसंग के पद्माकर यहि डीठ । परधन खात कुपेटज्यों पिटत बिचारी पीठ ॥ ४० ॥ जहां कौनहूं बातकी चित में चिंता होय। चिंता तासों कहत हैं कवि कोविद सब कोय ॥ ४१ ॥ चिंता को उदाहरण ॥ कवित्त ॥ झिलत झकोर रहै यौवन को जोर रहै समद मरोर रहै सोर रहै तबसों । कहै पद्माकर तकैयन को मेह रहै नेह रहै नैननि न मेह रहै दबसों ॥ बाजत सुबैन रहै उन मदमैन रहै चित्त में चैन रहै चातकी के रवसों। गेह में न नाथ रहै हारे ब्रजनाथ रहै कबलों मन हाथ रहै साथ रहै सबसों ॥ ४२ ॥ दोहा कोमल कंज मृनालपै किये कलानिधि बास। कबको ध्यान रह्यो जोधरि मिच मिलन की आस ॥ ४३ ॥ आपुहि अपनी देह को ज्ञान जबै नहिं होय । बिरह दुःख चिंता जनित मोह कहावत सोय ॥ ४४ ॥ मोह को उदाहरण ॥ सवैया ॥ दी उनको सुधिहै न कछू बुधि वाही बलाइ में बूड़ि बहीहै। त्यों पद्माकर दीज मिलायकों चंग बबायन को उमहीहै ॥ आजुहि की वा दिखा दिखमें दशा दोउन की नहिं जात कहीहै। मोहन मोहि रह्यो कब को कब की वह मोहनी मोहि रहीहै ॥४५ ॥ दोहा ॥ सट पटाति तसबी हसी दीह दृगन में मेह । सुब्रजबाल मोही परत निर्मोही को नेह ॥ ४६ ॥ सुपन स्वप्न को देखिबो जगिवो वहै बिबोध। सुमिरन बीती बातको सुमृति भाव सब शोध ॥ ४७ ॥ स्वप्नको उदाहरण ॥ सवैया ॥ कांपिरहै छिन सोवतहूं कछू भाषिबो मो अनुसारि रहीहै। त्यों पद्माकर रंच रुमंचनि खेद के बुन्दनि धारि रहीहै ॥ बेष दिखा दिखी के सुख में तनकी तनकों न सम्हार रहीहै। जानतिहौ सखि सापने में नँदलाल को नारि निहारि रहीहै ॥४८॥ दोहा ॥ क्योंकरिझूठी मानियेसखिसपनेकी बात। जुहरि हरयो सोवत हियो सोन पाइयत प्रात॥४९॥

बिबोधको उदाहरण ॥ कवित्त ॥ अध खुली कंचुकी उरोज अध आधे खुले अधखुले वेख नख रेखन के झल कैं। कहै पद माकर नवीन अध नीवी खुली अधखुले छहरि छराकै छोर छलकैं ॥ भोर जगि प्यारी अध ऊरध इतैकी ओर भाखी झिखि झिरकि उचारि अध पलकैं। आंखैं अध खुली अध खुली खिरकीहैं खुली अध खुली आनन पै अध खुली अलकैं ॥ ५० ॥ दोहा ॥ अनुरागी लागी हिये जागी बड़ प्रभात। ललित नैन बेनी छुटी छाती पर छहरात ॥ ५१ ॥ स्मृति को उदाहरण ॥ सवैया ॥ कंचन आभा कदम्ब तरै करि कोऊ गई तिय तीज तियारी। हौंहूं गई पदमाकर त्यों चलि औचक आइगो कुञ्जबिहारी ॥ हेरि हिंडोरे चढ़ाय लियो कियो कौतुक सोन कह्यो परै भारी। फूलन बारी पियारी निकुंज की झूलन है नव झूलन वारी ॥ ५२ ॥ दोहा ॥ करी जुही तुम वादिना वाके सँग बतरान। वहै सुमिरि फिर फिरि तिया राखति अपने प्रान ॥ ५३ ॥ जहां जु अमरख होत लखि दूजे को अभिमान। अमरख तासों कहतहैं जे कबि सदा सुजान ॥ ५४ ॥ अमरख वर्णन ॥ कवित्त ॥ जैसो जैने मोसों कहूं नेकहूं डरातऊ तो ऐसो अब हौंहूं तोहूं नेकहूं न डरिहौं। कहै पदमाकर प्रचंड जो परैगो तो उमंड करि तोसौं भुज दंड ठोंकि लरिहौं ॥ चलो चलु चलो चलु बिचल न बीचही तें कीच बीच नीच तो कुटुंब को कचरिहौं। मेरे दगा दार मेरे पातक अपार तोहिं गंगा के कछार में पछारि छार करिहौं ॥ ५५ ॥ दोहा ॥ गरबसु अंजनहीं बिना कंजन को हरिलेत। खंजन मद भंजन अरथ अंजन अँखियन देत ॥ ५६ ॥ बल बिद्या रूपादि को कीजै जहां गुमान। गरब कहत सब ताहि सों जे कवि सुमति सुजान ॥ ५७ ॥ गरब को वर्णन ॥ कवित्त ॥ बानी के गुमान कल कोकिल कहानी कहा बानी की सुबानी जाहि आवत भनै नहीं। कहै पदमाकर गोराई के गुमान कुच कुंभन पै केसरि की कंचुकी ठनै नहीं ॥ रूप के गुमान तिल उत्त-

मा न आनै उर आनन निकाई पाई चंद्र कीरनैनहीं॥ मृदुती गुमान मय तूल हून मान कछु गुण के गुमान गुण गौरिको गनै नहीं॥ ५८॥ दोहा॥ गुल पर गालिब कमल है कमलन पै सुगुलाब। गालिब गहब गुलाब पै मोतन सुरभि सुभाव॥ ५९॥ जहां हितू के मिलन हित चाह रहति हिय माहिं। उतसुकता तासों कहत सब ग्रंथन में चाहि॥ ॥ ६०॥ उत सुकता वर्णन॥ कवित्त॥ ताकिये तितै तितै कुसुंभ सों चुवोई परै प्यारी परवीन पाउ धरति जितै जितै। कहै पदमाकर सुपौन तै उताली बनमाली पै चली यों बाल बासर बितै बितै॥ भारहीके डारन उतारि देतआभरन हीरन के हार देति हिलिन हितै हितै। चांदनी के चौसर चहूंघां चौकचांदनी में चांदनीसी आई चंद चांदनी चितै चितै॥ ६१॥ दोहा॥ सजे विभूषण बसन सब सुप्रिय मिलन की हौंस। सह्यौ परति नहिं कैसहूं रह्यो अधघरीद्योस॥ ६२॥ जो जहं करि कछु चातुरी दशा दुरावै आय। ताही सों अब हिच्छ यह भाव कहत कविराय॥ ६३॥ अब हिच्छ को वर्णन॥॥ सवैया॥ जोर जगी यमुनाजल धार में धाय धसी जल केलिकी माती। त्यों पदमाकर पैग चलै उछलै जब तुंग तरंग बिधाती॥ टूटे हरा छरा छूटै सबैसरबोर भई अंगिया रंगराती। को कहतो यह मेरोदशा गह तो न गोविंद तो मैं बहि जाती॥ ६४॥ दोहा॥ निरखतही हरिहरषकै रहै सु अंसू छाय। बूझत अलि केवल कह्योगयो धूम हीं धाय॥ ६५॥ अति दुखतै विरहादि तें परति जबहि जो दीन। ताहि दीनता कहतहैं जे कवित्त रस लीन॥ ६६॥ दीनताको उदाहरण॥ सवैया॥ कै गिनतीसी इती विनती दिन तीनक लौं बहु बार सुनाई। त्यों पदमाकर मोह मया करि तोंहि दया न दुखीन को आई॥ मेरोहरा हर हार भयो अब ताहि उतारि उन्हैं न दिखाई। ल्याई न तू कबहूं बनमाल गोपाल की वा पहिरी पहिराई॥ ६७॥ दोहा॥ मुख मलीन तन छीन छवि परी सेज पर दीन।

लेत क्यों न सुधि सांवरे नेहो निपट नवीन ॥ ६८ ॥ जहां कौन हूं बात ते उर उपजत आनंद। प्रगटे पुलक प्रसेद तें कहत हरष कवि वृंद ॥ ६९ ॥ हरष को उदाहरण ॥ सवैया ॥ जग जीवन को पल जानि परो धनि नैननि को ठहरैयतु है। पदमाकर ह्यो झलसै पुलकै तन सिंधु सुधा के अन्हैयतु है ॥ मनपै रत सो रस के नद में अति आनँद में मिलि जैयतु है। अब ऊंचे उरोज लखे तियके सुरराज के राज सों पैयतु है ॥ ७० ॥ दोहा ॥ तुमहिं बिलोकि बिलोकिये झलसि रह्यो यों गात। आंगी में न समात उर उर में सुद न समात ॥ ७१ ॥ जहां कौन हूं हेत तें उर उपजत अतिलाज। ब्रीडा तासों कहत हैं सु कविन के शिरताज ॥ ७२ ॥ ब्रीडा को उदाहरण ॥ सवैया ॥ काल्हि परी फिर साजवी स्यान सु आजु तौ नैन सों नैन मिलालै। त्यों पदमाकर प्रीति प्रतीति में नीति की रीति महा उर शालै ॥ ये दिन यौवन जातो इतै तन लाज इती तु करैगी कहां लै। नेक तौ देखन दे मुख चंद सो चंद्रमुखी मति घूघट बालै ॥ ७३ ॥ दोहा ॥ प्रथम समा गम की कथा बूझी सखिन जु आय। मुख नवाय सकुचाय तिय रही सु घूंघट नाय ॥ ७४ ॥ निरदै पनसों उग्रता कहत सुमति सब कोय ॥ शयन कहावत सोइ बो वहै सुनिद्रा होय ॥ ७५ ॥ उग्रताको उदाहरण ॥ कवित्त ॥ सिंधुके सपूत सुत सिंधुतनयाके बंधु मंदिर अमंद शुभ बुंदर सुधाई के। कहैपदमाकर गिरीश के बसेहौ शीश तारन के ईश कुल कारन कन्हाई के ॥ हाल ही के विरह बिचारी ब्रजबालही पै ज्वाल से जगावत गुआलसी लुन्हाई के। येरे मतिमंद चंद्र आवत न तोहिं लाज ह्वैकै द्विजराज काज करत कसाई के ॥ ७६ ॥ दोहा ॥ कहा कहौं सखि काहि को हिय निरदै पन आज। तन जारत पारत बिपति अपति उजारत लाज ॥ ७७ ॥ निद्रा को उदाहरण ॥ कवित्त ॥ चह चही चुभ के चुभी है चौंक चुंबन की लह लही लांबी लटैं लपटी सुलंक पर। कहैपदमाकर मजानि मरगजी मंजु

मसकी सु आंगी है उरोजन के अंकपर॥ सोईरस सार पो-
सगंधनि समोई खेद शीतल सुलोने लोने बदन मयंक पर।
किन्नरी नरी है कै छरी है छबिदार परी टूटी सी परी है
कै परी है परयंक पर॥ ७८॥दोहा॥ नंदनंदन नव नागरी
लखि सोवत निरमूल। उर उघरे उरजन निरखि रह्यो
सु आनन फूल॥ ७९॥ विरह बिबश कामादितें तन संता
पित होय। ताही सों सब कवि कहत व्याधि कहावत
सोय॥ ८०॥ व्याधि को उदाहरण॥ कवित्त॥ दूरहि ते
देखत बिथा मैं बा वियोगिनि की आई भले भाजि ह्यां
लाज मढ़ि आवैगी। कहैपद्माकर सुनो हो घनश्याम
जाहि चेतत कहूं जो एक आहि कढ़ि आवैगी॥ सरसरि-
तान को न सूखत लगैगी देर येती कछू जुलमिन ज्वाला
बढ़ि आवेगी। ताते तन तापकी कहौंमैं कहा बात मेरे
गातहि छुवो तौ तुम्है ताप चढ़ि आवैगी॥ ८१॥ दोहा॥
कबकी अजब अजार मैं परी बाम तन छाम। नित कोऊ
मत लीजियो चन्द्रोदय को नाम॥ ८२॥ प्राण त्यागि क-
हिये मरन सो न बरनि बे योग। बर्णत सूर सतीन को
सुयश हेत कवि लोग॥ ८३॥ मरण को उदाहरण॥ सवैया॥
जानकी को सुनि आरत नाद सुजानि दशानन की छल
हाई। त्यों पद्माकर नीच निशाचर आइ अकाश में आ-
ड़्यौ तहांई॥ रावन ऐसे महारिपु सों अतियुद्ध कियो
अपने बल ताई। सोहित श्री रघुराज के काज पै जीव तजै
तौ जटायुकी नाई॥ ८४॥ पुनर्यथा॥ कवित्त॥ पाली पैज
पन की प्रवेश करि पावक सों पौन से सिताब सहगौन
का गमी भई। कहै पद्माकर पताका प्रेम पूरणकी प्रगट
पतिव्रत की सौ गुनी रती भई॥ भूमिहू अकाशहू पताल
हू सराहै सब जाको यश गावत पवित्रभी मती भई। सुनत
पयान श्री प्रताप को पुरंदर पै धन्य पटरानी जोधपुर में
सती भई॥८५॥दोहा॥ हने राम दशशीशके दशौ शीश भुज
बीश। लै जटायुकी तजरि जनुउड़े गीध नव तीस॥८६॥ सह

दुःखादिकते जहां होत कंप भूपात। अपस्मार सो फेन मुख श्वासादिक सरसात॥ ८७॥ अपस्मार का उदाहरण॥ सवैया॥ जा छिन तें छिन सांवरे रावरेलागे कटाक्ष कछू अनिआरे। त्यों पद्माकर ता छिनते तिय सों अँग अंगन जात सम्हारे॥ ह्वै हिय हायल घायलसी घन घूमि गिरी परै प्रेम तिहारे। नैन गये फिर फैन बहै मुख बैन रह्यो नहिं मैन के मारे॥ ८८॥ दोहा॥ लखि बिहाल एकै कहत भई कहूं भयभीत। एकै कहत मिरगी लगी लगी न जानत प्रीत॥ ८९॥ अति डरतें अति नेह तें जु उठि चालियतु बेग। ताही सों सब कहत हैं संचारी आवेग॥ ९०॥ अथ आवेग वर्णन॥ कवित्त॥ आईसंग अलिन के ननँद पठाई नीठ सोहत सोहाई सो सईं डरी सुपट की। कहै पद्माकर गंभीर यमुना के तीर लागी घट भरन नवेली नेह अटकी॥ ताही समय मोहन सु बाँसुरी बजाई तामैं मधुर मलार गाई वोर बंशीवट की। तान लगे लट की रही न सधि घूंघट की घट की न औघट की बाट की न घट की॥ ९१॥ दोहा॥ सुनि आहट पिय पगनिको रभरि भगी यों नारि। कहूंके कब कहूं किंकिनी कहूं सु नूपुर डारि॥ ९२॥ जहां कौन ह्वं अहित तें उपजत कछु भय आय। ताही को नित त्रास कहि बरणतहैं कविराय॥ ९३॥ अथ त्रास को उदाहरण॥ सवैया॥ ये ब्रज चन्द गोबिन्द गोपाल सुन्यों न क्यों केते कलाम किये मैं। त्यों पद्माकर आनंद के नंद ह्वै नँद नंदन जानि लिये मैं॥ माखन चोरी कै खोरिन ह्वै चले भाजि कछू भय मानि जिये मैं। दूरिहूं दौरि दुरौ जो चहो तो दुरौ किनमेरे अंधेरे हिये मैं॥ ९४॥ दोहा॥ शिशिर शीत भय भीत कछु सुपरि प्रीति कैं पाय। आपुहि तें तजि मान तिय मिलो प्रीति में जाय॥ ९५॥ अविचारित आचरन जो सोउन माद बखान। व्यर्थ बचन रोदन हँसी ये सुभाव तहँ जान॥ ९६॥ उन्माद को उदाहरण॥ सवैया आपुहिं आप मैं

रूसि रही कबहूं पुनि आपुहिं आप मनावै। त्योंपदमाकर ताके तमालनि भेटबे को कबहूं उठि धावै॥ जो हरि रावरो चित्त लखै तौ कहूं कबहूं हँसि हेरि बुलावै। व्याकुल बाल सुआलिन सों कह्यो चाहै कछू तौ कछू कहि आवै॥ ९७॥ दोहा॥ छिन रोवति छिन हँसि उठति छिन बोलति छिन मौन। छिन छिन पर छीनी परति भई दशा धौं कौन॥ ९८॥ गमन ज्ञान आचरण की रहै न जहँ सामर्थ॥ हित अनहित देखै सुनै जड़ता कहत समर्थ॥ ९९॥ जड़ता को उदाहरण॥ कवित्त॥ आज बरसानेकी नवेली अलबेली बधू मोहन बिलोकिबे को लाज काज लैरही। छज्जाछज्जा झांकती झरोखनि झरोखनि ह्वै चित्रसारी चित्रसारी चन्द्र सम ह्वै रही॥ कहै पदमाकर त्यों निकस्यो गोबिंद ताहि जहां तहां इकटक ताकि धरी ह्वै रही। छज्जा वारी छकीसी उझकीसी झरोखा वारी चितकैसी लिखी चित्रसारीवारी ह्वै रही॥ १००॥ दोहा॥हलै दुहून चलैदुहू दुहून बिसरिगे गेह। इकटक दुहुनि दुहूलखै अटकि अटपटे नेह॥ १॥ जहं अति अनुरागादि ते थिरता कछू रहैन। तितचितचाहै आचरण वहै चपलता ऐन॥ २॥ चपलताको उदाहरण॥सवैया॥ कौतुक एक लख्यो हरि ह्यां पदमाकर यों तुम्हैं जाहिरकी मैं। कोऊ बड़े घरकी ठकुराइनि ठाढ़ी न घातरहै छिनकीमैं॥ झांकतिहै कबहूं झँझरीन झरोखन त्यों सिरकी सिरकी मैं। झांकतिही खिरकीमें फिरै थिरकी थिरकी खिरकी खिरकीमैं॥३॥दोहा॥चकरीलौं सँकरी गलिनछिन आवत छिन जात। परी प्रेमके फन्द में बधू बितावत रात॥ ४॥ उर उपजत सन्देह जहँ कीजे कछू बिचार। ताहि बितर्क बिचारहीं जे कवि सुमति उदार॥ ५॥ बितर्कको उदाहरण॥ कवित्त॥ द्योस गुन गौरिके सु गिरिजा गोसांइन को आवत यहाहीं अति आनँद इतै रहैं। कहै पदमाकर प्रतापसिंह महाराज देखो देखिबो को दिव्य देवता तितै

रहैं ॥ शैल तजि बैल तजि फैल तजि गैलनमें हेरत उमाको यों उमापति हितै रहैं । गौरिन में कौनधौं हमारी गुण गौरि यहै शंभु घरी चारक लौं चकृत चितै रहैं ॥ ६ ॥ पुनर्यथा ॥ कवित्त ॥ वेऊ आये द्वारेहींहूं हुती अगवारे और द्वारे अगवारे कोऊ तौन तिहि कालमें । कहै पदमाकर वे हरषि निरखि रहैं त्योंहींरही हरषि निरखि नँदलाल में ॥ मोहिं तो न जान्यो गयो मेरी आली मेरो मन मोहन के जा इधौं पर्योहै कौन ख्यालमें । भूल्यो भौंह भाल में चुभ्योकै टेढ़ी चालमें छक्योकै छबि जालमें कै बींध्यो बनमाल में ॥ ७ ॥ दोहा ॥ किधौं सु अधपक आम में मानहुं मिलौ मलिन्द । किधौं तनक ह्वै तम रह्यो कै ठोढ़ी को बिन्द ॥ ८ ॥ इतिश्री कूर्मबंशावतंस श्रीमहाराजा धिराज राजेन्द्र श्रीसवाई महाराज जगतसिंहाज्ञया कवि पदमाकर बिरचित जगद्विनोद नाम काव्ये संचारी भाव प्रकरणम् ॥ ४ ॥

अथ स्थाई भाव ॥ दोहा ॥ रस अनुकूल बिचार जो उर उपजत है आय । थाईभाव बखानहीं तिनहीं को कविराय ॥ १ ॥ है सब भावनमें सिरे टरत न कोटि उपाव ह्वै परिपूरण होत रस तेई थेई भाव ॥ २ ॥ रति इकहास जु शोक पुनि बहुरि क्रोध उतसाह । भय गिलानि आचरज निर वेद कहत कवि नाह ॥ ३ ॥ नवरस के नौई इतै थाई भाव प्रमान । तिनके लक्षण लक्ष सब या बिध कहत सुजान ॥ ४ ॥ सुप्रिय चाह ते होत जो सुमन अपूरब प्रीति ताहीसों रति कहत हैं रस ग्रंथनि की रीति ॥ ५ ॥ रति को उदाहरण ॥ कवित्त ॥ सजन लगीहै कहूं कबहूं सिंगारन को तजन लगी है कहूं एसब सवारी की । चखन लगी है कछू चाह पदमाकर त्यों लखन लगीहै मंजु मूरति मुरारी की ॥ सुन्दर गोबिन्द गुण गनन लगीहै कछु सुनन लगीहै बात बांकुरे बिहारी की । पगनलगीहै लगी लगन हियेसों नेकु लगनलगीहै कछू पीकी प्राणप्यारी की ॥ ६ ॥

दोहा॥ कान्ह तिहारे मान को अति आतप यह पाय। तिय उर अंकुर प्रेम को जाइ न कुम्हिलाय ॥ ७॥ बचन रूपकी रचन तें कछु डर लहै बिकास। ताते परमित जो हँसनि वहै कहीयतु हांस॥ ८॥ अथ हांस को वर्णन॥ पुनर्यथा॥ सवैया॥ चन्द्रकला चुनि चूनरी चारु दई पहिराय सुनाय सुहोरी। बेंदी बिशाखा रची पदमाकर अंजन आंजि समाजिकैरोरी। लागी जबै ललिता पहिरावन कान्हकी कंचुकी केसर बोरी॥ हेरि हरे मुसकाइ रही अँचरा मुख दै वृषभान किशोरी॥ ९॥ दोहा॥ बिबश न ब्रज बनितान के सखि मोहन मृदुकाय। चीर चोरि सुकदम्ब पै कछुक रहे मुसक्याय॥ १०॥ अहित लाभ हित हानि ते कछु जु हिये दुख होत। शोक सुथाई भावहै कहत कवि नको गोत॥ ११॥ शोकको उदाहरण॥ ॥ सवैया॥ मोहिं न शोच इतौ तन प्राणको जाय रहै कि लहै लघुताई। येऊ न शोच घनो पदमाकर साहिबी जोपै सुकण्ठही पाई॥ शोच इहै इक बालवधू बिन देहिंगो अंगद को युवराई। यों बचनेलि वधूके सुने करुणाकर को करुणा कछु आई॥ १२॥ दोहा॥ वाम काम की खसम को भसम लगावत अंग। चि नयन के नैननि जम्यो कछु करुणाको रंग॥ १३॥ रिपुकृत अपमानादि ते परमित चित्त बिकार। जु प्रतिकूल हिय हरष को वहै क्रोध निरधार॥ १४॥ क्रोध को उदाहरण॥ कवित्त॥ नहत बिरुह्द नृप रामदल बहल में ऐसो एक हौंहीं दुष्ट दानव दलन हौं। कहै पदमाकर चहै तो चकूं चक्रन को चीर डारो पलमें पलैया पै जपन हौं॥ दशरथ लालच्छै कराल कछु लाल परि भाखत भयोई नेकु रावनै नगन हौं। रीतौ करौं लंक गढ़ इन्द्रहि अभीतो करौं जीतौं इन्द्र जीतौं आजु तोमैं लच्छमण हौं॥ १५॥ दोहा॥ फारौंबच्छन अच्छकों जो लगि मैं हनुमान। तौलौं पलक न लाइहौं कछुक अरुण अँखियान॥ १६॥ लखि उदभट प्रति

भट जु कछु जगजगात चित चाव। सहरष सौनर बीरको उत साहस थिर भाव॥ १७॥ उत्साह को उदाहरण॥ कवित्त॥ इत कपि रीछ उत राक्षसनहीं की चमू डङ्का देत बङ्का गढ़ लङ्का ते कढ़ैलगी। कहै पदमाकर उमगड जगही के हित चित्तमें कछूक चोप चाव की चढ़ै लगी॥ बातनि को बाढ़िये को कर में कमान कसि धाई धूर धान आसमान में मढ़ै लगी। देखतै बनी है दुहूं दलकी चढ़ा-चढ़ी में राम दृगछू पै नेक लाली जो चढ़ै लगी॥ १८॥ दोहा॥ मेघनाद को लखि लषन हरषे धनुष चढ़ाय। दुखित बिभीषण दबि रहो कछु कूले रघुराय॥ १९॥ बिछत भयङ्कर के डरन जो कछु चित अकुलात। सो भय थाईभाव हैं कछु सशंक जहँ गात॥ २०॥ भयको उदा-हरण॥ कवित्त॥ चितै चितै चारों ओर चौंकि चौंकि परै त्योंहीं जहां तहां जब तब खटकत पात हैं। भाजन सो चाहत गँवार ग्वालिनी के कछू डरन डरनि सेउठाने रोम गात हैं॥ कहै पदमाकर सु देखि दशा मोहन की शेषज्ञ महेशज्ञ सुरेशज्ञ सिहात हैं। एक पाय भीत एक मीत कांधे धरे एक एक हाथ छीको एक हाथ दधि खातहैं॥ २१॥ दोहा॥ तीन पैग पुहुमी दई प्रथमहिं परम पुनीत। बज्र-रि बढ़त लखि बामनहिं भेबलि कछुक सभीत॥ २२॥ जहँ घिनाय चित चीज लखि सुमिरि परस मन मांह। उपजत जो कछु घिन यहै ग्लानि कहत कवि नाह॥ २३॥ याहीको नाम जगुप्सा जानिये॥ ग्लानिको उदाहरण॥ कवित्त॥ आवत ग्लानि जो बखान करो ज्यादा यह मा दा महमल मूत मज्जकी सलीती है। कहै पदमाकर जरा तो जागि भीजी तब छीजी दिन रैन जैसे रैनहीं की भीती है॥ सीतापति राम के सनेहबश बीती जु पै तौ तौ दिव्य देह यम यातनातें जीती है। रीती राम नामतें रही जो बिन काम तौ या खारिज खराब हाल खाल की खलीती है॥ २४॥ दोहा॥ लखि बिरूप सूरपनखैं स रुधिर चर

चुचुवात। सिय हियमें घिनकीलता भई सु ह्वैहै पात॥२५॥ दरश परश सुनि सुमिरि जहँ कानहुं अजब चरित्र। होइ जु चित विस्मित कछू सो आचरज पवित्र॥२६॥ याही को विसमय थाई भाव जानिये॥ अचरज को उदाहरण॥ सवैया॥ देखत क्यों न अपूरब इन्दुमें ह्वै अरबिन्द रहे गहि लाली। त्यों पदमाकर कीर बधू इक मोती चुगैं मनों ह्वै मतवाली॥ ऊपर ते तम छाय रह्यो रवि की दबते न दबै खुलि ख्याली। यों सुनि बैन सखी के बिचित्र भये चित चक्रित से बनमाली॥ २७॥ दोहा॥ नखछत पुल लखि सिन्धु में भये चक्रित सुरराव। राम पाद नत भे सबहिं सुमिरि अगस्त प्रभाव॥२८॥ निफल अमादिक ते जु कछु उर उपजत पछितावं। सज्ञति हित निर्वेद सों सम रस को थिर भाव॥२९॥ निर्वेद को उदाहरण॥ सवैया॥ ह्वै थिर मन्दिरमें न रह्यो गिरि कन्दरमें न तप्यो तप जाई। राज रिझाये न कै कविता रघुराज कथान यथा मति गाई॥ यों पछितात कछू पदमाकर कासों कहौं निज मूरखताई। स्वारथहूं न कियो परमारथ योंहीं अकारथ बैस बिताई॥ ३०॥ पुनर्यथा॥ सवैया॥ भोग में रोग बियोग संयोग में योग ये काय कलेश कमायो। त्यों पदमाकर बेद पुराण पढ्यो पढ़िकै बहु बाद बढ़ायो॥ दौरयो दुरास में दास भयो पै कहूं बिसराम को धाम न पायो। कायो गमायो सु ऐसेही जीवन हाय मैं रामको नाम न गायो॥ ३१॥ दोहा॥ पदमाकर कछु निज कथा कासों कहौं बखान। जाहिलखों ताहै परी अपनी अपनी आन॥ ३२॥ इतिश्री कूर्मबंशावतंस श्रीमन्महाराजा धिराज राजेन्द्र श्रीसवाईमहाराज जगतसिंहाज्ञया मथुरास्थाने मोहनलाल भट्टात्मज कविपदमाकर बिरचित जगद्विनोद नाम काव्ये स्थाई भाव प्रकर्णम्॥५॥

अथ रस निरूपण वर्णन॥ दोहा॥ मिलि बिभाव अनभव पुनि संचारिन के बृन्द। परिपूरण थिरभाव यों सुर

स्वरूप आनन्द॥ १॥ ज्यों पयपाय बिकार कछु ह्वै दधि होत अनूप। तैसोही थिर भावको वरणत कवि रसरूप॥२॥ सो रस है नव भांतिको प्रथम कहत सिंगार। हास्यकरुण पुनि रौद्र गनि बीर सु चारि प्रकार ३॥ बहुरि भयानक जानिये पुनि बीभत्स बखानि। अद्भुतअष्टमनवम पुनि सात सु रस उर आनि॥ ४॥ अथशृंगार रसवर्णन॥ जाको थाई भाव रति सो शृंगार सु होत। मिलि बिभाव अनुभाव पुनि संचारिनिके गोत॥ ५॥ रति कहियतु जो मनलगनि प्रीति अपर पर जाय। थाईभाव सिंगारके भल भाषत कविराय॥६॥ परिपूरण थिरभावरतिसो सिंगार रस जान। रसिकन को प्यारी सदाकविजन कियो बखान॥ ७॥ आलम्बन शृंगार के तियनायक निरधार। उद्दीपन सब सखि सखा बन बागादिबिहार॥ ८॥ हाव भाव मुसक्यान मृदु इमि औरहु जु बिनोद। है अनुभाव सिंगार नव कविजन लहत प्रमोद॥ ९॥ उनमादिक संचरत तहँ संचारीहै भाव। कृष्ण देवता श्याम रँगसो सिंगार रसराव॥१०॥ सो सिंगार द्वैभांतिको दम्पति मिलन संयोग। अटकजहां कछु मिलनकीसो सिंगार वियोग॥११॥ संयोग शृंगारको वर्णन॥ पुनर्यथा॥ छप्पै॥ कल कुण्डल दुलंडुलत खुलत अलकावलि बिमुलित। स्वेदसीकरन खुदित तनक तिलकावलिसु ललित॥ सुरत मध्य मतिलसत हरष झलसतचव चंचल। कविपदमाकर झकितझपितझपि रहत दृगंचल॥ इमि नित बिपरीति सुरति सभै असतिय सुख साधक जु सब। हरि हर बिरंचि पुर उरगपुर सुरपुर लै कह आज अब॥ १२॥ दोहा॥ तिय पियके पिय तीय के नख शिख साजि सिंगार। करि बदलौ तन मनजुं को दम्पति करत बिहार॥ १३॥ जहं बियोग पिय तीयको दुखदायक अति होत। विप्रलंभ शृंगार सो कहत कविन को गोत॥ १४॥ बियोग शृंगार को वर्णन॥ पुनर्यथा॥ सवैया॥ शुभ शीतल मंद सुगन्द समीर कछू छल छन्द छवै गयेहैं। पद

माकर चांदनी चन्दहू के कछू औरहि डौरन चवैगये हैं॥ मन मोहनसों बिछुरे इतही बनिकै न अबै दिन ह्वैगयेहैं॥ सखि वे हम वे तुम वेई बने पै कछू के कछू मन ह्वै गयेहैं॥ १५॥ पुनर्यथा॥सवैया॥ धीर समीर सुतीर ते तीछन ईछन कैसङ्ग ना सहती में। त्यों पदमाकर चांदनी चन्द चितै चङ्ं ओरन चौंकती जी में॥ छाय बिछाय पुरैन के पातन लेटती चन्दन की चवकी में। नीच कहा बिरहा करतो सखि होती कहूं जोपै मीचु मुठीमें॥ १६॥पुनर्यथा॥ सवैया॥ ऐसी न देखी सुनी सजनी घनी बाढ़त जात बियोग की बाधा। त्यों पदमाकर मोहन को तबते कलहै न कहूं पल आधा॥ लाल गुलाल घला घल में दृग ठोकर दय गई रूप अगाधा। कैगई कैगई चेटकसी मन लैगई २ लैगई राधा॥ १७॥ दोहा॥ अटकि रहे किन काम रत नागर नंद किशोर। करङ्ं कहा पीकन लगे पिक पापी चङ्ं ओर॥ १८॥ त्रिबिध बियोग सिंगार यह इक पूरब अनुराग। बरणत मान प्रवास पुनि निरखि नेहकी लाग॥१९॥ होत मिलन ते प्रथमहीं व्याकुलता उर आनि। सो पूरब अनुराग है बरणत कवि रस खानि॥ २०॥ पूर्वानुराग को उदाहरण॥पुनर्यथा॥कवित्त॥ जैसी छबिश्याम की पगी है तेरी आखिनमें ऐसी छबि तेरी श्याम आंखन पगी रहै। कहै पदमाकर ज्यों तान में पगी है त्योंहीं तेरी मुसकानि कान्ह प्राण में पगी रहै॥ धीरधर धीर धर कीरति किशोरी भई लगनि इतै उतै बराबर जगी रहै। जैसी रट तोंहि लागी माधव की राधे ऐसी राधे२ राधे रट माधव लगी रहै॥ २१॥ पुनर्यथा॥ कवित्त॥ मोंहि तजि मोहन मिल्यो है मन मेरो दौरि नयनङ्ं मिले हैं देखि देखि सांवरो शरीर। कहै पदमाकर त्यों तान मय कान भये हौं तौरही जकि थकि भूलीसी भभीसी बीर॥ येतौ निरदई दई इनको दया न दई ऐसी दशा भई मेरी कैसे धरौं तन धीर। होंतौ मनङ्ं के मन

नैनन के नैन जोपै कानन के कान तो पै जानतो पराई पीर॥ २२॥ पुनर्यथा॥ कवित्त॥ मधुर मधुर सुख मुरली बजाय धुनि धमकि धमारन की धाम धाम कै गयो। कहै पदमाकर त्यों अगर अबीरनकी करिकै घला घली छला छली चितै गयो॥ कोहै वह ग्वालिनी गुवालनिके संग में अनंग छबि वारौं रसरंग में भिजै गयो। बै गयो सनेह फिर छुवै गयो छरा को छोर फागुवा न दै गयो हमारो मन लै गयो॥ २३॥ दोहा॥ ज्यों ज्यों बर्षत घोर घन घन घमण्ड गरूबाइ। त्योंत्यों परति प्रचण्ड अति नई लगन की लाइ॥ २४॥ सूचक पिय अपराध को इंगित कहिये मान। त्रिविध मानसो मानिये लघु मध्यम गुरु आन॥ २५॥ परतिय दरशन दोषते करैजु तिय कछु रोष। सु लघु मान पहिचानिये होत ख्यालही तोष॥ २६॥ लघुमान बर्णन॥ ॥ कवित्त॥ वाहीके रँगीहै रँग वाही के पगीहै मग वाही के लगी है सँग आनँद अगाधा को। कहै पदमाकर न चाह तजि नेकु दृग तारन ते न्यारो कियो एक पलआधा को॥ ताहू पै गोपाल कछु ऐसे ख्याल खेलतहैं मान मोरबेकी देखिबेकी करि साधाको। काहूपै चलाइ चखप्रथम खिझावैं फेरिबांसुरी बजाइ कै रिझाय लेत राधाको॥२७॥ ॥ दोहा॥ ये हैं जिन सुख वेदिये करति क्यों न हिय होस। ते सब अबहिं भुलाइयतु तनक दृगनके दोस॥२८॥ और तियाके नाम कहुं पिय मुखते कढ़ि जाय। होत मान मध्यम मिटै सौहनि किये बनाय॥२९॥ मध्यमानबर्णन॥ कबित्त॥ बैसही की थोरी पै न भोरी है किशोरी है याकी चित चाह राह औरको मझैयो जिन। कहै पदमाकर सुजान रूपखान आगे आन वान आनकी सुआन कै लगैयो जिन॥ जैसे अब तैसे सधि सौहनि मनाइ ल्याई तुम इक मेरी बात येती बिसरैयो जिन। आजुकी घरीतें लै सु भूलिहै भलेहौ श्याम ललिताको लैकै नाम बांसुरी बजैयो जिन॥ ३०॥ दोहा॥ आनि आन तिय नाम लै

तुमहिं बुलावत श्याम। लेन कह्यो नहिं नाह को निज तियको जो नाम॥ ३१॥ आनि तिया रति पीउ लखि होत मान गुरु आइ। पाइ परे भूषण भरे छूटत कछूं बराइ॥ ३२॥ अथ गुरुमान वर्णन॥ कवित्त॥ नीकीको अनैसी पुनि जैसी होइ तैसी तऊ यौवनकी मूरतै न दूरि भागियतु है। कहै पद्माकर उजागर गोविन्द जोपै चूकि गे कछूं तो एतो रोष रागियतु है॥ प्रेम रस हाय लै जगाय लै हिये सों हित पाइल पहिरि चलु प्रेम पागियतु है। एरी मृगनैनी तेरी पाइ लगि बेनी पाइ पाइ लगि तेरे फेर पाइँ लागियतु है॥ ३३॥ दोहा॥ निरखि नेकु नीको बनो या कहि नन्दकुमार। सुभुज मेलि मेल्यो गरे गज मोतिन को हार॥ ३४॥ पिय जु होइ परदेश में सो प्रवास उरआन। जाते होत बधूनको अति संताप निदान॥ ३५॥ सो प्रवास है भांतिको इक भाविष्य इक भूत। तिन के कहत उदाहरण रस ग्रंथनके सूत॥ ३६॥ भविष्यत् प्रवास को उदाहरण॥ सवैया॥ औसर कौन कहा समयो कहा काज बिवाद ये कौनसी पावन। त्यों पद्माकर धीर समीर उसीर भयो तपिकै तन तावन॥ चैतकी चांदनी चारु लखे चरचा चलबेकी लगे जु चलावन। कैसी भई तुम्हैं गंगकी गैलमें गीत मदारन के लगे गावन॥ ३७॥ दोहा॥ रमन गमन सुनि शशिमुखी भई दिवस को चन्द। परखि प्रेम पूरण प्रगट निरखि रहे नँदनन्द॥ ३८॥ नये प्रवास को उदाहरण॥ सवैया॥ कान्ह परो कुञ्जा के कलोलनि डोलनि छोड़ दई फर भांती। माधुरी मूरति देखि बिना पद्माकर लागै न भूमि सोहाती॥ का कहिये उनसों सजनी यह बातहै आपने भाग समाती। दोष बसन्त को दीजै कहा उलहै न करील की डारन पाती॥ ३९॥ पुनर्यथा॥ कवित्त॥ रैन दिन नैनन ते बहतौ न नीर कहा करतौ अनंगको उमंग शर चापतौ। कहै पद्माकर राग बाग बन कैसो तैसो तन ताय ताय तारा प्रति तापतौ॥

कीबे योग बियोग तो संयोगहू न देतो दई देतो जो संयोग ता बियोगहि न थापतो। होतो जो न प्रथम संयोग सुख वैसो वहू ऐसो अब जो न तो बियोग दुख व्यापतो॥ ४०॥ दोहा॥ सुनत सँदेश विदेश तजि मिलते आइ तुरन्त। समुझी परति सुकन्त जहँ तहँ प्रगट्यो न बसन्त॥ ४१॥ इक बियोग शृंगार में इती अवस्था थाप। अभिलाषा गुन कथन पुनि पुनि उद्वेग प्रलाप॥ ४२॥ चिन्तादिक जे षट कही बिरह अवस्था जानि। संचारी भावन विषे हौं आयऊं सो बखानि॥ ४३॥ ताते इत बरणत न मैं अभिलाषादिक चार। तिनके लक्षण लक्षि सब हौं आषत निरधार॥ ४४॥ तिय अरु पियको मिलनको करै बिबिध चित चाह। ताही को अभिलाष कहि बरणत हैं कवि नाह॥ ४५॥ अभिलाषा को उदाहरण॥ कवित्त॥ ऐसी मति होत अब ऐसी करौं आली बनमाली के सिंगारिबे सिंगारिबोई करिये। कहै पदमाकर समाज तजि काज तजि लाजको जहाज तजि डारिबोई करिये॥ घरी घरी पलपल छिनछिन रैन दिन नैननकी आरती उतारिबोई करिये। इन्दु ते अधिक अरबिन्द ते अधिक ऐसो आनन गोबिन्द को निहारिबोई करिये॥ ४६॥ दोहा॥ पिय आगम ते अगम नहिं करि बैठी तिय मान। कबधौं आइ मनाइहैं यही रही धरि ध्यान॥ ४७॥ करै बिरह में जो जहां पिय गुण गुणन बखान। ताही को गुण कथन कहि बरणत सुकवि सुजान॥ ४८॥ गुणकथन को उदाहरण॥ कवित्त॥ हौंहू गई जान तित आइगो कहूंते कान्ह अनि बनितानहूं को झपकि झलौ गयो। कहै पदमाकर अनंग की उमंगनि सों अंग अंग मेरे भरि नेह को छलौ गयो॥ ठानि ब्रज ठाकुर ठगोरिन की ठेला ठेल मेला कै मझार हित हेला कै भलो गयो। छाड़ कै कला छवै छौ-गुनी छवै छरा छोरन छवै छलिया छबीलो छैल छाती छवै चलो गयो॥ ४९॥ पुनर्यथा॥ सवैया॥ चोरन गोरिन

में मिलिकै दूतै आईहो हाल गुवालि कहां की। कौन बिलोकि रह्यो पद्माकर वा तिय की अवलोकनि बां-की॥ धीर अबीर की धुंधुरि में कछु फेर सों कै सुख फेरकै झांकी। कै गई काटि करेजनि के कतरे कतरे पतरे करि-हां की॥ ५०॥ दोहा॥ गुणवारे गोपाल के करि गुण गणनि बखान। इक आपहि के आसरे राखति राधा प्रान॥ ५१॥ बिरह बिम्ब अकुलाय उर त्यों पुनि कछु न सुहाय। चित न लगत कहुं कैसहुं सो उद्वेग बनाय॥ ५२॥ उद्वेग को वर्णन॥ पुनर्यथा॥ कवित्त॥ घर ना सुहात ना सुहात बन बाहिरहूं बाग ना सुहात जो खुशाल खुशबो-ही सों। कहै पद्माकर घनेरे धन धाम त्योंही चैन न सु-हात चांदनीहू योग जोही सों॥ सांझहू सुहात न सुहात दिन मांझकहू व्यापी यह बातसों बखानत हौं तोहीसों। रातिहू सुहात न सुहात परभात आली जब मन लागि जात काहू निर्मोही सों॥ ५३॥ दोहा॥ ह्वै उदास अति राधिका ऊंचे लेति उसास। सुनि मनमोहन कान्ह की कुटिल कूबरी पास॥ ५४॥ बिरही जन जहँ कहत कछु निरखि निरर्थक बैन। तासों कहत प्रलापहैं कवि कविता के ऐन॥ ५५॥ प्रलाप को उदाहरण॥ कवित्त॥ आमको कहत अमिली है अमिली को आम आकही अनारन को आकिबो करतिहै। कहै पद्माकर तमालनको ताल कहै तालनि तमाल कहि ताकिबो करति है॥ कान्हहै कान्ह काहू कहि कदली कदम्बनि को भेटि पर रम्भन में झांकिबो करति है। सांवरे जु रावरे यों बिरह बि-कानी बाल बन बन बावरी लौ ताकिबो करतिहै॥ ५६॥ पुनर्यथा॥ कवित्त॥ प्राणन के प्यारे तन तापके हरणहारे नन्दके दुलारे ब्रजवारे उमहत हैं। कहै पद्माकर उरूझे उर अन्तर यों अन्तर चहैहू जेन अंतर चह तहैं॥ नैननि बसे हैं अंग अंग झलसे हैं रोम रोमनि रसेहैं निकसे हैं को कहतहैं। जधो वे गोविन्द कोऊ और मथुरासें यहां

मेरो तो गोविन्द मोहिं मोहिमें रहतहैं ॥ ५७ ॥ दोहा ॥ निरखत बन घनश्याम कहि भेटत उठति जु बाम । विकल बीचही करत अनुकर कामनैती काम ॥५८॥ दशा वियोगहि की कहत जुहै मूरछा नाम । जहँ न रहतसुधि कौनहूं कहाँ शीत कहँ घाम ॥ ५९ ॥ मूर्छाको उदाहरण ॥ कवित्त ॥ येहो नन्दलाल ऐसी व्याकुल परीहै बाल हालही चलौतो चलौ जोरी जुरिजायगी । कहै पद्माकर नहीं तो ये झकोरै तनैं औरैलै अचाकाबिन घोरे घुरि जायगी ॥ सीरे उपचारन घनेरे घन सारन को देखतही देखौ दामिनी लौं दुरि जायगी । तौहीं लग चैन जौलों चेती है न चन्द्रमुखी चेतैगी कहूं तौ चांदनी में चुरि जायगी ॥ ६० ॥ दोहा ॥ तौही तौ भल अवध लौं रहै जु तिय निरभूल । नहिं तौ क्यों करि जियहिगी निरखि शूल से फूल ॥ ६१ ॥ इति शृंगार रस वर्णन ॥ अथ हास्य रस वर्णन ॥ दोहा ॥ याई जाको हास है वहै हास्य रस जानि । तहां कुरूप कुंदव कहव कछु विभाव ते मानि ॥ ६२ ॥ मेद मध्य अरु जंघ खर हँस होई अनुभाव । हरष चपलता औरहू तहँ संचारी भाव ॥ ६३ ॥ खेत रंग रस हास्य को देव प्रथम पति जासु । ताको कहत उदाहरण सुनत जो आवै हास ॥ ६४ ॥ हास्यरस को उदाहरण ॥ कवित्त ॥ हंसि२ भजैं देख दूलह दिगम्बर को काहूनी जे आवैं हिमाचल के उछाह में । कहै पद्माकर सुकाहू सों कहै को कहा जोई जहां देखै सो हंसेई तहां राह में ॥ मगन भयेई हंसे नगन महेश ठाढ़े औरे हँसेऊ हँसों हँसकै उमाह में । शीश पर गंगा हँसै भुजनि भुजंगा हँसै हांसही को दंगा भयो नंगा के विवाह में ॥ ६५ ॥ दोहा ॥ कर मूसर नाचत नगन लखि हलधर को स्वांग । हँसि हँसि गोपी फिर हँसै मनहुं पियेसी भांग ॥ ६६ ॥ अथ करुणा रस लक्षण ॥ दोहा । आलम्बन प्रिय को मरण उद्दीपन दाहादि । थाई जाको शोक जहं वहै करुणरस यादि ॥ ६७ ॥ रोदति महिपति

नादि जहं बरणत कवि अनुभाव। निरवेदादिक जानिये तहँ सँचारी भाव॥ ६८॥ चिचबधू तरके बरण बरुण देवता जान। याबिधिको याकरुण रस बर्णतकबि कवितान॥६९॥ करुणारस को उदाहरण॥ कवित्त॥ आंसुन अन्हाय हाय हाय कै कहत सब औधपुर बासी के कहायो दुःख दाहिये। कहै पद्माकर जलूस युवराजी को सु ऐसो को धनी है जाय जाके शीश वाहिये॥ सुत के पयान दशरथ ने तजे जो प्राण बढ़्यो शोक सिंधु सों कहांलौं अवगाहिये। मूढ़ मँथरा के कहे बन को जो भजे राम ऐसी यह बात कैकइ को तौ न चाहिये॥ ७०॥ दोहा॥ राम भरथ सुख मरण सुनि दशरथ के मन मांह। महि परभै रोदत उचरि हा पितु हा नरनाह॥ ७१॥ अथ रौद्ररस थाई वर्णन॥ दोहा॥ थाई जाको क्रोध अति वहै रौद्र रस नाम। आलम्बन रिपु रिपु उमंड उद्दीपन तिहि ठाम॥ ७२॥ भृकुटि भंग अति अरुणई अधर दशन अनुभाव। गरब चपलता औरछ तहँ संचारी भाव॥ ७३॥ रक्त रंग रस रौद्र को रुद्र देवता जान। ताको कहत उदाहरण सुनउ सुमति दै कान॥ ७४॥ अथ रौद्र रस वर्णन॥ कवित्त॥ बारि टारि डारौं कुम्भ करणहिं बिदारि डारौं मारौं मेघ नादै आजु यों बल अनन्त हौं। कहै पद्माकर चिकूटही को ढाहि डारौं डारत करेई यातुधान न को अंतहौं॥ अच्छहि निरच्छ कपि रुच्छ ह्वै उचारौं इमि तोण तिच्छ तुच्छन को कछुबैन गन्त हौं। जारि डारौं लंकहि उजारि डारौं उपबन फारि डारौं रावण को तौ मैं हनुमन्तहौं॥ ७५॥ दोहा॥ अधर चब्ब गहि गब्ब अति चहि रावण को काल। दृग कराल मुख लाल करि दौरेउ दशरथ लाल॥ ७६॥ जाको रस उत्साह शुभ है इक थाई भाव। सुरस बीर है चारि बिधि कहत सबै कबि राव॥ ७७॥ युद्ध बीर इक नामहै दयाबीर बियनाम दीनबीर तीजी सुपुनि धर्मबीर अभिराम॥ ७८॥ युद्ध

वीर को जानिये आलंबन रिपु जोर। उद्दीपन ता को तबहि पुनि सैना को मोर॥ ७९॥ अँग फरकत दृग अरुणई इत्यादिक अनुभाव। गरब असूया उग्रता तहं संचारी नाव॥ ८०॥ इन्द्र देवता बीर को कुन्दन बरण विशाल ताको कहत उदाहरण मुनिजन होत खुशाल॥ ८१॥ अथ बीररसवर्णन॥ कवित्त॥ सोहै अचओढ़े जनछोड़े शीश संगरकी लंगर लंगूर उच्चओज के अतंका में। कहै पदमाकर त्यों झंकरत फुंकरत फैलत फुलात फाल बांधत फलंका में॥ आगे रघुवीर कै समीर के तनै के संग तारी दै तडाक तडा तड़ के तमंका में। शंका दै दशानन को हंका दै सुबंका बीर डंका दै विजयको कपि कूदि परे लंकामें॥ ८२॥ पुनर्यथा॥ कवित्त॥ जाही ओर शोर परै घोर घन ताही ओर जोर जंग जालिम को जाहिर दिखात है। कहै पदमाकर अरीन की अवाई पर साहब सवाई को ललाई लहरात है॥ परिघ प्रचंड चमू हरषित हाथी पर देखत बनत सिंह माधव को गात है। उद्धत प्रसिद्ध युद्ध जीतिही के सौदा हित रौदा ठनकारि तन हौदा मैंन समात है॥ ८३॥ दोहा॥ धनुष चढ़ावत भे तबहिं लखि रिपु कृत उतपात। झलसि गात रघुनाथ को बखतर में न समात॥ ८४॥ अथ दया वीर को वर्णन॥ दोहा॥ दयावीर में दीन दुख बरणत आदि विभाव। दूरि करब दुख मृदु कहब इत्यादिक अनुभाव॥ ८५॥ सुकृत चपलता और हूं तहँ संचारी भाव। दया बीर बरणत सबै याही बिधि कविराव॥ ८६॥ अथ दया बीर वर्णन॥ सवैया॥ पापी अजामिल पार कियो जेहि नाम लियो सुतही को नरायन। त्यों पदमाकर लात लगे पर विप्रहु के पग चौगुने चायन॥ को अस दीन दयाल भयो दशरथ के लाल से सूधे सुभायन। दौरे गयन्द उबारिबे को प्रभु बाहन छोड़ उबाहने पायन॥ ८७॥ दोहा॥ मिले सुदामा सोंज करि समाधान सनमान। पग पलोटि मग श्रम हरेउ ये प्रभु

दया निधान ॥ ८८ ॥ अथ दान बीर बर्णन ॥ दोहा ॥ दान समय को ज्ञान पुनि यांचक तीरथ गौन। दान बीर के कहत हैं ये विभाव मति भौन ॥ ८९ ॥ तृण समान लेखत सुधन इत्यादिक अनुभाव। ब्रीड़ा हरषादिक गनौं तहं संचारीभाव ॥ ९० ॥ दानबीर को उदाहरण ॥ कबित्त ॥ बगसि बितुंड दये झुंडन के झुंड रिपु मुंडन की मालिका दई ज्यों चिपुरारी को। कहै पदमाकर करोरन को कोष दये षोड़शहू दीन्हें महा दान अधिकारी को ॥ ग्राम दये धाम दये अमित अराम दये अन्न जल दीने जगती के जीव धारीको। दाता जयसिंह दोय बातैं तौन दीनी कहूं बैरिन को पीठि और डीठि पर नारीको ॥ ९१ ॥ पुनर्यथा ॥ कबित्त ॥ संपति सुमेर की कुबेर की जु पावै ताहि तुरत लुटावत बिलंब उर धारैना। कहै पदमाकर सुहेम हय हाथिनके हलके हजारन के बितर बिचारैना ॥ गंज गज बकश महीप रघुनाथ राय याहि गज धोखे कहूं काहू देइ डारैना। याही डर गिरिजा गजानन को गोद रही गिरितैं गरेतैं निज गोद ते उतारैना ॥ ९२ ॥ दोहा ॥ दै डारै जन भिक्षुकनि हनि रावणहिं सुलंक। प्रथम मिल्यो यातें प्रभुहि सुविभीषणहू रंक ॥ ९३ ॥ अथ धर्म बीर बर्णन ॥ दोहा ॥ धर्मबीर के कबि कहत ए विभाव उरआन। बेद सुमृति शीलन सदा पुनि पुनि सुनब पुरान ॥ ९४ ॥ बेद बिहित क्रम बचन बपु औरहू है अनुभाव। धृति आदिक बरणत सुकबि तहं संचारी भाव ॥ ॥ ९५ ॥ धर्मबीर को उदाहरण ॥ कबित्त ॥ तृणकी समान राज त्याग करि पाल्यो पितु बचन जो जानत जनैया है। कहै पदमाकर बिबेकहीको बानों बीच सोचो सत्य बीरधीरज धरैया है ॥ सुमृत पुराण बेद आगमकह्यो जो पंथ आचरत सोई शुद्धकरम करैया है। मोद मति मंदर पुरंदरमहीको धन्य धरम धुरंधर हमारो रघुरैया है ॥ ९६ ॥ दोहा ॥ धारि जटा बलकल भरत गन्यो न दुख तजि राज। भे पूजत प्रभु

पादुकन परम धरम के काज ॥ ९७ ॥ अथ भयानक वर्णन ॥ दोहा ॥ जाको थाई भाव भय वहै भयानक जान। लषन भयंकर गजब कछु ते विभाव उरआन ॥ ९८ ॥ कंपादिक अनुभाव तहँ संचारी गोहादि। काल देव कैला वरण सु भयानक रस यादि ॥ ९९ ॥ अथ भयानक उदाहरण ॥ पुनर्यथा ॥ कवित्त ॥ झलकत आवैं झुंड झिलम झलानि झप्यो तमकत आवैं तेग वाही औ सिलाही है। कहै पद्माकर त्यौं दुंदुभि धुकार सुनि अब बक बोलै यों गलीम औ गुनाही है॥ माधव को लाल कालछ्र तैं विकराल दल साजि धायो वे दई दई धौं कहा चाही है। कौनको कलेऊ धौं करैया भयो काल अरु कापै यों परैया भयो गजब दुलाही है॥ १०० ॥ पुनर्यथा ॥ कवित्त ॥ ज्वाला की जलन सी जलाक जंग जालन की जोर की जमा है जोम जुलुम जिलाहे की। कहै पद्माकर सु रहियो बचाये जग जालिम जगत सिंह रंग अवगाहे की ॥ दौरि दावा दारन पै द्वार सौ दिया कर की दामिनी दमंकनि दलेल दिग दाहेकी। काल की कुटुंबिन कला है कुल्लि काल्किा की कहर की कुंतकी नजरि कछवाहे की ॥१॥ छप्पै ॥ भुवन धुंधुरित धूलि धूलि धुंधुरित सु धूमझ। पद्माकर परतच्छ स्वच्छ लखिपरत न भूमझ ॥ भग्गत अरिपरि पग्ग मग्ग लग्गत अँग अंगनि। तहं प्रताप पृथिपाल ख्याल खेलत खुलि खग्गनि ॥ तहं तबहि तोपि तुंगनि तड़पि तंतड़ान तेगनि तड़कि। धुकि धड़ धड़ धड़ धड़ धड़ा धड़ धड़ धड़ात तड़ा धड़कि॥ २॥ दोहा ॥ एक ओर अजगरहि लखि एक ओर मगराइ। विकल बटोही बीचही परो मूरछा खाइ॥ ३ ॥ अथ वीभत्स रस वर्णन ॥ दोहा ॥ थाई जासु गलान है सो वीभत्स गनाव। पीव मेद मज्जा रुधिर दुर्गंधादि विभाव ॥ ४ ॥ नाक मूदिबो कंपतन रोम उठव अनुभाव। मोह असूया मूरछादिक संचारी भाव ॥ ५ ॥ महा काल सुर नील रंग सुवीभत्स रस जानि। ताको कहत उदाहरण रस ग्रंथनि

उर आनि ॥ ६ ॥ अथ बीभत्स को उदाहरण। छप्पै ॥ पढ़त मंच अरु यंच अंच लीलत डमि जुग्गिनि। मनहुं गिलत मद मत्त गरुड़ तिय अरुण अरुग्गिनि ॥ हरबरात हरषात प्रथम परसत पलपंगत। जहं प्रताप जिति जंग रंग अँग अंग उमंगत ॥ जहं पदमाकर उत्तपत्ति अति रन रकत नहियबहत। चख चकित चित चर बीन चुभि चकचकाइ चंडी रहत॥ ७ ॥दोहा॥ रिपु अंचनकी कुंडली करि जुग्गिनिजु चबाति। पीवहि में पगी मनो जुवति जलेबी खाति ॥ ८ ॥ अथअद्भुत रसवर्णन ॥दोहा॥ जाको थाई आचरिजसो अद्भुतरस गाव असं भवित जते चरित तिनको लखब विभाव ॥ ९ ॥ बचन विचल बोलनि कंपनि रोम उठनि अनुभाव। वितरक शंका मोहये तहँ संचरी भाव॥१०॥ जासु देवता चतुरमुखरंगबखानत पीत। सो,अद्भुत रस जानिये सकल रसनको मीत॥११॥ अद्भुत रसको उदाहरण॥कवित्त॥अधम अजान एक चढ़िकै बिमान भाष्यौ पूछत हौं गंगा तोहिं परि परि पाइ हौं। कहै पदमाकर कृपाकरि बतावै सांची देखे अति अद्भुत रावरे सुभाइहौं ॥ तेरे गुण गानहूं की महिमा महा न मैया कान कान नाइ कै जहान मध्य छाई हौं। एक मुख गाउ ताके पंचमुख पाये अब पंचमुख गाइहौं तो केते मुख पायहौं ॥ १२ ॥ पुनर्यथा ॥ कवित्त ॥ गोपी ग्वाल माली जुरे आपुस में कहैं आली कोऊ यशुदा के औतरयो इन्द्रजाली है। कहै पदमाकर करै को यों उताली जापै रहन न पावे कहूं एको फन खाली है॥ देखे देवताली भई बिधि के खुशाली कूदि किलकत काली हेरि हँसत कपालीहै। जनमको चाली एरी अद्भुत दै ख्याली आजु काली की फनाली पै नचत बनमाली है ॥ १३ ॥ पुनर्यथा ॥ कवित्त ॥ मुरली बजाई तान गाई मुसक्याय मन्द लटकि लटकि माई नृत्यमें निरत है। कहै पदमाकर गोबिन्द के उछाह अहि बिषको प्रबाह प्रति मुख ह्वै भिरत है॥ ऐसो फैल परत फुसकरतही में मनो तारन को इन्द फूत

कारण गिरत है। कोप करि जौलौं एक फन फुफकावै कालो तौलौं बनमाली सोऊ फनपै फिरत है ॥ १४ ॥ सात दिन सात राति करि उतपात महा मारुत झकोरै तरु तोरै दीह दुख में। कवै पदमाकर करी त्यों घूम धार-नहूं एते पै न कान्ह काहू आयो रोष रुख में। छोरि छिगुनी के छच ऐसो गिरि छाइराख्यो ताके तरै गाय गोप गोपी खरी सुख में॥ देखि देखि मेघनकी सैन अकु-लानी रह्यो सिन्धु में न पानी अरु पानी दून्दु सुख में॥ १५ ॥ दोहा ॥ घन बर्षत कर पर धरयो गिरि गिरिधर निरशंक। अजब गोपसुत चरित लखि सुरपति भयो सशंक॥ १६ ॥ अथ शान्त रस बर्णन ॥ दोहा ॥ सुरस शान्त निर्वेद हैं जाको थाई भाव। सतसंगत गुरु तपोबन मृतक समान बिभाव॥ १७ ॥ प्रथम रुमांचादिक तहां भाषत कवि अनु-भाव। धृति मति हरषादिक कहे शुभ संचारी भाव १८ ॥ शुद्ध शुक्ल रँग देवता नारायण है तान। ताको कहत उदा-हरण सुनऊ सुमति दै कान॥ १९॥ शांतरसको उदाहरण॥ सवैया ॥ बैठि सदा सतसंगही में बिषमानि विषय रस कीर्त्ति सदाहीं। त्यों पदमाकर झठ जितो जग जानि सुज्ञानहिं के अवगाहीं॥ नाक की नोक में डीठि दिये नित चाहै न चीज कछूं चितचाही। संतत संत शिरोमणि है धनहै धन वे जन वै पर बाहीं॥ २० ॥ दोहा ॥ बन बितान रबि शशि दिया फल भइ सलिल प्रवाह। अवनि सेज पंखा पवन अब न कछू परबाह॥ २१ ॥ सबहिततें बिरकत रहत कछू न शङ्का चास। बिहित करत सुनहित समुझि शिशुवत जे हरि दास॥ २२ ॥ इति नवरस निरूपणम्॥ दोहा॥ जगत सिंह नृप हुकुम तें पदमाकर लहि मोद। रसिकन के बश करन को कीन्हों जगतबिनोद॥ २३ ॥ इतिश्री कूर्मबंशावतंस श्रीमहाराज राजेन्द्र श्रीसवाई महाराज जगतसिंहाज्ञया कवि पदमाकरबिरचित जगत्-बिनोद नाम काव्ये अष्टमोऽध्यायः॥८॥ समाप्तः॥ इति॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
०—उत्तरकाण्ड ॥	कैवल्य कल्पद्रुम ॥	रागप्रकाश ॥
रामायणशब्दार्थकोष ॥	**काव्य ॥**	लावनी ॥
रामायण का इतिहास ॥	सूरसागर ॥	शृङ्गारबत्तीसी ॥
रामायण मानसदीपिका ॥	कृष्णसागर ॥	रागसंग्रह ॥
रामायणगीतावली तु०कृत	बिश्रामसागर ॥	भजन माला ॥
रामायण गीतावली स० ॥	प्रेमसागर ॥	कृष्णगीतावली ॥
रामकलेवा ॥	ब्रजबिलास बड़ावछोटा ॥	**वैद्यकभाषा ॥**
महा रामायण ॥	तथा छापा पत्थर ॥	निघंटु ॥
विनयपत्रिका स०छा०टेप	कृष्णप्रिया ॥	अमरविनोद ॥
तथा पत्थर ॥	विजयमुक्तावली ॥	वैद्यजीवन ॥
भाषाविष्णुपुराण ॥	अनेकार्थ कोष ॥	औषधिसंग्रह कल्पवल्ली ॥
ब्रह्मोत्तर खण्ड ॥	छन्दोऽर्णवपिङ्गल ॥	रामविनोद ॥
लिङ्ग पुराण ॥	कविकुलकल्पतरु ॥	अमृतसागरबड़ावछोटा ॥
अवतारकथाऽमृत	रसराज ॥	वैद्यमनोत्सव ॥
श्रीरामबिबाहोत्सव ॥	सत्सई सटीक बि० कृत	**ज्योतिषभाषा ॥**
स्त्रीदर्पण ॥	सभाविलास ॥	जातकालंकार ॥
वंशप्रकाश ॥	तुलसीशब्दार्थ प्रकाश ॥	जातक चंद्रिका ॥
रामायण कवितावली ॥	प्रेमरत्न ॥	दैवज्ञाभरण ॥
रामायण तुलसीदास कृत	युगलविलास ॥	ज्ञानस्वरोदय ॥
सुखदेवकृतटीकासहित ॥	चित्तचन्द्रिका ॥	रमलसार ॥
मनोहरकहानी ॥	बारहमासा बलदेव प्र० ॥	इन्द्रजाल ॥
सुखसागर छापा टेप ॥	गंगालहरी ॥	सामुद्रिक ॥
तथा छापा पत्थर ॥	यमुनालहरी ॥	ज्योतिष चन्द्रिका ॥
गरुड़ पुराण ॥	जगद्विनोद ॥	**नाटक ॥**
देवीभागवत ॥	शिवसिंहसरोज ॥	प्रबोधचन्द्रोदय ॥
॥ वेदान्त ॥	परतापविनोद ॥	आनंदरघुनंदन ॥
आनंदामृतवर्षिणी ॥	**राग ॥**	रामाभिषेक ॥
योगवाशिष्ठ ॥	हरिहर सगुण निर्गुण	**सुतफ़र्क़ीत ॥**
सांख्यतत्वकौमुदी ॥	पदावली ॥	ज्ञानमाला ॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
सौदागर लीला ॥	कालिंजरमाहात्म्य ॥	संग्रहशिरोमणि ॥
मनमोजचरित्र ॥	शनिश्चरकी कथा ॥	दुर्गापाठ सटीक ॥
दोहावली व रत्नावली ॥	उपदेश कथा ॥	मार्क्कण्डेयपुराण ॥
गोकर्णमाहात्म्य ॥	प्रश्नोत्तरी ॥	दुर्गापाठ मूल ॥
श्रीगोपालसहस्रनाम ॥	सीताबनबास ॥	विष्णु भागवत ॥
कथासत्यनारायणसटीक	गुरुउपकार॥	देवीभागवत ॥
हनुमान बाहुक ॥	**दरसी ॥**	अपराधभंजनस्तोत्र ॥
जनकपच्चीसी ॥	अक्षरावली ॥	गीतापञ्चरत्न ॥
बनयात्रा ॥	स्वयंम्बोध ॥	कायस्थकुलभास्कर॥
बिहारबिंद्राबन ॥	ज्ञानचालीसी ॥	कायस्थधर्म्म निरूपण ॥
समरबिहारबिंद्राबन ॥	दोहावली ॥	मथुरासभा ॥
कल्पभाष्य ॥	बालाबोध ॥	पचा संवत् १९३९
सतीबिलास ॥	विद्यार्थीकीप्रथम पुस्तक ॥	तथा संवत् १९४०
विनयप्रकाश ॥	किताब जंची	**ज्योतिष ॥**
भरतरी गीत ॥	गणितकामधेनु ॥	मुहूर्त्तगणपति ॥
अवधयात्रा ॥	लीलावती ॥	मुहूर्त्तचक्रदीपिका ॥
मनोरंजन ॥	पटवारियोंकी पु० ४ भाग	मुहूर्त्तचिन्तामणि स० ॥
भारती भूषण ॥	रायलरीडरनम्बर १व२व३	मुहूर्त्तमार्त्तण्ड स० ॥
गोपीचन्दभरतरी ॥	शालागीतचन्द्रिका ॥	मुहूर्त्तदीपक ॥
गर्गसंहिता ॥	गीतरसिका ॥	वृहज्जातकसटीक ॥
दानलीला व नागलीला ॥	वर्णबोध ॥	जातकालंकार सटीक ॥
तुलसीतत्व भास्कर ॥	प्रथमपुस्तक ॥	जातकाभरण ॥
हनूनाटक ॥	बालशिक्षा ॥	होरामकरन्द ॥
लक्ष्मीसरस्वती संवाद ॥	**संस्कृतकीपुस्तकैं**	**संस्कृत उर्दू टी०**
हरिनाम रत्नावली ॥	लघुकौमुदी ॥	मनुस्मृति ॥
शुक्रनीति भाषा ॥	सिद्धांतचन्द्रिका ॥	बिष्णु हारीत ॥
कथा श्रीगंगाजी की ॥	पंचमहायज्ञसंध्योपासन ॥	महिम्नस्तोत्र ॥
रसचन्द्रोदय रसवृष्टि ॥	निर्णयसिंधु ॥	व्रतार्क
सुदामाचरित्र ॥		

